एगच्छा आमक गाछ

एगच्छा आमक गाछ

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

EGACHCHHA AAMAK GACHH
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-00-1
दाम: 251/- (भा.रु.)

चारिम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2016)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

कथा-सत्तैर

प्रीगर शत्रु

समाचार सुनिते लालबाबाक उड़ैत मन बाजल– “हाय रे बा, ई की भेल? दुनियाँमे सभ किछु झूठे भऽ गेल!”

कोनो भाँजे समाचारक जड़ि भँजियेबे ने करैन। हिसाब बैसबैत जोड़ऽ लगैथ तँ ओतए मन ओझरा जाइन जेतए सभसँ प्रीगर सभसँ तीत केना भऽ गेल। मन पस्त भऽ जाइन...।

फेर अधमरू मुसरी जकाँ चारि बेर जखन ऊपर-निच्चाँ दम लैथ तखन कनी ऑक्सीजन भेटने जान-मे-जान अबैन। ऐबते फेर अपने विचारमे ओझरा कऽ खसि पड़ैथ। खसिते बकारे बन्न भऽ जाइन जे सोचै-विचारैले तँ बजौ-भुकौ ने पड़त, से की बाजब, एहेन बात कहियो सुननौं ने छेलिऐ, से भऽ गेल, जेकरे लग बाजब सएह नै बिसवास करत तँ बाजब केतए आ सुनत के, तखन अपन मनक मरजीकेँ अरजी केना बना पएब..?

मने-मन जेते लालबाबा विचार करैथ तेते मन पस्त भेल जाइन। ओना, चाइनपर पसेनाक आगमन भेने छोट-छोट स्वर्ण ज्योति जकाँ चमकैन। मुदा मन खापैड़क तीसी जकाँ चनचनाइन–

“कहू जे लोक केतए रहत? केना बसत!”

फेर जेना मनमे उठैन, कहू जे बनरहो मनुक्ख रामधाम गेने देवतुल्य भऽ गेल आ चिक्कन चुनमुन सोनाक चिड़ै सन मनुक्ख एहेन..!

‘एहेन’पर ऐबते मन अँटैक कऽ भनभनाए लगैन– “कहू! ई केहेन

भेल जे नहाइ-ले गेलौं आ पोखरिये घाटपर ओंघरा कऽ पानिमे डुमि गेलौं..! बाप रे अतहतह गाममे होइए!”

असगरे अपने मने लालबाबा बड़बड़ाइत-भनभनाइत रहैथ मुदा कियो ने सुननिहार आ ने संगे पुरनिहार। जेकरा कहबै तेकरा काने ने छै आ जेकरा कान छै तेकरा मुँहमे बोले ने छइ। कियो केकरो कहत जे भाग-भाग रे बिना पैरबला, नमहरका नाकबला अबै छौ..! तँ कियो खोंटत नमहरका नाकबला की भेल। तँ कियो खोंटत नवका नमहरका..! मुदा तँए कि बिना पैरबला हारि मानि लेत? ओहो ने कहत जे तूँ केना बुझलेँ रे बिनु सिरबला। तँए कि ओ उतारा नइ देत, देबे करत किने। ओ देत जे बिना जानबला कहैए। माने हाथीक देहपर जे घण्टी टनटनाइ छइ। तँए चेत रे बिना पैरबला, घण्टीक आवाज पकड़ नइ तँ घड़ी-घण्टा लैत रहमेँ...।

मुदा सुनत के? ओना, समय मधमासक मधमेश पहर रहइ, मुदा तैयो लालबाबाक चानिपर पसेना चमकैत रहैन। करखनो पंखा उठा पसेना सुखबए चाहैथ आकि पंखाक ठंढ हवा देहेकेँ सिहरबए लगैन। जइसँ पंखा रखि दैथ। मुदा लालबाबाक चाइनपर जे पसेना उगि रहल छैन ओ केना सूखत?

असगरे दलानपर बैसल लालबाबा कछमछाइत रहैथ।

आने दिन जकाँ गामोक हाल-चाल आ अपनो परिवारक हाल-चाल-बुझैले लालबाबा ऐठाम पहुँचलौं। ओना सब दिन एकठाम बैस सभ गप करै छी। यएह ने भेल एक परिवारजनकेँ दोसर परिवारजनक सुख-दुखमे संग चलबक रस्ता। से तँ अछिए। गाममे नव घटना भऽ गेल, तँए अपन परिवारक काजसँ मन उच्चैट गेल रहए। असगर नीक नइ लगै छल तँए लालबाबा ऐठाम गेलौं। फरिकेसँ देखलयैन तँ बुझि पड़ल जे बाबा कछमछा रहला अछि। मनमे भेल जे नीक हएत हुनकापर नइ नजैर दैत अपन रस्ता धेने जाइ। चारूकात चकोना होइते छैथ जँ नजैर पड़तैन तँ

मन असथिर भऽ जेतैन।

लालबाबाकेँ पएर छुबि प्रणाम करै छिऐन, जखन पएर छूब तखन ने मुहोँ खोलि कहबैन, 'बाबा गोड़ लगै छी।' तँए मुड़ी निच्चाँ केने लग पहुँचलो ने रही कि तइसँ पहिनहि बाबा चहैक उठला–

"घनश्याम बौआ, समाजमे अन्याय होइए! अतहतह होइए!"

ओना जे घटना घटल अछि ओ तँ गामे कि आनो-आनो गामक लोक सुनलक मुदा एते पैघ गामक घटना रहितो सही बात ने कियो बुझि रहल अछि आ ने सुनि बाजि रहल अछि। चुपचाप पएर छुबि कनियेँ जोरसँ कहलयैन–

"बाबा गोड़ लगै छी।"

मुदा बाबाक मन जेना गुम्हरैत रहैन।

गाममे गोपीलाल आ सिनुरलालक बीच दोस्ती। दोस्तीए किए कहबै, एके टोलमे दुनूक घरो आ जातियो एके। स्वजातीय सम्बन्ध, प्रगाढ़ता अनैमे किछु सहयोगी तत्व छीहे। जेना– दूजातिक दू दोस्तकेँ कोनो तेसर ऐठाम पहुँचलापर अपने झलकए लगैए। गोपीलाल आ सिनुरलाल दुनू, एक-तुरिया। बच्चेसँ एकठाम रहने संगियोँमे नमहर संगी माने लंगोटिया संगी जकाँ। ओना, लंगोटिया संगीक माने भेल जे लंगोटा पहीरि संग चलब। से मुदा दुनू गोरेक बीच कहियो ने भेल। भेल एतबे जे विद्यार्थी-जिनगीसँ लऽ कऽ अखन चालीस बरिसक जिनगी धरि बिनु हरहर-खटखटक संगी बनि दुनू संगे चलैत आबि रहल अछि।

ओना, गोपीलाल आ सिनुरलालक बीच केतेको राजनीतिक चुनाव बीतल, गाम-समाजमे केतेको घटनो भेल, मुदा कनी-मनी कम-बेसी होइतो दुनूक सम्बन्ध पुरबते रहल। देखौआ सम्बन्धमे मिसियो भरि केतौ खोंच-खाँच नहि, मुदा दुनूक दू सोभाव तँए दुनू अपन-अपन उदेसक पाछू किछु विशेष सक्कत। दुनूक दू जिनगी, समाजक धारमे बहैत।

असीरवाद दैत बाबा बजला– “घनश्याम, मन किछु भरियाएल बुझि पड़ैए तँए पहिने एकबेर चाह पीबह।”

नाकर-नुकर तँ संगी-साथीमे होइ छै, बाबाक मन चाह पीबाक छैन, तखन मनाही करब नीक थोड़े हएत। बड़ बेसी तँ एतबे ने कऽ सकै छी जे, कनीकाल चाहक ठंढा कऽ पानि बना पीब। चाह पीबते रही कि झिंगुरलाल काका पहुँचला। चालू-पुरजा लोक छैथ। ओना, चालू-पुरजा बहुत रंगक होइ छै से नइ, गाम घरसँ कोट-कचहरी धरिक जानकार छैथ...। लालबाबा अपना मनकेँ कसिया कऽ बान्हि मुस्की मारैत झिंगुरलाल काकाकेँ कहलखिन– “झिंगुर, आब की..?”

बजैत-बजैत लालबाबाक छाती चहैक कऽ तिलमिला गेलैन। तिलमिलाइते बकार-हरण भऽ गेलैन। झिंगुरलाल काका लालबाबाक दशा देखि मनक मोइनमे डुबि गेला। मुदा कोनो घटनाक पूर्ब अवस्था आ पाश्चात्य अवस्थामे अन्तर भेने सभ कथुमे अन्तर आबिये जाइ छइ। अखन जे स्थिति अछि, तही अनुकूल ने कियो सोचि-विचारि सकैए। लालबाबाक मनकेँ असथिर करैत झिंगुरलाल काकाकेँ कहलयैन–

“काका, अहाँ ते घर-बाहरसँ जुड़ल छी, तँए कोनो बातकेँ बेसी दूरसँ बुझहै छिऐ। काल्हिसँ अखैन तकमे जेते लोकसँ गप भेल अछि ओइमे पाँचो-टाक एक विचार नइ मीलि रहल अछि, कियो किछु तँ कियो किछु बजैए। अहाकेँ ते बेसी बात बुझल हएत, बाबाकेँ कने नीक जकाँ बुझा दियौन।”

अपन सबाल उठैत देखि लालबाबाक मन फुलेलैन, मुदा ओइ फूलक ढेंसरे बना मनमे रखि लेलैन। हमर बात सुनि झिंगुरलाल कक्काक मनमे जेना करियाएल मेघ जकाँ चारू दिस अन्हार पसैर गेलैन। लालबाबाक आगूमे बैसल छी, जिनकर जिनगी अखन धरि गामक उत्थानक दिशामे क्रियाशील रहलैन अछि, गाममे जे गोपीलाल आ

सिनुरलालक बीचक घटना भेल अछि, ओ के बुझत। मुदा जे बुझल अछि, जेते धरि कानसँ सुनलौं, सएह ने कहबैन। हमरा आँखिक सोझक घटना तँ छी नहि जे कहबैन हम चश्मदीद गवाह छी।

झिंगुरलाल बजला– "लालबाबा, जे सुनलौं से कहै छी, काल्हि जे बड़का जलसा भेल रहै से तँ सुननहि हएब?"

लालबाबा तँ किछु ने बजला मुदा बिच्चेमे हम मुड़ी डोलबैत बजलौं– "हँ।"

हमर 'हँ' सुनि झिंगुरलाल कक्काक मनमे जेना किछु बल जगलैन। बल जगिते सबल होइत बजला– "जखन गोपीलालक हत्या भेल, ओ समय आ जलसाक समय एके छी।"

झिंगुरलाल कक्काक बात सुनि बजलौं– "नइ बुझि पेलौं, काका।"

उताहुल मनकेँ रोकैत झिंगुरलाल काका बजला–

"बौआ, अखन टटका घटना अछि। कोनो घटना कि ओहिना होइए पहिने ओ रचल जाइए। तँए अखन एतबे रहए दहक। मास दू-मासमे अपने सभ बुझबहक।"

लालबाबाक मनमे पैछला चुनाव ठहकलैन। ठहैकते उठलैन। गाम राँड़-बाँड़ भऽ गेल। के मरत आ के जिअत तेकर कोनो ठेकान नै रहतै..!

जहिना झिंगुरलाल काका लालबाबाक मुँहपर नजैर गड़ा किछु पढ़ि रहल छला, तहिना लालबाबा सेहो झिंगुरलाल कक्काक मुँहपर नजैर गड़ा पढ़ै छला। मुदा हम दुनूक मुँह बकर-बकर देखैत रहलौं।



शब्द संख्या : 1087, तिथि : 26 दिसम्बर 2015

एगच्छा आमक गाछ

सुन्दरपुर गाममे सोनमा बाध अछि। ओना चारू बाधक बीचमे गाम अछि मुदा दछिनबरिया बाध माने गामक दच्छिन जे बाध अछि जइ बाधमे प्रवेश करिते दच्छिन मुँह डेग उठत, ओइ बाधमे एकटा आमक गाछ अछि जेकरा लोक एगच्छा सेहो कहैए।

ओना सोनमा बाध नमगर-चौड़गर अछि, नमगरे-चौड़गर नइ, ऊँचगर-नीचगर सेहो अछि। तेतबे किए, जहिना खेत-खेतक माटि एकरंगाहो अछि तहिना भटरंगाहो तँ ऐछे, तँए ने दसो-पनरह रंगक माटियो अछि आ नीचाँ-ऊपर रहने आड़ियो तँ सीढ़ी जकाँ बनले अछि किने। खाएर जे अछि मुदा एते तँ ऐछे जे गाछक कमी नइ रहितो वृक्षक कमी तँ बाधमे ऐछे, माने खेती-पथारीक तँए ऊँचगर खेत रहितो अन्नेक खेती होइए जइमे गाछियो-बिरछी तँ भइये जाइए। से गाछी-बिरछी नहि। डेढ़ कट्ठा परतीपर मात्र एकटा आमक गाछ अछि। एकर माने ईहो नइ जे गाछ-पात नइ अछि। अन्नोक गाछो होइते छै, पातो होइते छइ। तहूमे माटिक जे भटरंगीपन छै ओ तँ आरो बेसी रंगक गाछ-पात उगबैए। जँ एकरंगाह रहैत तँ किछु समटल कारोबार, माने माटिक अनुकूल उपजा रहितै, से नइ बेसी रंगक रहने बेसी रंगक होइते छइ। खाएर जे छै, मुदा बाधमे एकटा आमक गाछ तँ अछिए। एकरा नकारलो नहियेँ जा सकैए।

बाधमे असगर एगच्छा आमक गाछ, खूब चतरलो अछि आ नम्हरो अछि। ओना ओ गाछ कियो रोपलक आकि अपने जनमल, से

अखैन तक गौंआँ नइ फरिछा सकल अछि। कियो कहै छै बाधक जे रखबार छल ओ रोपलक, मुदा ओ बुढ़बा तँ मरि गेल। रोपलाहा गाछे ने रहि गेल, मुदा से माननिहारो हुअए तब ने...।

किछु गोटे ईहो तँ कहिते अछि जे कौआ पाकल आम आनि गुद्दा खा लेलक आ आँठी-खोंइचा छोड़ि देलक, ओही आँठीक गाछ छी...।

मुदा लोकक मनमे जे होइत हौउ, ओ परतीपर जनमल तँ ऐछे, केकरो खास जमीनमे छै नहि, तँए सबहक छी, सबहक छीहे नइ सभ छाहैरमे छहरेबो करैए आ आमोकेँ चटनीसँ पाकल धरि खेबो करिते अछि। गाछो तँ सभ रंगक होइए मुदा से नइ, ओ आमक गाछ मनुक्खक केतेको पीढ़ी देखलक आ केते आगूओ देखत। ओना आगूक निसचित बिसवास नइ कएल जा सकैए, जेना पैछला अछि, मुदा बिसवास नहियोँ कएल जाए सेहो तँ उचित नहियेँ हएत।

ओना, जहिना सौंसे बाधमे एकटा गाछ रहने एगच्छा भेल, तहिना हजार बीघाक आमक गाछीमे एकटा बेलक गाछ सेहो तँ एगच्छा भेबे कएल। आमेक गाछी किए, तहिना फुलवाड़ियो सभमे होइते अछि...।

एगच्छा रहितो ओ आमक गाछ बुर्ड़ाक तँ अछिए। अपन चालि-बाइन धेनहि अछि। बुर्ड़ाक ई जे अनरनेबा आ धात्री जकाँ बिनु जोड़े जीबैक आशो नहियेँ रखने अछि, सेहो बात नहियेँ अछि। असगरे बाधमे अछि, फड़बो करैए, मोजरबो करैए, हरियेबो करैए, फतझड़ो होइए, मुदा जीबठ बान्हि जीबो तँ करिते अछि। नइ-ते असगरे जेना बाधमे अछि तेना अनरनेबा आकि धात्री जकाँ वंशो उपैट गेल रहितै। सभ बबाजीए बनि गेल रहितै। होइतो अहिना छै जे जे समैयक मुकावला नइ करैए ओ मेटा जाइए। ओकर वंशक बाढ़ि रूकि जाइ छै, मटियामेट भऽ जाइ छइ। पंचतत्वमे विलीन भऽ जाइए।

द्वापर युगीन एकलव्य जकाँ ओ एगच्छा आमक गाछ अपनाकेँ

बुझैत। जहिना शक्त-शील एकलव्य अपनाकेँ शक्तिवान बनबैले शक्तिशालिनीक आराधना केलैन तहिना ओहो आमक गाछ असगरे बाधक बीचला डेढ़-कट्ठबा परतीपर ठाढ़ भेल अपनाकेँ बुझैत। गाछो-बिरीछक दुनियाँ तँ अछिए। हजारो-लाखो रंगक गाछ-बिरीछक बोनाएल दुनियाँमे की सबहक वंशो आ वंशवृद्धियो एके रंगक थोड़े अछि। कोनो बीआसँ जनमैए तँ कोनो फूलसँ, कोनो पत्तासँ जनमैए तँ कोनो गाछक सीरसँ...। केकरो सिर माटिक तरमे रहै छै तँ केकरो पानिक तरमे। केकरो डारियेमे सिर होइ छै तँ केकरो फुनगीपर...।

वेचारा आमक गाछकेँ मन ठहिअए लगलै। ठहियाइते मनमे उठलै अनेरे दुनियाँक बोनमे मनकेँ वौआबै छी। तइसँ नीक जे अपन दिन-दुनियाँक बात बजबो करब, करबो करब आ जीबो करब। मन फेर ठमैक गेलइ। मुदा ठमैकते जेना तीन-बट्टीपर दिशांश लगितो छै, जइसँ पूब-पच्छिम भऽ जाइए आ पच्छिम पूब, तहिना दिशांश, छुटबो करै छै, जइसँ उत्तर-दच्छिनक बोध हुअ लगै छइ। जे केमहरसँ एलौं आ केमहर जाएब। तहिना आमोक भक्क कनी खुजल। खुजल ई जे अपनामे अनरनेबो आ धात्रियोसँ बेसी शक्ति तँ अछिए। ओकरा दुनूकेँ जे जोड़ नइ भेटतै तँ छेहा नंगा बबाजी जकाँ भऽ जाएत, वंशो रूकि जेतै आ दुनियोँ ओकरा बिसैर जेतइ। मुदा अपना तँ से नइ अछि, सभ किछु अछि...।

सभ किछु मनमे ऐबते एनामे जेना अपन मुँह अपने देखाइत तहिना अपन शक्ति अपना शकलमे देखलक।

अपना धुनिमे गाछ धुनियाँक धुनकी जकाँ जिनगीक रूइयाकेँ धुनए लगल। हजारो-लाखो रंगो, भटरंगो आ चितकाबरो वंशक गाछ सभ तँ ऐछे, तहीमे ने हमहूँ एकटा भेलिऐ। जखन एकटा भेलिऐ, तखन एकेटा ने भेलिऐ। तखन दोसराइत जे ताकब से अपने दोसराइतमे किए ने इजोते-इजोत जाएब...।

जिनगीक ओ बटोही जे नमहर जिनगीक बाट टपि आबि असोथकित भऽ जाइत तहिना वेचारा आमक गाछक मन असोथकित होइत ठमकल। देहमे शके ने बुझि पड़ै जे ठाढ़ रहत। हबटुटु साइकिल जकाँ मनक चक्का ने आगूए घुसकै आ ने पाछूए ससरै। जेना आइ ओ जिनगीक हारि कबूल कऽ लेत। मुदा से भेल नइ, भेल ई जे हुब टुटू मन बाजल– “आब, ई दुनियाँ देखब कठिन भऽ गेल।”

पजरेमे ठाढ़ हूबघटू बाजल– “बुड़ि कहीं के रे! ब्रह्मा सन-सन केते ब्रह्माकेँ देखनिहार लोमस बाबा लोहिया ओढ़ि कऽ देखलैन आ तूँ एतबेमे धौना फेड़ै छेँ। एकटा पैरबला कनी नेंगरा कऽ चलत, मुदा चलत किए ने। कोनो कि लोथ छी।”

हूबघटूक आ हबटुटु विचारकेँ वेचारा आमक गाछ विचारणीय बुझि विचारए लगल। मनमे एलै– गाछ-बिरीछक बोनाएले दुनियाँमे एकटा हमहूँ छी। रंग-रंगक रूप, रंग-रंगक चालि-ढालिक जिनगी सभकेँ अपन-अपन छइ। कियो बीआसँ गाछ होइए, तँ कियो फूलसँ...। ‘फूलोसँ गाछ’ मनमे ऐबते एगच्छा आमक गाछ ठमैक गेल। ठमकल ई जे अपन वंशक रस्ता की अछि। एकटा भेल पाकल आमक सक्कत आँठीसँ, दोसर भेटबे ने करइ। मनमे उठै जे हमर वंश कि एक भग्गुए रहि गेल...। आगू-पाछू किछु भेटबे ने करइ। भेटबो केना करितै, अखन तकक नजैर बीये-बाइलिक देखल-सुनल छेलइ। मुदा नजैर जखन आगू बढ़लै तखन बुझि पड़लै जे नै हमरो उपैतक दोसरो रस्ता अछि। ओ अछि बच्चा गाछक छातीसँ कलशल डारि सटा देने नव गाछ बनि नव जीवन सेहो तँ अछिए। तखन जिनगीसँ निराश किए हएब। मुदा जिनगी लेल जे समय-शक्तिसँ मुकावला करए पड़ै छै ओकर अनेको रूपमे दूटा कारण प्रमुख अछि। एक अछि समय-शक्ति जइमे जिनगी निहीत अछि आ दोसर अछि दानब-मानब वृति...।

एकाएक ओइ एगच्छा आमक गाछक मन फुला गेल। फुलाइते

बाजल– “हम लाल छी।”

जुहियाइत जूही बाजल– “जेहने सतरंगी रंग तेहने सतरंगी चालियो ने छौ। मरदक लाल जहिया बनमेँ, तहिया बुझबौ।”

मनमे उठैत खौंझकेँ रोकैत गाछ विचारए लगल। भाय सात अरब लोकमे केकरो एते फुरसैत छै, जे दोसरो दिस ताकत आकि देखत। जे बाप भरि दिन बेटा-ले पसेना चुवबैए ओकरा तँ एते फुरसैते ने छै जे अपना बेटाकेँ कम-सँ-कम अपनो वंशक इतिहास आ सामाजिक सरोकार बुझा सकत आ अनका कोन मतलब छइ। जहिना कोनो बिसरलहा बात, सोचै-विचारै काल जखन मोन पड़ै छै, तखन अपनो मनमे फुलाइत हँसी उठै छै तहिना ओइ एगच्छा आमक गाछकेँ सेहो भेल। मोन पड़लै अपन लगौनिहार रखबार, केना असकरे बाधमे ठाढ़ छी, जहिना सभ-ले अन्हर-विहाड़ि, झाँट-पाथर छै तहिना ने हमरो-ले अछि...। एगच्छा आमक गाछक मन आगू घुसैक बुदबुदाएल–

“अपन सर्वांग जिनगीक रक्छा अपने करैक लूरि-बूधि हएत तखन ने रकछित रहि सकै छी।”

लगले दोसर मन टोकलक– “मातृभूमि केकरा कहै छै, ओकर रकछक के छी?”

अनुत्तरित प्रश्न आमक गाछक मनमे उठए लगल। मुदा कलशाक डारिक नव गाछक रोहानी देखि मन रहैम गेलइ। रहैमते फुला गेलइ। फुलाइते उठलै– “अदौसँ जीव-जन्तुक संग रमैत एलौं अछि आ आगूओ अहिना रमता जोगी बनि रमैत एगच्छा नइ सत्-गच्छा बनि इन्द्रधनुष जकाँ अकासमे फुलाएब।”



शब्द संख्या : 1172, तिथि : 31 दिसम्बर 2015

माघ नहाइले जाएब

तिला-सकराँतिक एक दिन पहिने तीन बजे बेरुका उखराहा, दुखी काका दरबज्जेपर बैसल चाह पीबैत रहैथ। लंगोटिया संगी मुसन भैया ऐबते बजला– “माघ नहाइले जाएब, बिसैर जैतौं तँए पहिने कहि देलौं।”

दुखी काका आ मुसन भैया जेहने उमेरगर एकतुरिया तेहने काजो-उदम आ गपो-सप्प। घन्टा–घन्टा दुनू गोरे एकठाम अपन जिनगीक मचकीक झूला लगा झुलिते छैथ। मुसन भैया बजैत-बजैत बैस गेला। पोखरिक पानि जकाँ दुखी कक्काक मन असथिर रहैन मुदा माटिक गोला आकि पाथरक टुकड़ा फेकलासँ जहिना पानि डोलए लगैए, माने पानिमे कम्पन आबि जाइत, तहिना मुसन भैयाक बात सुनि काकाकेँ भेलैन। मुदा चाह पीबैत रहैथ तँए आगूक काजकेँ अगुअबैत बजला–

“संगी, पहिने चाह पीबह तखन दुनियाँ-दारीक गप-सप्प हेतइ। ने दुनियाँ केतौ पड़ाएल जाइए आ ने अपने सभ मरैक बाटपर छी, तखन अनेरे औगताइ कथीक अछि जे हड़बड़ाएब।”

दुखी कक्काक बात मुसन भैयाकेँ नीक लगलैन। मुस्की भरैत बजला–

“संगी, से नइ बुझलिऐ..; जखने गप-सप्पक भाँजमे पड़ि जैतौं तखने अपन नियारल बात बिसैर जैतौं, तँए पहिने अपन विचारक हाजरी बना लेलौं। ”

दुखी काका आ मुसन भैया एकतुरिया, करीब सत्तैर बरख पार

केलहा दुनू संगी। ओना दुनू दू जातिक मुदा सम्बन्धमे एकजतिया छैथ। ऐठाम एकटा बात आरो अछि, दू जातिक एक जाति ओ छैथ, जिनका बीच जिनगीक अनेको क्रियामे एकरूपता अछि, आ किछु एहनो अछि जइमे विविधता अछि। ओना दुखी काका हमर दियादी काका छैथ माने पित्ती छिआ तँए काका कहब उचित अछि। तहिना मुसन भैया ऐ दुआरे कहै छिऐन जे हिनकासँ सामाजिक सम्बन्ध अछि। ओना गाम-समाजमे हमरा सन-सन उमेरक छौड़ा अखनो 'मुसन' भैयाकेँ मुसने कहै छैन, तँए उचित बुझैत भैया कहै छिऐन।

दुखी कक्काक चाहक आग्रहकेँ कटैत मुसन भैया कहलखिन–

"संगी, कोनो कि बाँटल छी, चाह पीबिये कऽ एलौं हेन। अहाँ पीब लिअ।"

हाँइ-हाँइ दुखी काका गिलासक चाह सठा बजला–

"संगी, काल्हि पाबैन छी, तखन तूँ की कहि देलह। आगूमे जखन अगुआएल पाबैन अछि, तखन पहिने कोन गप अगुआ देलहक।"

मुसन भैया जेहने बजैमे पीच्छर तेहने टोन मिलबैमे सेहो छैथे...। बजला–

"कौल्हुके बात तँ हमहूँ कहलौं। भेल एतबे जे सौंझुका गाड़ी पकैड़ सिमरिया मास करए जाएब, से पहिने कहा गेल। सेहो पहिने कहाँ कहाएल, जेकरे दिन तेकरे ने रातियो। कृष्णजी जकाँ थोड़े सभ अछि जे अपन जनम-टिप्पैन बारह बजै रौतका बनौत। ओ तँ दिनके नामे ने टिपैन बनाएत।"

एक बेर-के दुखी कक्काक मुँह दिस देखी तँ एक बेर मुसन भैया दिस, गपक कोनो थाहे ने बुझिऐ। भाय गप तँ गप भेल, तखन ओइमे कोन आगू-पाछू हएत, आ जँ भइये जएत तँ पछाइत सेरिया लेब। काज थोड़े छी जे नक्शे बदैल जाएत, कोनो कि लोहाक नट-बोल्ट छी जे एक-

दोसरमे लगबे ने करत, चाहे कोनो अँटबे ने करत आकि कोनो ढिलढिले भऽ जाएत।

मनमे जेना कनी उकबात जगल, मुसन भैयाकेँ कहलयैन–

“भैया, अहूँ बड़ लटपटिया छी, झाड़ि कऽ बाजब से नइ। जे सोझराएल रहने हमहूँ बुझबै।”

मुसन भैया बजला–

“बौआ, अखन तूँ बाल-बोध छह, जखन बल बोध हुअ लगबह तखन अनेरे ने सभटा देखए-बुझह लगबहक।”

मुसन भैयाक उत्तर सुनि मन सोल्होअना उतैर गेल। उतैरते भेल जे अनेरे बिढ़नी-छत्तामे गोला फेक बिढ़नी उड़ा देहमे कटा लेलौं। फेर भेल जे औगताइये कोन अछि जे एते धड़फड़ाइ छी। भने दुनू संगी अपन गप-सप्प करता, अपने सुनब। जे नीक लागत तेकरा नीक कहबैन आ जे अधला लागत तेकरा अधला कहबैन...।

मुँह मारि चुप-चाप भऽ गेलौं। ओना मुसन भैयाक बात हमरा ने तीते लागल आ ने कसाइने, कहब जे मीठ लागल सेहो ने लागल। मीठोक तँ अगम लीला अछि, कियो कुशिआरेकेँ मीठक जड़ि कहि आन-आन मीठक मोजरेकेँ लाही जकाँ चाटि लइए, तँ कियो दुनियाँक सभ कथू अवस्था पेब मीठसन सिरैजते अछि, से बुझैए। ओना लोकक अपन लोकल हिसाब छै, कियो मीठ पानि, तँ कियो मीठ वाणि, तँ कियो मीठ कानि, तँ कियो मीठ हानि, तँ कियो मीठ फानि, तँ कियो मीठ मानि जीबते अछि। ओना सच पुछी तँ मुसन भैयाक ‘बल-बोधक’ माने नै बुझलौं। मुसन भैया, सतसंगी लोक छैथ। वैष्णव छैथ, कबीर पंथसँ जुड़ल छैथ। जहिना ब्रह्मवेत्ता गुरु भेटने ब्रह्मज्ञानी होइए तहिना मुसन भैयाकेँ सेहो छैन्हे। माने ई जे कबीर पंथी रहने भाषाक डिक्टेटर-पंथी छथिए। माने ई जे कबीर साहित्य भाषाक ओहन समुद्र छी, जैठाम भाव

जहिना अछि, तेकरा तहिना कहल गेल अछि। तेही पंथक ने मुसना भैया छैथ, तँए तामसो केना उठितए। जेहेन गुरु तेहने ने चेलो हएत। से मुसना भैया छथिए।

हमरापर जे मुसन भैया झपट मारलैन से दुखियो काका बुझि गेला। ओना दुखी कक्काक मुँहक रूखिसँ बुझि पड़ल जे मनमे किछु कचोट मुसन भैयाक बात सुनि भेलैन। भऽ सकैए जे एहेन बात मनमे उठि गेल हेतैन जे ऊँच लग ऊँच विचार बाजी आ नीच लग नीक विचार। मुदा नीक विचार नीक भाषाक संग चलत, से गड़बड़ भेलैन।

ओना दुखी कक्काक मन सोलहन्नी फ्रेश रहैन। लगले चाह पीनै छला। मनमे बिचैड़ गेल छेलैन जे अखन संगीक मन चढ़ंतपर अछि, तँए सवाले पुछब नीक हएत। अपने मन जखन बजैत-बजैत थकतैन, कि असथिर हेतैन...। दुखी काका बजला–

“संगी, की कहलहक माघ नहाइले जाएब?”

दुखी कक्काक जिज्ञासा पेब मुसन भैयाक मन दलमलित भऽ गेलैन। दलमलाइत बजला–

“संगी, परसूसँ माघ चढ़त किने, गामक बुढ़-पुरान सभ माघ नहाइ-ले सिमरिया जा रहल छैथ, तिनके सबहक संग पत्नियोँ जेती। केतबो कहै छिऐन जे जखन हम जीबते छी तखन अनेरे केतए वौआएब। मुदा से नइ मानि रहली अछि।”

कहि मुसन भैया थकथका गेला। थकथकाइत देखि दुखी काका पुछलखिन–

“संगी, तूँ ते कबीर पंथी छह, तखन..?”

ओना मुसन भैया ‘मघ-स्नान’ विचार क्षेत्रमे महंथजीक मुहेँ सुनितो अबै छला, मनो छैन आ बजबो करै छैथ मुदा पत्नी माघ नहाइले जेथीन तँए संगबेमे अपने नइ जाइथ से गड़बड़ लगै छेलैन। गड़बड़ ई लगै छेलैन

जे जँ कहीं पत्नी गंगे लाभ भऽ गेलखिन तखन अपन गति की हेतैन, ई प्रश्न तँ आगूमे ठाढ़ रहबे करैन...।

मुदा सभ दिन एकठाम बैस दुनू संगी सभ रंगक गप-सप्प करैत आबि रहल छैथ तँए कोनो बात बजैमे संकोचे किए होइतैन...।

कनी पाछू घुसकैत मुसन भैया बजला–

“संगी, हम सभ की कोनो असलाहा कबीर पंथी छी।”

बाजि मुसन भैया किछु विचारए लगला। मुदा विचारमे साबेक जौड़ जकाँ खोंच-खरोंच भऽ गेलैन। खोंच ई भेलैन जे अपना मुहेँ केना बाजि गेलौं जे असलाहा कबीर पंथी नइ छी। कहुना-कहुना पचास बरख ऊपरेसँ वैष्णव छी। तइसँ पहिने जे खत्ता-खुत्ती उपैछ इचना-पोठी खेलौं, से सभ की पेटमे धाएले अछि। तखन असल कबीर पंथी केना नइ भेलौं...।

मुदा बिच्चेमे दुखी काका पुछि देलखिन– “तखन कोन कबीर पंथी भेलह?”

ओना मुसन भैयाक मन बजै दिस सुढ़िया गेल रहैन, तँए विचार दिससँ बहटल रहबे करैथ, बिनु विचारने बजला–

“हम तँ भूत-कबीर भऽ गेलौं।”

‘भुत-कबीर’ सुनिते हमरो मन सुरखुराएल, मुदा हुअए जे मुसन भैया मुँहफट छैथे जँ कहीं हमरा बातपर तामसे उठि जाइन आ खिसिया कऽ लगेसँ भगा दैथ। होइतो अहिना छै जे किछु विचार एहनो तँ ऐछे जे विचारैकाल बाल-बोधकेँ लोक लगसँ फरिक जाइले कहिते छैथ। मुदा जेना हमरा मनक बात दुखी काका बुझि गेला आकि अपने मनमे लगलैन, से तँ ओ जानैथ, पुछलखिन– “संगी, भूत-कबीर की भेल?”

दुनू संगीकेँ आँखि-मे-आँखि तेना सटि गेलैन, जे हम अन्हरा गेलौं। माने दुनू गोरेक आँखिसँ ओझिल भऽ गेलौं। दुनू गोरेकेँ भेलैन जे ऐठाम

कियो तेसर ऐछे नइ...।

मुस्की मारैत मुसन भैया कहलकैन–

"संगी, दुनियाँ केतौ उगौ-डुमौ, हमरा दुनू संगीकेँ कोन मतलब अछि। सत्तैर-पचहत्तैर बर्खसँ ऊपरे भऽ गेल हएत, दू-चारि बरख-ले मुँह फुला-फुली कऽ लेब, से केहेन हएत। प्रेमचन्दो काका कहता जे भरिसक दुनू संगीक संगपना बौलक ढेरीपर जनमल छल जे हवाक सिहकीमे खसि पड़ल! से कथीले।"

दुखी काका बुझि गेला जे मुसन अपन हारि कबुल कऽ रहला अछि। मुदा एते तँ मानियेँ रहल छैथ जे आगूओ संगपना बनल रहए। तैबीच अपने किए औगता कऽ कोनो एहेन उझट बात बाजि जाइ जइसँ सम्बन्धे विघटित

भऽ जाए। सभ अपन देहा-देहीक ने जवाबदेह अछि। ओना परिवारो कि कुटुमो-परिवार आकि सगो-सम्बन्धीक गल्तीक फला-फलाक जवाबदेह सेहो अछि, मुदा मनुक्ख तँ मनुक्ख छी, पशु नइ छी जे ओकरा बान्हि कऽ राखल जाएत। हँ एते तँ जरूर ऐछे जे मनुक्ख विचार-विवेकशील प्राणी छी तँए ओकरा विचारक बान्हमे तँ रखले जा सकैए...।

सामंजस करैत दुखी काका बजला–

"संगी, भूत-कबीर की कहलहक?"

दुखी कक्काक प्रश्न सुनि मुसन भैयाक मन मिसियो भरि नै सिहरलैन, जेना किछु खुशीए भेलैन। होइतो अहिना छै, जे मुँहपर केकरो अवाच काजक चर्च भेने, अवाच-वक्ताकेँ भारी-सँ-भारी कीमत किए ने चुकबए पड़ै मुदा मन तँ उत्साहित रहबे करै छै जे सत्यक अन्वेषणक जँ कियो प्रहरी अछि तँ हमहूँ छी। मुदा से सभ नै भेल, मुस्कुराइत मुसन भैया बजला– "संगी, भूत-कबीर ओ भेल जे सार्वजनिक मञ्चपर किछु बाजल, माने सोहनगर बात बाजल आ घर-परिवारमे ओकरे माने

सोहंतगर काजक विचारकेँ, उनटा कऽ बजबो कएल आ करबो केलक।"

मुसन भैयाक विचारमे ओना हमरो मन हलैस गेल मुदा मुँह दबने रहलौं। मुँह ऐ दुआरे दबने रहलौं जे जँ कहीं हमरा मनक बात दुखीए काका अपना मुहेँ उझैल दैथ तँ से बेसी नीक हएत। कम-सँ-कम एते तँ हेबे करत जे उमेरक हिसाबे जे कम-बेसी अछि ओइमे कोनो बाधा नइ हएत। मुदा से भेल। दुखी काका पुछलखिन–

"संगी, नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं जे की कहलहक?"

बुझल बात आकि मनमे बड़कैत बात जँ कियो बुझऽ चाहै छै तँ बजनिहारकेँ अनभुआर बात बजैसँ बेसी मन परपन बजैकाल होइ छैन। मुसन भैयाकेँ सएह भेलैन। बजला–

"संगी, अपनो बुझै छी जे आत्माक बीच जे गंगा छैथ ओ पवित्र छैथ, हुनका पवित्र बना राखब देवत्व भेल। मुदा से...?"

'मुदा से' कहि मुसन भैया चुप भऽ गेला। अधखड़ुआ बात सुनि ओही विचारक खोंरनीसँ खोरैत दुखी काका बजला–

"से की, से की संगी?"

दुखी कक्काक जिज्ञासा पेब मुसन भैया अपन पाशाकेँ कनी झुकबैत बजला–

"संगी, गामक जेते बुढ़-पुरान वा बुढ़-बुढ़ानुस छैथ, ओ सभ सिमरिया मास करए जाइ जेता हुनके सबहक देखा-देखी पत्नी जाइले उताहुल छैथ। जेबे करती। आब अहीं कहू जे असगरे ऐ उमेरमे जाए देब नीक हएत?"

दुखी कक्काक मन ठमैक गेलैन। ठमकलैन ई जे, जे विचार विचारवान आदमीकेँ धारण करक चाहिऐन सएह विचारहीन भऽ रहला अछि। तैठाम मुसन सन लोक केना ठाढ़ रहि सकैए..! विचारकेँ गहींरसँ ऊपर दिस माने गहराइसँ छिछलपन दिस मोड़ैत दुखी काका बजला–

“संगी, तोहूँ बड़ मायावी छह। आब ऐ उमेरमे घरवाली लऽ कऽ की करबह। भने गंगा लाभ भऽ जेथुन।”

दुखी कक्काक बात सुनि मुसन भैया भभा कऽ हँसला। कम विचारे हँसला आकि बेसी विचारे, से तँ ओ जानैथ मुदा हँसला ठहाका लगा कऽ।

मुसन भैयाक ठहाका देखि हमरो मन बदैल गेल। बदैल ई गेल जे अखन मुसन भैयाक मनमे खुशी उपकल छैन, तँए तामस केम्हरो दोग-सान्हि धेने हेतैन, सनमुख नइ अछि, पुछलयैन– “भैया, भूत-कबीर की कहलिऐ, नीक नहाँति नइ बुझि पेलौं?”

हमर बात मुसन भैयाकेँ गारा नइ लगलैन, माने कण्ठ लग नइ अँटकलैन। सोझे घोंटि मुस्कियाइत कहलैन–

“बौआ, अखन तूँ बाल-बोध छह, दुनियाँक छकल-बकल लगले बुझि जेबहक। कोन गाम आ कोन समाज अछि जइमे लोक कम्मल ओढ़ि-ओढ़ि घी नइ पीबैए। मुदा, तोहूँ अखन विद्यार्थी छह पहिने नीक जकाँ पढ़ह।”

मुसन भैयाक बात हमरा ओते नीक नइ लगैत रहए तँए मन तँ कड़ुआइत तँ नै रहए मुदा मुँह जरूर बिजकैत रहए, जे बात मुसन भैया बजैक क्रममे बुझि गेला...।

बिजकल मुँह देखि मुसन भैया फेर बजला–

“बौआ, अल्हुआ छह मास माटितर रहैए से औगतेबे ने करैए आ तूँ एकेटा विचारमे औगता गेलह। तोहर बात कि कोनो हमरा मनसँ हटि गेल अछि, ओ तँ अछिए। संगीक जवाब काल्हियो-परसुओ देबैन मुदा तोहर सवाल उधारी थोड़े राखब। तहूमे जेबीमे पाइ अछिए।”

मुसन भैयाक लहटगर बात सुनि मनक खुशी पोनैग गेल, बजा गेल– “भैया, अहूँ बड़ पारखी छी।”

हमरा बाते हुनका कि भेटलैन से तँ ओ जानैथ मुदा मुँह चिकनाइत बुझि पड़ल...। बजला–

"बौआ, मनुक्ख रहह आकि गाछ-बिरीछ आ कि जर-जानवर सभकेँ रौदमे छाँह होइ छै, वएह छाँह ओकर भूत भेल, जे सिरखार तँ सभ रहै छै, मुदा अन्हार होइते हेरा जाइए।"

ओना नीक जकाँ मुसन भैयाक जवाब नइ बुझि पेलौं, मुदा अपने मन कहलक अधखड़ुओ तँ बुझलौं। दोहरा कऽ पुछब से नीक हएत तँए दुखिये काकाकेँ गप-सप्प करै दिऐन जे केते विचार बीचमे औत, तेकरा बुझैक अवसर तँ ऐछे सेहो बुझि लेब। सएह सोचि चुप भऽ गेलौं...। ओना दुखी काका मुसन भैयापर आँखि गड़ा भीतर-बाहर माने तर-ऊँपर देखैत रहैथ। मुदा बजैथ किछु ने। हमरा गपक दुआरे नइ बजैत रहैथ कि अपन अभयंतरमे कोनो विचार उगैत-डुमैत रहैन से तँ ओ जानैथ। मुदा हमरा चुप देखि दुखी कक्काक मन सुगबुगेलैन, ओना मुसन भैयाक मन आरो आगू बजैले लुसफुसाइत रहैन मुदा ओहो दुनू ठोरसँ मनक बातकेँ मनेमे रोकि लेलैन। चुपा-चुपी देखि अपना विचारकेँ आगू मुहेँ ठेलैत दुखी काका मुसन भैयाक मुँह-पर-मुँह रखि बजला– "संगी, हमर विचार अछि घरवालीकेँ समाजक संग असगरे जा दहुन..?"

आगूक बात बजैले दुखी कक्काक मनमे रहबे करैन कि बिच्चेमे मुसन भैया लपैक बजला–

"संगी, कोनो जनमक कनारि ओसलए चाहै छी?"

जेना आमक गाछपर फेंकल झटहासँ जँ आम नहियोँ टुटैए तैयो तँ डारि-पात झाँटि देबे करै छै तहिना भेलैन। माने ई जे दुखी कक्काक मनमे भेलैन जे मुसन सतसंगी लोक छैथ तँए विचारमे जेते सक्कतपन औतैन जइसँ जिनगीक साधल क्षणक महत बुझता आ अपनाकेँ ओइमे लीन केने रहता। मुदा अबेवहारि मुसन भैयाक मनमे से विचार घर नइ कऽ

सकलैन, तेकर कारण रहैन जे फकरीरिक परसाद बुझि गाँजो-भाँग पीबै छैथ आ जिनगीक ओतबे क्षण अपनाकेँ विचारक सिपाही, माने कबीर पंथक चलनिहार बुझै छैथ। तँए विचारमे दूरी सोभाविक अछि, जे छेलैन...।

बिहुँसैत मुसन भैया बजला– "संगी, संगीक काज ई उचित नइ भेल जे गंगा नहाइक बाटमे बाधा ठाढ़ कऽ बाधक बनि जाइ। जँ एहेन करब तँ हमरा जे अधरम हएत तेकर भागी अहूँ हेबइ।"

मुसन भैयाक बात सुनि दुखी काका ठमैक गेला। ठमैक ऐ दुआरे गेला जे मनमे उठि गेलैन जे हमर बात मुसन नइ बुझि पेब रहल छैथ। नीक हएत जे भूतलग्गू जकाँ किए ने बकाबी...। दुखी काका बजला–

"धरम-अधरम की कहलहक, संगी?"

एक तँ ओहुना धरमक विचार व्यक्त करब धर्म भेल, तैपर मुसन भैया गंगा नहाइक बाटक डोरीमे बन्हा गेल छैथ, तँए कँवरिया जकाँ मनमे बुबकी रहबे करैन...।

बजला– "संगी, जखन पशुक नाङैर पकैड़ लोक वेतरणी पार होइए तैठाम जँ पत्नी गंगा लाभ हेती तँ हमहूँ किए ने हुनके टाँग पकैड़ पार हएब। जँ हनुमानी नाङैर रहितैन तँ सहए पकैड़ लइतौं।"

एक तँ ओहुना संगतिया लोक पीछराह होइते छैथ तैपर मञ्चक चौखड़ीपर बैसनिहार तँ आरो बेसी होइते छैथ दुखी कक्काक मन मुड़िया गेलैन। जहिना कोनो लत्तीक मुड़ीकेँ आगू बाट नइ भेटने उनैट कऽ मुड़िया जाइए तहिना दुखी कक्काक मन मुड़िया गेलैन। मुड़ियाइते फुरलैन– नीक हएत जे एकेटा प्रश्न बाजी, बजला–

"से की?"

'से की' सुनिते मुसन भैयाक मन आरो बेसी फुरफुरेलैन। मन ऐ दुआरे फुरफुरेलैन जे मञ्चपर ठाढ़ भऽ जखन मुसन भैया कबीरक विचार

व्यक्त करए लगै छैथ तँ पहिनहि पुछि लइ छथिन जे किनको जँ कोनो प्रश्न हुअए तँ पहिनहि बाजि जाउ...। ऐठाम तँ दुखी काका सन श्रोता पौलैन। बजला–

“संगी, माघ मास जखन माघ महीना नइ बनल छल, माने जखन नक्षत्रे छल, जे सत्ताइसटा अछि, ओकरा छोट करि कऽ बारहटा मास बनौल गेल, तखन माघ मघ-असरेस नक्षत्र छल, तइमे साले-साल कि केता साल नहा-नहा खेती-पथारी केने छी, मुदा तँए माघ मासो सएह भेल, से उचित हएत।”

मुसन भैयाक बात सुनि दुखी काका असमंजसमे पड़ि गेला जे जेकरे डरे भीन भेलौं, सएह पड़ल बखरा। हम मुसनसँ पुछए चाहै छिऐ आ ओ हमरे पुछि देलक...। आमक गाछक सील-लकड़ीकेँ जहिना बाँसक टोनसँ गर उनटौल जाइ छै तहिना दुखी काका गर उनटबैत बजला– “पैछला बात नइ बुझलौं, संगी?”

पैछला सुनिते मुसन भैयाक विचार सेहो पछुआ कऽ बदैल गेलैन। बदैल ई गेलैन जे माघक जाड़ हार तोड़ैए जइसँ देहक शक्ति क्षीण होइए, तँए एकर जे छीनपना छै तेकरा अहाँ केना बँचा पएब...।

औगताइत मुसन भैया बजला–

“संगी, जँ माघ खेपि ओमहरसँ घुमब तखन तँ सभ बात कहबे करब नइ तँ गंगा लाभे बुझब।”

आस-निरासक बीच पड़ल मुसन भैयाक मनकेँ देखि पुछलयैन–

“भैया, ऐठाम तँ विचार आ बेवहारमे..?”

अपन बात पुरलो ने छल कि बिच्चेमे लपैक मुसन भैया कहलैन–

“बौआ, कहलियऽ ने अपने गुनी बनि गुनि-गुनि चलिहह। नइ ते दुनियाँमे तेहेन छकल-बकल अछि जे ने घरक आ ने घाटक रहबह।”

पुछलयैन–

“से की भैया?”

हँसैत मुसन भैया बजला–

“बौआ, तूँ ते सहाएब सभकेँ जनिते छह, ओ सभ पचीस दिसम्बरकेँ ‘बड़ा दिन’ घोषित कऽ देलक। ओहिना केलक आकि मकड़ रेखाक हिसाब जोड़ि कऽ केलक से तँ ओ जानए। तहिना अपनो सभ तिला-सकराँतिक दिनसँ सूर्यकेँ उत्तरायण बुझै छी, जे आब उतैर रहला अछि, कियो केम्हरोसँ कहता जे गेल माघ उनतीस दिन बाँकी मुदा तोहूँ नवजुबक छह, साले-साल देखिते आबि रहलह अछि जे माघक जाड़ केहेन होइए। एकरे बुझब-जानब ने भेल माघ नहाएब...। अच्छा, घुमि कऽ आएब तखन आगूक बात आगू होइत रहत।”



शब्द संख्या : 2616, तिथि : 04 जनवरी 2016

एक घोंट पानि

बहत्तैर बर्खक वयसमे विलास बाबू अपन पैंतीस बर्खक संसदीय जिनगीक संग पचपन बर्खक राजनीतिक जिनगीकेँ तिलांजलि दैत, बिना किछु केकरो कहने घरसँ निकैल गेला। जेना गाम-घरमे होइए जे कोनो बाते दुनू परानीमे झगड़ा भेने एक परानी नैहरक बाट पकैड़ नैहर दिस विदा ई सोचि भऽ जाइ छैथ जे भीखो-दुख मांगि माइयो-बापक सेवा करब, मुदा एहेन घर आ घरबलाक मुँह नइ देखब। ओना विलास बाबूकेँ से नइ भेलैन, मुदा एते तँ भेबे केलैन जे एतेटा दुनियाँ अछि, तइमे एते बड़का-बड़का समुद्र अछि, पानिक भण्डार अछि तखन हमरा एक घोंट पानि नइ भेटत जे मरि जाएब, तखन अनेरे किए एहेन जिनगी बनौने जा रहल छी जे जैठाम मनुक्खक सेवाक उदेससँ कौलेजक जिनगीमे राजनीतिक जिनगीक बीच पएर रोपलौं, जे अबैत-अबैत आइ ने लगमे एकोटा लोक बिसवास पात्र अछि आ ने लोके आकि परिवारेक बिसवास पात्र अपने बनल रहलौं..!

यएह सभ विचार विलास बाबूक मनकेँ तेना ने ममोरि देलकैन जे एक घोंट पानिक आशा करैत वेरागी-सन्यासी जकाँ घरसँ निकैल गेला।

ओना, ने केकरो–समाजसँ लऽ कऽ राजनीतिक संगी तककेँ ऐ बातक जानकारीए देलखिन आ ने केकरोसँ विचारबे केलैन। तइसँ कियो किए बुझत जे विलास बाबू पैछला जिनगीक सभ किछु छोड़ि नव जिनगीक खोजमे घरसँ निकैल गेला। तँए अपना मनमे नव विचारक नव

दशा-दिशा रहितो आन लेल–माने अखन धरिक संगियोँ-साथी आ कुटुमो-परिवार–ओहिना छैथ जहिना अखन धरिक जिनगी अङेजने आबि रहल छला...।

घरसँ निकलला पछाइत विलास बाबूक मनमे एलैन जे जखन पैछला जिनगीक सभ किछु छोड़ि देब तखन केकरो ऐठाम जाएब उचित नहि। ओना, जिनगी जेहेन हुअए मुदा खाइ-पीबैले अन्न-पानि, रहैले घर, पहिरैले वस्त्र चाहबे करी, से तँ सभठाम राखल नइ अछि, जे जेतै मन फुरत तेतै रहि जाउ आ सभ किछु आगूमे मौजूद रहत। ओना दुनियाँ अही सभसँ भरल अछि मुदा तैयो तँ अपना-ले सभकेँ अपन-अपन ठौर-ठेकान बनबैए पड़ै छइ।

घरसँ निकैल रस्ता टपैत विलास बाबूक मनमे उठलैन– जखन सभ किछु छोड़ि एक घोंट पानिक आधार बना जीबैले ठानि लेलौं, तखन अनेरे किए छिछिआएल घुमब। से नइ तँ भने पीपरक गाछ रस्तापर ऐछे, ऑक्सीजनक भण्डार छीहे, एतै किए ने चैनसँ अरामो करब आ रस्तो ताकब...।

ई तँ गुण रहलैन जे ने रस्ताकातक माइल-स्टोनपर नजैर गेलैन आ ने मोबाइले-घड़ी संगमे रहैन जे तइसँ मिला माइलिक अन्दाज कऽ लितैथ। फेर अपने मन कहलकैन–

“धुर बतहा! वौआइत-वौआइत सौंसे दुनियाँ वौआ एमे, मुदा दुनियाँ देखबे ने करबीही।”

विलास बाबूक पहिल मनक विचार दोसर-तेसर मन सेहो मानि लेलकैन।

आगूमे पीपरक चतरल गाछ, हवा तँ नइ बहैत रहै मुदा अपने फुरने पीपरक पात हिलैत-डोलैत रहइ। नमगर-पातर डण्टी रहने आकि की, मुदा हिलैत-डोलैत जरूर रहइ। ऑक्सीजन-पर-ऑक्सीजनक बिलहा-

बाँट होइते रहइ। ऑक्सीजन पबिते विलास बाबूक नजैर ऑक्सीजनक जड़ि दिस बढ़लैन। गाछ-बिरीछ अपन साँस ऑक्सीजन छोड़ैए...। फेर अपने मन पुछलकैन–

"की पीपरे गाछटा ऑक्सीजन छोड़ैए आकि आरो-आरो गाछ छोड़ैए?"

एक आ एकसँ अधिकक बात उठिते रंग-रंगक विचार विलास बाबूक मनमे उठए लगलैन। दोसर मन बिच्चेमे तराक-दे बाजल–

"आमोक गाछ तँ ऑक्सीजन छोड़ते अछि, तैसंग खाइले आमो तँ दइते अछि। आ तेतबे किए, मरि गेलापर सेहो अपन लकड़ीक हबन करैत माघक जाड़ोक रक्छा आ खेबा-पीबाक ओरियानोक संगी तँ ऐछे, मुदा पीपर तँ से नइ अछि। सुगरक गोबर जकाँ ने नीपै-जोकर आ ने पोतै जोकर।"

मनक बतकटौबैलमे विलास बाबूक मन ओझरा गेलैन। ओझराइते एकटा मन भनभनेलैन–

"जेकरे डरे भीन भेलौं सएह पड़ल बखरा। भाय, जखन घरसँ निकैल गेलौं तखन अनेरे घुरमुरियामे घुरिआइ छी।"

मनक धिक्कारसँ दोसर तेसर मन ठमकलैन। ठमैकते पहिल मन विचार देलकैन–

"भाय, दुनियाँकेँ एना नइ ने चीनबीही। ओकरा तँ ऐनामे रखि, चेहरा देखने ने चीनबीही।"

मनमे उठिते विलास बाबू गाछ-बिरीछकेँ धड़ियाबए लगला। धड़ियेलैन ई जे केते रंगक गाछ-बिरीछ अछि जे ऑक्सीजन दइए। तइ धारीमे तुलसी, पीपर, बड़, पाखैरक संग नीमो नजैर पड़लैन। नीमपर नजैर पड़िते मन फेर भिनभिनेलैन–

"ई केना भेल! तीतहा गाछमे मीठ फल केना लगि गेल?"

कोनो गरे जे हिसाब विलास बाबू जोड़ैथ से हिसाबे ने मिलैन। अकैछ कऽ मन अकछा गेलैन मुदा हिसाब नइ सोझरेलैन। कखनो पात दिस नजैर बढ़ैन तँ पीपर, बड़, पाखैरक पात छह-छह करैत आँगन जकाँ चिक्कन बुझि पड़ैन, तँ लगले नीमपर नजैर पड़िते होइन जे ई केना भेल। टुकड़ी-टुकड़ी पात जहिना कटल अछि, तहिना सौंसे देहक सिर झकझक करै छइ। मुदा लगले मन आगू घुसैक कऽ सिरपर पड़लैन। नीमक सिर मुसरा बनि माटिक बीच अपन माटिक ऊपरक चढ़ल गाछक समतूल भार उठौने अछि, जखन कि एकरा सभकेँ माने बड़, पीपर आ पाखैरकेँ मुसरा-सिर होइते ने अछि। जल्ला सिर होइए, जइसँ घरतीक ऊपरके भागमे घुरियाएल घुमैए। कनियेँ हवा-विहाड़ि उठने अर्ड़ा-अर्ड़ा खसैए। भलेँ मने-मन गुड़-चाउर किए ने फाँकह जे माटिकेँ माइट कहह जे अकासमे उठल गाछक डारियोमे हमर सिर जनमैए...। विलास बाबू जेते गाछक ऑक्सीजनक विचार करै छला तेते अपन ऑक्सीजन घटित होइत गेलैन। घटैत-घटैत एकटा आड़ि धऽ अँटकलैन। अँटैकते मनमे उठलैन–

"एना नै फड़ियाइत, तँए कोन-कोन गाछ-बिरीछ अछि जे ऑक्सीजनो दइए आ आनो-आन साधनसँ मनुक्खकेँ वा अन्यकेँ जीबैक उपाय करैए।"

मनमे ऐबते विलास बाबूक मन शान्त भेलैन। ओना, एक तँ रस्ताकातक पीपरक गाछ, तैतर असगरे विलास बाबू बैस मने-मन अपन शेष जिनगीकेँ चलबैक बाट ताकि रहला अछि। मुदा गाछक ऑक्सीजनेमे तेना ओझरा गेला जे सोचै-विचारैक ने सस चलैन आ ने कोनो बसक बासे होइन...।

मुदा किछु छी, छी तँ पीपरक गाछ किने, जेकरा पचांगम सेहो कहल जाइ छइ। जेकर जड़िसँ लऽ कऽ छीप धरिक सभ किछु शिवमय अछि...।

लगले फेर विलास बाबूक मन चाणक्य जकाँ चनकलैन। चनैकते भेलैन जे समस्या जँ मनकेँ खा गेल, माने मनक विचारकेँ समस्या पछाड़ि देत तखन मन उठि कऽ चलत केना? समस्या तँ पनचानबे-छियानबे प्रतिशत मनुक्खे निर्मित छी, बाँकी परोछ सत्ताक छी। जेकरा दैवी सेहो कहल जाइ छै...।

फेर भेलैन जे किछु समस्या एहनो अछि जेकर सामना नइ कएल जा सकैए, मुदा अपन आक्रान्त जिनगीकेँ पुनर्निमित तँ कएले जा सकैए। आ तेतबे किए, ओकर अध्ययन करैत ओकर समाधानक हल्लुक-सँ-हल्लुक उपायक बाटो तँ तकले जा सकैए...।

हृदयक साँस जेना विलास बाबूक छुटलैन। छुटिते मन हल्लुक भेलैन, हल्लुक होइते, जाड़मे शीताएल फूल कहियौ आकि पानिमे नहाएल चिड़ै जहिना एक पाँइख आ दोसर पंखुड़ी फड़फड़बए लगैए तहिना विलास बाबूक मन सेहो फड़फड़ेलैन। फड़फड़ाइते चाणक्यक कुश-उखारपर नजैर पड़लैन आकि फुलाइत विलास बाबूक मन फलैक उठलैन– "चाणक्यो बड़ रगड़ी छला।"

दोसर मन आगू बढ़ि सह देलकैन– "तइसँ की कम झगड़ी छला।"

तेसर बाजल–

"रगड़ी-झगड़ी बिना बनने कियो पगड़ी बान्हि लेत।"

चारिम बाजल–

"रगड़ी, झगड़ी पगड़ीक भाँजमे अनेरे पड़ै छह, सभ संगे-संग रहबो करह आ दिवसो गुदस करह।"

बेथाएल विलास बाबूक बेथित मनमे विचड़लैन। विचैड़ते उठलैन– "गाछ-बिरीछक ऑक्सीजन।"

ऑक्सीजन ऐबते मन गुम्हरलैन। गुम्हरलैन ई जे अनेरे कोन महजालक भाँजमे पड़ए चाहै छी, दसे-बीसटा गाछ-बिरीछ थोड़े अछि जे

ओकरा ठिकिया कऽ बुझबै जे फल्लाँ-फल्लाँ बेसी आक्सीजन दइए आ फल्लाँ नीक फल आ फल्लाँ ऑक्सीजनक बदला ऑक्सीजनेकेँ विगाड़ैए तँ फल्लाँ ऑक्सीजन लैये कऽ मेघ दिस पड़ाइए। ओह! अनेरे मनकेँ वौआबै छी...।

विलास बाबूकेँ मोन पड़लैन अपन संकल्प। जखन एक घोंट पानिक आशापर सभ किछु छोड़लौं तखन अनेरे गाछ-बिरीछक ओझरीमे पड़ै छी। जेते फल खाएब आकि ऑक्सीजन लेब, तेतबेक खगता ने अछि। तइले अनेरे दुनियाँक बोन-झाड़मे मनकेँ वौआबै छी...।

मनमे चैन एलैन। चैन ऐबते मन चनयेलैन। चनियाइते चनचनेलैन–

"असगरे केना जीब।"

'असगरे केना जीब' मनमे ऐबते विलास बाबू उठि कऽ ठाढ़ भेला। मुदा ठाढ़ हएब आ चलैत ठाढ़ रहब, दुनू दू भेल। मनमे ऐबते विलास बाबू दोसर संगी संग चलबाक विचार जगलैन। मुदा जखन पैछला जेते संगी-साथी छल, से छोड़ि ने घरसँ निकललौं! जखन संकल्पक संग निकैल गेलौं, तखन घुमि कऽ ओमहर नइ ताकब...।

उत्प्रेरित करैत मन विचार दऽ देलकैन–

"संगियोँ भेटब की असान अछि! एक संगी ओहन होइए जे सून-बिसुन पेब घरोवालीकेँ लऽ भगैए आ एक एहनो तँ होइते अछि जे रणभूमिमे रक्तक धार बनि रहैए...।"

मन मानि गेलैन जे से तँ अछिए। तखन? तखन तँ यएह ने जे संगीक संगपनाक जेते खगता अछि तइले संगी चाही मुदा ओहन उट्ठा संगी जखन भेटत तखने ने समैयक हिसाबसँ संग पुरब...।

मन पत्नीपर गेलैन। दू समाज मिलि संगीक हाथ पकड़ा संग धरा देलैन, मुदा से बनाइन कहाँ भेल? कहियो मनक तृप्ति कहाँ भेल? जँ से

होइत तँ दोसर बिआह करैक जरूरते होइत। कहू जे ई केहेन भेल जे अपने पत्नी आ बाल-बच्चा कपार फोड़ैपर लागल अछि..!

मन थकथका गेलैन। पीपरक गाछक निच्चाँमे ठाढ़ विलास बाबूक पएर आगू बढ़ैले तैयारे ने होइन। असकताएल जकाँ पएरक शक्ति, आगू उठैले तैयारे ने होइन। असकताइत पएरकेँ रपैट कऽ वीणाक वाणी कहलकैन–

“एहने पग, जेकरा डण्डिये ने! बिना पगडण्डिये बाट बनै छै आ चलनिहार चलैए?”

विलास बाबूक दोसर मन कनखरलैन। कनखैरते उठलैन–

“जहिना भक्तक पाछू भगवान वेहाल तहिना ने भगवानक पाछू भक्तो वेहाल रहैए। जे धरतीकेँ अपन बुझि छाती लगौत तेकरे ने धरतियो अपन बुझि छातीक दूध पिऔत।”

मनमे नव उत्साहक संग नव जिनगीक उत्प्रेरित विचार सेहो जगलैन। बिनु संगीक संग भेने जीवियो तँ नहियेँ सकै छी। ओना संगियोँ केतेको रूपमे संग पुड़ैए। गुरु बिनु चेला आ चेला बिनु गुरु जहिना असम्भव अछि तहिना दिनक संगी राति आ रातिक संगी दिन नइ अछि, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। तरखन दूध-पानि बेराएब जटिल तँ अछिए। बिनु पानियेँ दूध बनबे केना करत, जे ओइमे पानि फेटि पाइ बना लेब...।

विलास बाबूक ठाढ़ मन ठेहिया गेलैन। संगी बिनु बनत नइ आ संगी सभकेँ छोड़ैक संकल्प मनमे बान्हि लेलौं..! फेर भेलैन जे जइ जिनगीक संगी ओ सभ छला, ओ जिनगी जखन बदलैए चाहै छी, तखन तँ नीक हएत जे ओहो सभ अपन जिनगी बदैल फेर संगी भऽ जाए। मुदा मनक ऐना झलकलैन। झलकलैन ई जे अपन केहेन जिनगी ठाढ़ भेल से तँ मनेमे अछि, आ संगी बदैल संग औता से सोचि रहल छी। एकरे ने

लोक बचपना कहै छै...।

लगले दोसर मन रपटैत कहलकैन–

“यएह छी बतहपनी। दिन-राति बड़बड़ाइत रहब आ करनी चलोले ने हएत, तखन केहेन घर आ घरनी पाएब, से तँ धुनियाँक धुनैबेर ने बुझब।”

विलास बाबूक मन ओहन धरतीपर पहुँच गेलैन जेतए कोनो बाटे ने सुझैन। ठाढ़सँ बैस गेला। बैसते चित्त चेतबैत कहलकैन–

“संगी दू रंगक होइए, एकटा होइए भेटुआ आ दोसर होइए गढ़ुआ। गढ़ुआक माने भेल जे संग-संग जीवन गढ़ैए। आ भेटुआ ओ भेल जे केतौ जाइ छी, रस्तामे जे भेट कऽ संग भऽ गेला। मुदा दुनूक फलाफल दू रंगक अछि। भेटुआ जँ हेरा गेल तँ ओते मन नइ दुखाइए जेते गढ़ुआकेँ हेरेने दुखाइए।”

गुम-सुम विलास बाबू पीपरक गाछक निच्चाँमे बैसल अपन काल्हि धरिक जिनगीकेँ सौरखी-करहरक गाछ जकाँ पानिक ऊपरक पातकेँ पकैड़ नाल पकड़ैत जड़िमे पहुँच हँथोरि फड़ कियो देखैए, तहिना हौंथरैत अपन जिनगीकेँ विलासो बाबू देखलैन। देखलैन ई जे जखन कौलेजमे पढ़ैत रही, सड़कपर चलैत कौलेजेक छात्रा संग छेड़खानी भेल, जेकरा विरोधमे जे छात्र आन्दोलन भेल, जइमे जेल गेल रही। जेल गेनिहार तँ दर्जनो संगी भेला, जइमे विकासक संग जे अपनत्व बनल, ओहन दोसरक संग नइ बनल। मुदा कौलेजक पछाइत जे दुनू गोरे अपन दुख-धंधामे लगलौं से बीचक जिनगीकेँ खाली बना देलक। तँए नीक हएत जे पहिने विकास ऐठाम जाइ...।

विकास कुमार आ विलास कुमार दुनू सी.एम. कौलेज दरभंगामे आइ.ए.सँ लऽ कऽ एम.ए. तकक संगी।

उन्नैस सए सरसैठक राजनीतिक हवामे दुनूक बीच उभार एलैन।

ओना दुनू राजनीति शास्त्रसँ एम.ए. केने रहैथ। मुदा एम.ए. आकि बी.ए.मे जँ एक दिस निचला श्रेणीक अपेक्षा विषय-वस्तु कमैए तँ दोसर दिस ईहो तँ होइते अछि जे समटले विषयमे छिड़ियाएलो विषय रहिते अछि। ओइ छिड़ियाएल विषयमे विलास कुमारक जे विषय रहैन तइसँ भिन्न विकास कुमारक रहैन। मुदा दुनू गोरेक विषयमे किछु एहेन विषय रहैन जे मन-लग्गु रहैन आ किछु एहेन रहैन जे मन-घिच्चु रहैन आ किछु एहनो रहैन जे मन-छिप्पू सेहो रहैन। तहीमे दुनूक मन दू दिस भऽ गेलैन।

जे विषय विलास कुमारक मन-लग्गू से विकास कुमारक मन-छिप्पू आ जे विषय विलास कुमारक मन-छिप्पू ओ विकास कुमारक मन-लग्गू। तइसँ किलासमे दुनूक पहचान तँ बनल मुदा दू शिक्षकक बीच। जइसँ एक-दोसरक संगियोँ-साथी बिलैग गेल। ओना, किछु छात्र संगी विकास कुमारकेँ चिन्तू भाय कहैन। चिन्तू भाय ऐ दुआरे कहैन जे किलासमे केता दिन प्रोफेसर पढ़बैक क्रममे बजै छला जे जे चिन्तन (Though) सन कठिन विषयक पकड़ विकासक अछि, ओ अद्भुत अछि। छात्रक बीच परीक्षण, ट्यूटोरियल क्लासमे सभकेँ सभ देखबे करै छला।

ओना, बिहारेटा नइ, सौंसे देशमे शासनक विरूद्ध हवा उठल। मुदा ओ हवा कोनो एकरंगक नइ रहइ। गजपट हवा, जइसँ सत्ता पार्टीकेँ तँ धक्का लगबै कएल, मुदा धक्का देनिहार बीचक पार्टीमे वैचारिक समरसता नइ। ओना सभ राज्यक अपन-अपन समस्यो रहै आ विचारो रहै, मुदा रहै तँ सभठाम सत्ताक विरोधेमे।

बिहारी हवामे विलासो आ विकासो कुमारक उभार आएल। सरसैठक चुनावमे सत्ता बदलल।

1972 इस्वीक चुनावमे विलास कुमार विधान सभा पहुँच गेला जखन कि विकास कुमार परिवारसँ लऽ कऽ समाजक बीच जे कुसंस्कारी-बेवहारक जाल पसरल अछि, ओइ जालमे ओझरा गेला।

जइसँ ई भेल जे परिवारक संग-संग गामे नीक-अधलाक बीच ओझरा गेल। जेकरा विकास कुमार शुभ संकेत बुझि अपनाकेँ ओइ ओझरीकेँ सोझरबैमे लगि गेला। मुदा अखनो धरि वएह निष्ठा आ समर्पण छैन, जे शुरूक जिनगीमे छेलैन। मुदा हवा-विहाड़िमे उड़ि-उड़ि विलास कुमार सत्तामे सटले रहला, भलेँ दर्जनो बेर किए ने पार्टी बदललैन...।

पीपरक गाछतर बैसल विलास बाबूक मनमे उठलैन– संगी तँ सस्तामे अपने भेटबो करैए आ छुटबो करैए मुदा केकरो ऐठाम नइ जाएब, निर्णय करब अनुचित अछि। जँ केकरो ऐठाम नइ जाएब तखन संगी के हएत, बिनु संगीक चलि केना सकै छी। जखन चलिये ने सकै छी तखन अथबल बनि जीविये कऽ की करब। तँए केतौ-ने-केतौ तँ जिनगीकेँ अड़ियाबै पड़त, बिनु अड़ियेने चलब शुरू केतएसँ करब। तहूमे दुनियाँक कतियाएल बीचमे ठाढ़ छी...।

मन ओझरा गेलैन। ओझराइते नजैरपर एलैन अपन जिनगी। अपन जिनगी नजैरमे ऐबते जेना मनमे नव वस्तु भेटलैन। भेटते कौलेजक गढ़ुआ संगी विकास कुमारपर नजैर गेलैन। जाइते मोन पड़लैन जे दुनू गोरे जहलमे विचारने रही जे संगी बनि दुनू गोरे संग-संग जिनगी बिताएब। मुदा ओ तँ छूटि गेला..!

लगलेमे विलास बाबूक मन आगू बढ़ि जहल जाइक कारणपर गेलैन। छात्राक ऊपर भेल छेड़खानीक विरोधमे दुनू संगी बनि जहल गेल रही। नारी अत्याचारक विरोधमे।

मुदा अपने जे अछैते पत्नियेँ बिआह कऽ लेलौं, की ई नारी अत्याचार नइ भेल? अपनो परिवार अछि, जइमे पत्नी आ बाल-बच्चा सभ अछि तखन..?

अनुचित भेल। मुदा उपाय?

लगले विलास बाबूक मन अनुचितसँ आगाँ बढ़ि उचितपर चलि गेलैन। आइ जेकरा मन अनुचित मानि रहल अछि ओ ओइ दिन किए ने बुझलौं। एम.ए. पास तँ तहू दिनमे रही। चूक केतए भेल..?

बोनमे वौआइत बटोही जकाँ विलास बाबूक मन अपन जिनगीक उचित-अनुचित रस्ताकेँ पकैड़ जखैन पैछला जिनगीमे किछु डेग आगू बढ़ला, तखन देखलैन जे समैयक हवाक धारमे भँसिया गेलौं। भँसिया ई गेलौं जे अपनासँ पछुआएल लोकक जिनगीकेँ अपना छातीमे नइ सटाएब तखन अपन प्रगतिशीलते की रहल। मुदा के केकरा छाती लगाबए ईहो तँ एकटा जटिल प्रश्न अछिए। जँ अपना पत्नी, बाल-बच्चा नइ रहैत तखन जँ पछुआएलकेँ उठा छाती लगैबतौं तखन अपनो मन कहैत आ आनो कहैत जे एकटा गिरल (खसल) परिवारकेँ उठैक अवसर भेटल। मुदा से कहाँ भेल। तखन की भेल? मुदा, अखनो अपन मन ई कहाँ चाहैए जे अनुचित भेल। किछु लोक तँ नीक कहिते छैथ...।

थकिआइत विलास बाबूक मन थथमारि अपन जिनगीक विचार करए लगला। भकुआएल लोककेँ जहिना भक्क खुजिते करियाएल दुनियाँ फरिच देखैमे आबए लगै छै तहिना भेलैन। फरिच होइते मन कहलकैन–

“हर मनुक्खकेँ जिनगी चाही, तैबीच खाँच-खरोंच किछु-ने-किछु अधिकांशकेँ ऐछे, जइसँ अतीतक पतीतमे पहुँच गेल अछि, जँ ओकरा भैरसक पवित्रक ढंग धरौल जाए तँ निसचित कल्याण हेबे करत।”

मुहसँ निकैलते विलास बाबू नमहर साँस छोड़लैन। साँस छुटिते मनमे एलैन जे सही-गलतीक बीचक रस्तासँ जिनगी चलैए। जेते सही तागैतवर अछि तइसँ कनियेँ कम माने लंकाक उनचास हाथ जकाँ गलतियो तँ तागैतवर अछि, तहूमे हवाक जे झोंक उठै छै, ओ मनुक्खक कोन बात जे देशक-देशकेँ कखनो सही दिशामे तँ कखनो विपरीत दिशामे तेना ठेल दइए जेकरा भरपाइ करैमे पीढ़ियो समाप्त भऽ जाइए। तखन?

अपन कृत्य तँ आइयो जीवित अछि जे ओहन छेड़खानी आजुक कौलेज-जिनगीमे नइ अछि। विकास भाय हमर बाल संगी छैथ, जँ हुनका ओतए जाएब तँ जरूर ओ छाती लगा एक घोंट पानिक आग्रह करबे करता...।

मनमे ऐबते विलास बाबू उतकण्ठित होइत उठि कऽ ठाढ़ भेला। ठाढ़ होइते बुझि पड़लैन जे भरिसक जिनगीक पहिल शुभ दिन छी...।



शब्द संख्या : 2516, तिथि : 10 जनवरी 2016

एते दिन अपना-ले आब अनका-ले

सात सालक पछाइत परदेशसँ गाम एलौं। सेहो ओहिना नइ एलौं, अमेरिकामे एकटा संगी रहै छैथ, वएह अपन बेटाक उपनैन करता, ओही निमंत्रणमे एलौं। ओना बेटाक जन्म अमेरिकेमे भेलैन, जइसँ ओ ओतुका जन्मगत नागरिक भऽ गेल, मुदा बाप-दादाक देल सुकृत्यो आ विचारो सोल्होअना मरि गेल सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए, ओहो तँ जीवित अछिए। ओना मनमे एहेन बात उठि गेल रहए जे जैठाम बच्चाक जन्म हुअए, नागरिक जीवनक अधिकार भेट जाए तैठामक जँ संस्कार-संस्कृति भेटत तँ ओ अनुकूलता पेब अधिक पुष्पित-फलित हएत। मुदा अनेरे मनकेँ खींच-तानसँ परहेज केलौं आ बीस बर्खक विद्यालयक संगीक बेटाक उपनैनमे गाम आबि गेलौं...।

ओना, गाम अबैक दोसरो कारण भेल जे मनमे उठि गेल– जखन गाममे कोनो लज्जतिये ने अछि तखन लाज केतए जनमत आ लज्जैत केतए औत। तँए परदेशसँ दूरदेशपर नजैर ई चलि गेल जे जखन लज्जैत विहीन गाम छोड़ि देलौं, तखैन जेतए लज्जैतगर देखबै तेतए ने रहब। तँए जँ संगीक जोगारसँ अमेरिकेमे गोड़ा बैस जाए तँ किए ने अमेरिके चलि जाएब। ओना, संगी ओइठामक शिक्षा-विभागमे पैघ अधिकारीक पदपर छैथ।

...हँ तँ कहै छेलौं जे गाममे लज्जतिये ने अछि तखन लाज केतए जनमत आ लाजबन्त बनि लजबन्ती बनब तँ ओहने ने हएत जे 'सुती

खढ़पर आ सपना देखी नअ लाखक।' जहिना गामक अधिकांश मनुक्खो, मालो-जाल आ गाछो-बिरीछक जिनगी गामक माटिपर ठाढ़ अछि, तहिना कि ओकर रक्छो भऽ रहल अछि जे ओ ओहन तगतगर भऽ जाए जइसँ लहलहाइत रंग ओकरा ऊपर सदिकाल नचैत रहइ, से कहाँ अछि..? मरि गेल माटि आ मरि गेल अछि माटिक उपज! खेतीए-पथारी आकि किसाने-बोनिहारक की लज्जैत अछि ओ केकरा आँखिसँ हटल अछि। आ खेतीए-पथारी किए, आनो-आन साधनक ओहन गति की नइ अछि। जे भूमि समुद्र-पहाड़ सभसँ सुरक्षित अछि ओ भूमि मरनासन्न भऽ जाए, तँ की ओ मरणदाता नइ बनत..? खाएर जे से...।

परसू उपनैनो समाप्त भेल आ संगियोँ चलि गेला, खाली घरक पछुआरमे मेघडम्बर टाँगल रहि गेल छैन। भरि दिन काल्हि सुतबे केलौं। घर-दुआर तँ ढनमनाइये गेल छल। ढनमनेबो केना ने करैत, एक तँ खढ़-भीतक घर, जे बाढ़ियो देखलक आ झाँट-पानि सेहो खेलक मुदा एते तँ दूर दृष्ट भइये गेल अछि ने जे पोलीथिनेक घर, पोलीथिनेक ओछाइन-बिछाइन...। खाली झोरामे रखि लिअ आ पिकनीक मनबए गाम चलि आउ। मोबाइलमे दुनियाँक सभ फिल्मो आ गीतो ऐछे जे देखैत-सुनैत सप्ताह भरि गाममे रहि जाउ, फेर बोरिया-विस्तर समेट झोरामे लऽ चलि आउ...।

तेसर दिन अपन खेत-पथारपर नजैर गेल। छह बीघा खेत छल, पुर्वजक अर्जल, हमरासँ पूब धरिक पीढ़ीक वएह जीविकाक आधार रहल। कोसी नहैर गाम होइत बनल। तीन बीघा जोतसीम जमीन नहरक पेटमे पड़ि गेने चलि गेल। एक बीघा गाछी-कलम ऐछे, दू बीघा जे जोतसीम बँचल ओ मनकेँ मिसियो भरि नइ टुटए देलक। मनमे यहए नचैत रहल जे कोसी नहैरसँ सालो भरि खेतकेँ पानि भेटतै, सालो भरि खेतमे जजात लहलहाइत रहत तँ दू बीघा छह बीघाक मुकाबला करत। तैसंग ईहो जे सालो भरिक कारोबार रहने, परिवारमे कहियो बेरोजगारी

आकि भुखमरी नइ औत। मुदा भेल ई जे नहरमे पानि नइ आएल, नहर चालूए ने भेल। हमरा सन-सन केतेको किसानक मूल पूँजी हाथसँ कटि गेल..!

ओना, हमर गाम नमहर अछि, खेतक रकबो बेसी अछि। सभ जातिक गाम छी। ओना बुढ़-पुरान जे छैथ हुनको सबहक एकमत नइ छैन, कियो 'बरह-वरना' गाम कहै छथिन तँ कियो 'छतीस-वरना', मुदा गाममे तइसँ बेसी जातिक बास ऐछे...। उत्तरबरिया आ दछिनबरिया बाध मध्यम ऊँचाइ जमीनक अछि, तँए नीक उपजाउ अछि आ पछबरिया बाध नीचरस अछि, जइमे बेसी बरखा भेने आकि बाढ़ि एने केचली-केशौर उपजैए। गामक पुवरिया भाग ऊँच अछि, जइसँ सौंसे बाध गाछीए-कलम आ बाँस अछि। सबेरे करीब आठ बजे भिनसरमे जलखै खा बाधक खेत देखैक विचारसँ विदा भेलौं। दछिनबरिया आ पछबरिया बाधमे अपन खेत नइ रहने ओमहर नजरिये ने गेल। बँचल पुबरिया बाधक गाछी-कलम आ उत्तरबरिया बाधक जोतसीम जमीन। जोतसीम जमीन बँटेदारक हाथ चलि गेल अछि आ गाछी-कलम बगवारक हाथ। तँए मनमे उठि गेल जे चीज भलैं अपने किए ने छी, मुदा करै-धड़ैले तँ चलि गेल अछि दोसरेक हाथ, तँए हुनका संग करब बेसी नीक हएत। संगमे रहता तखन ने नीक देखि नीक कहबैन आ अधला देखि अधला कहबैन...।

गाछीक बगवार दियादीए परिवारक छैथ। वगवारिक हिस्सेदारीक रूपमे ने देने छिऐन आ ने ओहो बुझै छैथ। ओना, जेठ भैयारी पितियौत रहितो गरीब छैथ, मुदा ओहो गाछीक उपजाक हिस्सा हिस्सेदारक रूपमे नहियेँ दइ छैथ, मुदा समांग जकाँ गाछीक रक्छा तँ करिते छैथ...।

विदा होइते, भातीजक नाओं लैत बजलौं– "राधेश्याम छह हौ?"

राधेश्याम आँगनमे नइ रहए, सुखी भाय दरबज्जेपर सँ बजला– "गौरी, एम्हरे आबह। राधेश्याम झंझारपुर गेल अछि। अपने अखन तेहेन

काज करै छी जे हाथ-पएर दुनू बन्हाएल अछि।"

अखन धरि दुनू गोरेक गप-सप्प परोछे-परोछी होइ छल मुदा हाथ-पएर काजमे बान्हल छैन, तँए उठिये ने हेतैन, एहेन कोन काज छी से मनमे देखैक उत्कण्ठा जगल। जहिना शिवराति ऐबते सिंहेश्वर बाबाक दर्शनक डोरी मनमे लगैए तहिना गप-सप्पक डोरि पकड़ने आगू बढ़ैत बजलौं– "भैया, गामक की हाल-चाल अछि?"

'हाल-चाल' सुनिते हाथमे खड़ौआ जौड़क खोंचा नेने पएरक औंठा गतानल–माने जौड़क पैछला भाग औंठामे तीन भत्ता बान्हल–दुनू हाथ उठा जे कपार ठोकए लगला जइसँ साबेक जड़ि आँखियेमे गड़ि गेलैन। मुदा दुनू हाथक खोंचा निच्चाँमे रखि दुनू हाथे आँखि मिड़ैत सुखी भाय बजला–

"जान बँचल। जाने की बँचत बौआ, सर्वनाश भऽ गेल!"

'सर्वनाश' सुनि मन आरो विचलित भऽ गेल। की सर्वनाश भऽ गेलैन? ताबे सोझहा-सोझही भऽ गेलौं। सुखी भैयाक उतरल चेहराक रंग-रूप देखि बुझि पड़ल जेना केते मोन दुखक भार दबने छैन, केते नइ..!

हमरा देखिते बजला–

"गौरी, गामक गाछी-कलम उपैट गेल। तोरो जानकारी नइ देलियह। अनेरे किए गामक दुखसँ तोरो मनकेँ दुखैबतिअ।"

कहि सुखी भाय चुप भऽ गेला। एक संग अनेको प्रश्न उठि कऽ मनमे ठाढ़ भऽ गेल। एहेन बात सुखी भाय किए बजला जे अपन गामक दुखसँ तोरो दुखैबतिअ। की हमर गाम नइ छी, जँ छी तँ दुखमे केते भागीदारी अछि, सेहो तँ मनमे ठहैकते अछि...।

मनक सभ बेथाकेँ एक्केबेर विचारक कलमसँ खरड़ैत कहलयैन–

"भैया, अनेरे कोन माया-जालक भभटपनमे पड़ल छी, दुनियाँमे केतौ किछु छै, जहिना सभ आएल तहिना कियो नाङैर नेने तँ कियो

सुड़ाइत नाङैर नेने जेबे करत। तइले अनेरे किए चिन्ता करै छी।"

हमर बात सुखी भैयाकेँ नीक लगलैन, बजला– "बेस कहलह। मुदा जखन तूँ गामसँ अपन गाछी-कलम सुमझा गेल छेलह, तखन पहिने वएह ने कहबह। मुदा तेहेन मनुक्खो आ मनुक्खगमो सभ भऽ गेल अछि जे पुस-पुसतानिक कनारि चुकबैपर लागल अछि।"

सुखी भाय की बाजए चाहै छला से बुझिये ने पेब रहल छैलौं। पुछलयैन– "से की, भैया?"

बजला– "अपना गामक सभ गाछी-कलम पुबरिया बाधमे अछि। तइसँ सटले पुबरिया गामक पछबरिया सीमा छइ। सीमाक जे बान्ह अछि ओ सड़कनुमा चाकर अछि। पुबरिया गामबला अपन सीमाकेँ ऊँचगर सड़क बना देलक। गामक बहावक पानियेँ रूकि गेल। चारू-भागसँ घेराएल बाध बाढ़िक पानिसँ घेरा गेल। चौरीए जकाँ चारि मास पानि लागल रहल, अदहासँ बेसी गाछी-कलम सुखि गेल।"

मुहसँ खसि पड़ल–

"अपनक की दशा अछि।"

जहिना जुआन बेटा, धेनुगर गाए, पकाएल चास आकि फलाएल गाछ नाश भेने लोककेँ जेते दुख होइ छै, तइसँ बेसी दुख सुखी भाइक चेहरापर झलकैत रहैन। रोगाएल-पीड़ाएल सुखी भाइक छातीक हार जहिना झक-झक करैत रहैन तहिना मनक पीड़ाक हार सेहो झकझकाइत रहैन। बजला–

"बौआ, अपन सोलहन्नी सुइख गेल। ओहिना मुइल मुरदा जकाँ गाछीमे गाछ ठाढ़ छह!"

सुखी भाइक समाचार सुनि मन कलैप गेल। मुदा उपए..?

कहलयैन– "भैया, जखन गाम आएल छी, तखन कनी गामक खेत-पथार सेहो देखि लेब।"

सुखी भाय चुपे रहला, मनमे भेल जे आब हुनका कहबे की करबैन। बिना किछु बजने-भुकने उत्तरबरिया बाध दिस विदा भेलौं। कनियेँ जखन आगू बढ़लौं कि पाछूसँ सुखी भैया बजला–

“गौरी, घुमैकाल जँ मन हुअ तँ गाछियो देखने अबिहह।”

सुखी भैयाक इमानदारी मनमे ठहकल। ठहकल ई जे भैया अपन सभ जानकारी गाछीक दैत कहलैन जे देखैक मन हुअ तँ ओहो देखने अबिहह। यहए ने भेल उच्च कोटिक इमानदारी जे अपन पसरल काजकेँ अपना नजरिये सुमझा देलैन। केकरो अनका घरक जुति-भाँति फुरबैमे जेते मन लगै छै तेते जँ ओकरा पुड़बैमे लगैत तँ दुनियाँक रंग-रूप बदलैत बढ़ैत...।

सुखी भैयाक विचारसँ जेना अपन विचार बदैल गेल। बदैल ई गेल जे जइ गाममे खेतीक संग खेतीक अभिकरणो मरनासन्न भऽ गेल अछि, जिनगी जीबैक कोनो लज्जैत नइ अछि, तैठाम जँ सुखी भैया सन लोक अपन माटि-पानि, कुटुम-परिवार, सर-समाजक बीच साधक बनि अपन-अपन मातृभूमिक संग पितृभूमिक साधनामे लगल छैथ, तेतए तँ वएह असमसानी ने शिव कहौता..!

मनमे ऐबते जेना सुखी भाय नाचि उठला। चलैत-चलैत कहलयैन–

“भैया, आइ भरि गाममे छी, काल्हि भोरे चलि जाएब। तखन तँ अहीं सबहक ने सभ किछ रहत। जे गाममे रहत सएह ने गामवासी भेला, हम सब तँ ओहन भेलौं जे गामवाली गाम लेती दाइ जेती छुछे।”

ओना अपना मने सुखी भायकेँ सुख-सुखबैक रहैन मुदा से भेल नइ। हुनका हमर बात नीक नइ लगलैन। बजला–

“गौरी..!”

‘गौरी’ कहि सुखी भाय चुप भऽ गेला। कहलैन किछु ने। मनमे

रंग-रंगक बात ठहकल। मुदा सभ बातकेँ तहियबए लगलौं। 'गौरी' कहि चुप भऽ गेला, जे बात कोनो भाँजेपर ने चढ़ल..!

मनमे उठल– किए गौरी कहि चुप भऽ गेला? कहीं एहेन तँ ने मनमे उठल छैन जे कोनो गाम तखने उठत जखन खुट्टा रूपमे गौंआँ ठाढ़ हएत। तैठाम जँ गामे छोड़ि गौंआँ चलि जाएत तखन ओइ गामक गति की हएत..?

मुदा भरमे-सरम अपन मनो आ मनक विचारोकेँ समेट कहलयैन–

"भाय सहाएब, साँझू पहर निचेनसँ दुनू भाँइ गप-सप्प करब। अखैन कनी बाध घुमने अबै छी।"

कहि आगू बढ़ि गेलौं। उत्तरबरिया बाध गामक सभसँ पैघ बाध अछि। तेकर कारण ईहो अछि जे दोसर-तेसर गामो हटल छइ। बाधमे प्रवेश करिते मनमे भेल जे बाधक तँ रखबार होइए। जे बाधक देख-भाल करैए। तँए अनका सीमामे ने आब आबि गेल छी। नीक हएत जे पहिने बाधक रखबार लग जाइ। मुदा नमहर बाध रहने आठ-नअटा रखबार अछि। आठो-नबो अपन-अपन हिस्सामे रहैले खोपड़ी बनौने अछि। सभकेँ अपन अपन क्षेत्रक हिसाबे खेत बाँटल छै, जेकरा ओगरबो करैए आ ओगरवाहिक रखवारि सेहो लइए। मुदा अपन रखबार आ अपन खेत चिन्हैमे कोनो भांगठ नहियेँ भेल। किएक तँ जाबे गाममे रही ताबे खेतीए करैत रही, तँए चिनहरबे खेत आ चिनहरबे रखबार...।

अपन खेतसँ कनियेँ हटि रखबारक खोपड़ी, कट्ठा डेढ़ेक एकटा ऊँचगर परतीपर अछि। चारि-पाँचटा अशोभक गाछ ओइ परतीमे रखबार लगौने अछि। जे सौंसे परतीकेँ छहरौने रहैए। निरधन रखबार ओही गाछक निच्चाँमे बैस बाँसक कैमचीकेँ टौहकी बनबैत रहए। आगूमे सौंस बाँस, बाँसक टुकड़ियो आ चीरलो-फाड़ल रहबे करइ। आ लगमे एकटा धरगर पगहरिया सेहो रहइ। देखिते निरधन बाजल– "भाय

सहाएब, अहाँ सभ ते गाम बिसरिये गेलिऐ। पौरुका साल हमहूँ कण्ठी बान्हि वैष्णव भऽ गेलौं।"

माथमे चानन कएल सेहो देखलिऐ। ओना, निरधनक घर अपना घरसँ कनियेँ हटल, मुदा टोल एके छी तँए बच्चेसँ चिन्हबे करै छिऐ। आइसँ तीस बर्ख पहिने जखन गामक नव-युवक अपन गामक उत्थान-ले एकत्रित भेला तखन निरधनकेँ हमहीं कहने रहिऐ– "निरधन, गामक गरीब जाबे जागत नइ ताबे ओकर गरीबी नइ हटतै, तोरा सन-सन लोककेँ एकजुट भऽ जेबा चाही।"

मानि गेल निरधन हमर बात। राजी-खुशीसँ कहने रहए–

"भैया, हमरा तँ कोनो अबगैत नइ अछि, तखन तोहीं जेना-जेना सिखेबह तेना-तेना करैत सीखब।"

निरधनक बात सुनि मन भरि गेल रहए। भरि ई गेल जे जहिना भक्त अपन समरपित भावसँ भगवानमे लीन होइते ने भगवानो नोकर जकाँ सोर पाड़िते खेनाइ-पीनाइ छोड़ि दौगल आबि रक्छा करै छैथ। तहिना ने निरधन सन दीनानाथ हमरो भेटल...। कहलिऐ–

"निरधन, तूँ हमरा सबहक नेता भेलह, आब तोरा नेतागिरी करए पड़तह।"

कहलक– "हमरा केकरो डर नै होइए। एकटा दिनकरे दिनानाथ-टाक डर होइए।"

मनमे उठल– मर्द के? जेकरामे मर्दगानी छै, आ जेकरामे मर्दागानीक बास हेतइ सएह ने जीनगानीक गीत गौत...।

कहलिऐ– "परसू, जुलुस निकलत तइमे चलैक छह?"

निरधन कहलक– "एवमस्त।"

जुलुस जखन झंझारपुर थाना लग गेल तखन निरधन अपन

एरेस्टिंग सभसँ पहिने दइले आगू बढ़ल रहए...।

मनमे ठहैक गेल जे निरधन ठीके कहलक ने जे भैया गाम तँ बिसरिये ने गेलिऐ। मुदा निरधन सन इमानदार, कर्मनिष्ट आ सज्जन लोक लग मुहोँ छिपाएब उचित नहि। कहलिऐ–

“निरधन भाय, तोरासँ कोनो बात छिपल छह, आकि जाबे संग-संग गाममे रहलौं ताबे कहियो किछु छिपौलियह?”

धियानसँ जेना निरधन हमर बात सुनलक तहिना मुड़ी डोलबैत बिच्चेमे बाजल– “भैया, ओहूँ कहियो निरधनमा मुहेँ कोनो अबलट बात सुनलौं हेन?”

निरधनक बात सुनि मनमे सब्रक गाछ जनमए लगल। जनैमते मन सिहकल, सिहैकते मुहसँ निकलल–

“निरधन भाय, यएह ने कोसी नहैर छी जेकरा बनबैले थानापर गेल रहह।”

जहिना जिनगीक सुकृत्तिक स्मृतिमे सभ हेरा आह्लादित होइए तहिना अपन कएल कृत्यमे निरधन विह्वल भऽ गेल। बाजल–

“भैया, तोहर तँ सोना कटोरा सन खेत चलि गेलह, तेकर बिपैत परलह तँए गामसँ गेलह, मुदा हम तँ गामक फकीर छी, हमरो बाधक तेते खेत नोकसान भेल जे सालक तीन मासक बुतातक घाटा लगि गेल।”

पोखरिक पानि जकाँ समगम होइत निरधनकेँ देखि मनमे भेल जे जखन भरिये दिन गाममे छी, तखन किए ने एतै आरो समय हँसी-खुशीसँ बिताबी। पचास-पचपनक बीच उमेरक निरधन। शरीरसँ अंग विद्रूप भेने अलबटाह जकाँ चालि-ढालि। जहिना चलैमे झखाइत तहिना बोलियो सुपुट नइ निकलैत। नमहर मुँहक आकारमे नमहर-नमहर दाँत, सदिकाल मुँह बबले रहैत। मुदा ओहन इमानदारीक जीवन-यापन करैबला निरधन बाधक रखवारिक संग-संग बाँसक छिट्टा, पथिया, टौहकी, पहटा सेहो

बनबैत। गामेमे बाँसो भेट जाइ आ वस्तुक विकरियो भऽ जाइ। तँए ने जिनगीमे कहियो छल-प्रपंच एलै आ ने बोलीए-चालीमे प्रवेश केलकै।

निरधनक भीतर-बाहर देखि मन खुशीसँ नाचि उठल...।

बजलौं–

“निरधन, माथमे चाननो देखै छिअ?”

ओना, हमर इशारा रहए जे काजसँ टौहकी बनबैए आ माथमे उजरा चानन सेहो जमगरसँ लगौने अछि। मुदा चाननक नाओं सुनिते जेना निरधनक चानि चनैक गेलै तहिना चनचनाएल–

“भैया, पैछला साल कण्ठी लऽ गुरु मंत्र लऽ लेलौं।”

ओना, निरधनक काज आ रूप देखि अकास-पतालक अन्तर बुझि पड़ए। माने काजे टौहकी बनबैए आ बोलीए वैष्णव अछि। मुदा तेकरा निरधन मस्तीमे मुस्कुराइत कऽ रहल अछि, से छगुन्ता लगए। ईहो छगुन्ता लगए जे माछसँ परहेज केने अछि जे ने माछ छूब आ ने खाएब। मुदा टौहकी तँ ओकरे मारैले ने बनबैए, से किए ने काजो छोड़ैए...।

मुदा फेर हुअए जे नेतासँ निरधन बाबाजी बनल अछि, जँ मिलानोसँ पुछबै आ ओ फटहा बबाजी जकाँ कहीं उनटा फटकन लगा दिअए, तखन तँ अनेरे जेहो एकरत्ती गाममे सिनेह पेलौं सेहो धारक पानिक बेगमे अपने धुआ जाएत! तइसँ नीक जे किए ने निरधनक बात निरधनेक मुहेँ सुनी। मुदा मनमे

ईहो हुअए जे आन परदेशिया जखन गाम अबैए तखन अपन मालिक-मलिकानिक संग देश-कोसक तेते भूमिका बान्हि बजैए जेना गामक समाजो शहरी भऽ गेल हुअए..! मुदा की कैरतौं! मनक नागकेँ जमुना धारमे नाथि जमुनिया रंग चढ़बैत कहलिऐ–

“निरधन, केते दिन वैष्णव भेना भेलह?”

ओना अपन मन कहैत रहए जे निरधन तँ दूधा वैष्णव अछि, माने जे जिनगीमे ने कहियो झूठ बाजल आ ने छल-प्रपंच केलक, सभ दिन अपन जीवन-यापन अपन श्रम-शक्तिक बले केलक, ओकरा की कहल जाए। रहल बात किछु खाइ-पीबैक परहेज करब, तइले कण्ठीक कोन प्रयोजन छइ। समाजक अस्सी-सँ-नबे प्रतिशत ओहन परिवार अछि जेकरा माछ-मौस सन वस्तु कीनैक तागत नै छै, ओ परहेजे की करत। मुदा तैयो निरधनक मन टोबैत रही जे एहेन तँ ने मनमे छै जे जहिना मछुआरा काज करैबला गाए-महींस पोसब दिस नइ तकैए तहिना ने गाए-महींस पोसनिहार सेहो मछुआरा दिस नइ तकैए। मुदा जेना अपन तीस बरख पहिलुका जिनगीक स्मृतिमे निरधन वौआइत रहए...।

बाजल–

“भाय सहाएब, जहिना अपना सभ कण्ठ फाड़ि-फाड़ि अपन बेथा-कथा गाम-गामक लोककेँ कहैत सरकारोकेँ कहै छेलिऐ, मुदा सुननिहार केहेन बहीर रहए से मन छह आकि बिसैर गेलहक?”

निरधनक बात कोनो भाँजेपर ने चढ़ल। जे बात भाँजेपर ने चढ़ल तइमे की बुझलौं, की नइ बुझलौं तइ झमेलसँ अपनाकेँ कात करैत पुछलिऐ–

“निरधन, मन रमै छह किने?”

‘मन रमै छह किने’ सुनि निरधन रमता जोगी जकाँ बाजल–

“भाय सहाएब, तीन साल गुरुमंत्र नेना भेल हेन, तइमे केतेको अमैयो भनडारा पुरलौं आ केतेको कतिको, एक-पर-एक दाता दुनियाँमे भरल अछि।”

मनक गदगरीसँ बुझि पड़ल जे भरिसक निरधनकेँ मनलग्गू काजसँ भेँट भऽ गेलइ। कहलिऐ–

“अपनो भनडारा करै छह कि खाली अनके कैतका खीर आ

अमरस्साक मालदह पबै छहक।”

हमर बात जेना निरधनक मनमे मोहैन चला देने होइ तहिना मोहित होइत बाजल– “भाय सहाएब, आसीन मासमे जखन बरखा तोड़ाइए, धानमे जीह पड़ै छै तहियेसँ बाधमे आबि बसै छी।”

निरधनक बात सुनि मनमे भेल जे भरिसक साधु सबहक संग जेना आत्म चेतना जगि गेलइ, तँए अपन बात अपने मुहेँ निरधन व्यान नै करए चाहैए। ओना अपनो देखल अछि जे आसीन-कातिकसँ उत्तरबरिया बाधक ओगरवाहि निरधन करिते आबि रहल अछि। मुदा एना भऽ कऽ नइ बुझै छेलौं...।

पुछलिऐ– “एना जे झाँपि-तोपि बजै छह से नइ, कनी खोलि-खोलि बाजह।”

शिवालयमे जहिना शिवदर्शन-ले भक्त उताहुल रहैए जे कखन शिवजीक पट खुजतैन जे दर्शन करब, तहिना रही। जीवने-दर्शन ने उच्च कोटिक दर्शन छी...।

निरधनक पट खुजल–

“भाय सहाएब, हमरा माथमे चानन आ हाथसँ टौहकी बनबैत देखि जरूर तोहर मन हँसैत हेतह, मुदा...।”

निरधनक बात सुनि मन सहैम गेल। सहैम ई गल जे मनक बात निरधन केना बुझि गेल। किछु फुरबे ने करए जे आगू किछु पुछि कऽ बुझी आकि ओ अपने फुरने बाजत। भरिसक मनोक अपन बाट-घाट छै, जैठाम मन मनसँ मिलबो करैए आ छुटबो करैए।

कहलिऐ– “निरधन भाय, जखन संगी सबहक बीच सत्संगमे जाइ छह तखन तँ काजो ने..?”

हमर बातक इशारासँ निरधन गम्भीर भऽ गेल। मुहसँ अनायास फुटलै– “भाय सहाएब!”

‘भाय सहाएब’ सुनि अपना मनमे भेल जे भरिसक वेचाराकेँ जिनगीमे धक्का लगि रहल अछि। नजैर पाछू घुसकल, जे निरधन बुझि गेल। बाजल–

“भाय सहाएब, बाँसक चारियेटा वौस बनाएल होइए। छिट्टा-पथिया आ टौहकी-पहटा। जँ टौहकी बनाएब छोड़ि देब तँ अपनो आसीन-कातिकक आमदनी मरि जाएत। ओना टौहकी बना बेचबो करै छेलौं आ अपनो बाधक पानिक बहावक कटारिमे लगा मछवारियो करै छेलौं। मछवारिक आमदनीकेँ तँ अपने छोड़ि देलिऐ मुदा जे साँकठ अछि, जेकरा टौहकीक खगता छै, ओ केतएसँ आनत। गाममे हमहींटा बनबै छी।”

मुड़ी डोलबैत निरधनक सुकृत्यकेँ स्वीकृत करैत बजलौं–

“तखन तँ... ।”

हमर स्वीकृत पेब निरधनक मन जेना फुलाए लगलै तहिना फुलाइत बाजल–

“भाय सहाएब, एते दिन अपना-ले केलौं आब अनका-ले करै छी।”

मन मानि गेल जे निरधन समाजक जरूरतमन्द लोक छी, जेकरापर समाजक कारोबार ठाढ़ अछि। जुड़ाएल मन बिहुँसि उठल, पुछलिऐ–

“निरधन, परिवारमे के सभ छह?”

‘परिवार’ सुनिते निरधन रौदाएल फुल जकाँ कुम्हला गेल। बाजल–

“भाय सहाएब, तीन भाँइक भैयारीमे छी। लुल्ह-नाँगर बुझि दुनू भाए भीन कऽ देलक। तेही दिन बुझि गेलिऐ जे दुनियाँमे केकरो कियो ने छइ। छातीमे मुक्का मारि जिनगीक खेलौना हाथमे लेलौं। अपनो गामक लोक सभ आ आनो गामक लोक सभ भदवारिमे पटुआ काटै, धान रोपैले आ छठिक परात कातिकमे धान काटैले मोरंग जाइ छला। हमहूँ हुनके

सभ सेने दू साल ओतए खटलौं। हमरा बुते भानस कएल नइ हुअए मुदा टहल-टिकोरा तँ करबे करिऐ।”

बजैत-बजैत निरधन अगिला बाते बिसैर गेल। अपने मने मुँह बन्न भऽ गेलइ। एकाएक बोलती बन्न होइत देखि मनमे भेल जे या तँ तेल-पेट्रौल सठि गेलै वा कोनो खच्चामे लसैक गेल। हर बहैत बरदक नाङैर पकैड़ जहिना हरवाह टीटकारी दइए तहिना बजलौं–

“निरधन भाय, राज मोरंगक बात अखन तक कहियो कहाँ बजलह?”

मोरंगक बात सुनिते निरधनक मनक वीणा गुनगुनाएल–

“देखबै शकतिया हम गंगा महरानी-के...। ऐह! चुहरो ठीके चुहरे रहइ। चुहरा रहै कि चुहरखोर रहै से ते ओ जानए, मुदा रहै धरि छतिगर लोक।”

बीचमे रोकैत निरधनकेँ कहलिऐ–

“आइए तक गाममे छी, ओते समय नइ अछि। परिवारक जे बात कहए लगलह से खाली कहि दैह।”

हमर बात सुनिते निरधन पाछू उनैट-उनैट ताकए लगल। समाजमे बेसी लोक ओहन अछि जे माए-बाप छोड़ि अपन धिया-पुता आ पत्नी धरिकेँ परिवार बुझैए तँ एहनो तँ ऐछे जे धियो-पुतो छोड़ि अपन अपन पत्नियेँटा केँ परिवार बुझैए। मुदा जे असगरे अछि, तखन परिवार की भेल...।

निरधनकेँ सकदम देखि बुझि पड़ल परिवारकेँ बिसैर ने तँ गेल अछि। मोन पाड़ैत बजलौं–

“मोरंग जे धान काटए जाइ छेलहक से कमेबो करै छेलहक कि तनडेली करए जाइ छेलहक?”

निरधनक मन मोरंगक डोरकेँ पकड़ने ओइ परिवार लग पहुँच गेल, जइ परिवारमे, जनिजाति सभकेँ बाँसक छिट्टा-पथिया-ढकिया इत्यादि बनबैत देखने। मोन पड़लै सिजिने-सिजिने मोरंग जा कऽ धानो काटै छेलौं आ ओइ परिवारमे जा-जा देखबो करै छेलौं। ओही परिवारमे ने बाँसक सभ चीज बनेनाइ सीखलौं आ ओम्हरेसँ एकटा खुखड़ी कीनने आबि मोरंग जाएब छोड़ि गामेमे बाँसक कारोबार केलौं। ओना बाँसक हजारो रंगक कारोबार अछि, मुदा से नइ छिट्टा-पथिया इत्यादि-इत्यादि बनाएब शुरू केलौं...।

ओना समाजमे बेसी लोक, बेसी लोकक जिनगीक बाट रोकैये पाछू लागल अछि, मुदा एकरो नकारल तँ नइ जा सकैए जे आगू दिस बढ़ौनिहार नइ अछि। परिवारसँ समाज धरि एहेन संस्कार बनि गेल अछि जे माइयो-बाप ओही बेटा-बेटीकेँ कोनो काज अढ़बैत जे दौड़-दौड़ करैत आ जे से नइ करैत तेकरा अढ़ाएबो छोड़ि दइत। रचनोक क्षेत्र लिअ। अहाँ कविता लिखै छी तँ सइयो-हजारो रचनाकार शुभ बात कहबे करता जे अहाँक पेनी कलम अछि, जँ कथो आ उपन्यासो दिस बढ़ैत तँ समाजमे धमगज्जर भऽ जाइत। दोहरबैत बजलौं–

“निरधन, परिवारक बात नइ बजलह?”

समगम होइत निरधन बाजल–

“भाय सहाएब, की कहब..!”

निरधन चुप भऽ गेल। अगुताइत बजलौं–

“निरधन भाय, जाइ छी। आब फेर कहिया भेँट हएब कहिया नइ। आकि नहियेँ हएब तेकरो ठेकान नहियेँ अछि, मुदा हमर बात बाँकीए रहि गेल।”

‘बाँकीए रहि गेल’ सुनि निरधन बाजल–

“भाय सहाएब, की कहब अपन आ की समाजेक कहब। लुल्ह-

पांगुर बुझि दुनू भाँइ कात कऽ देलक मुदा समाजमे कियो किछ ने बाजल आ ने भइये भाए बुझलक। असगरक पेट बेसी भारियो ने अछि, कोनो कि हाथी-घोड़ाक छी, लऽ दऽ कऽ एक बीतक अछि, अपन भार अपने उठा अरवनो जीबै छी... ।"

बिच्चेमे मुहसँ निकैल गेल–

"तरवन तँ देशक एकटा परिवारक भार असगरे उठौने छह।"

हँसैत निरधन बाजल–

"इन्दिरो आवासक घर ऐ दुआरे ने भेल जे सभ कहलक ओ बबाजी आदमी छी, घर लऽ कऽ की करत।"



शब्द संख्या : 3371, तिथि : 16 जनवरी 2016

माइक वचन

पिताजीक श्राद्ध-कर्म सम्पन्न भेला पछाइत परसू पहिल छाया छिऐन। पिताजीक निविते कमसँ कम एकटा नतहारी रहबे करता, अहीक ओरियानमे माए कहली–

“बौआ, आब दोसर हाट नइ पकड़ाएत, तँए आइये तीमन-तरकारी लऽ आबह।”

माइक बात सुनि चुपे रहलौं। हाटक बेर हएत तखन ने जाएब। माइयो कहि कऽ दोसर काजे चलि गेली। ओहो किए दोहरैबतैथ। बुझले छैन जे गामसँ सटले दोसर गाममे बेरू-पहरमे हाट लगैए। वेर खसैत तीन-चारि बजे शुरू होइए आ दोसैर साँझ अबैत-अबैत उसैर जाइए...। ओना माए कहि आगू बढ़ि गेली मुदा छाया सुनि मन ठकुआ गेल। ठकुआइते पिताजीक छाया मनमे नाचए लगल। पाछू उनैट तकलौं तँ श्राद्ध-कर्म मनमे आबि गेल। बाबा धरिक ‘श्राद्ध-कर्म’ तीस दिनमे सम्पन्न होइत आबि रहल छल, जे तेरह दिनमे आबि अँटैक गेल। जहिना तीस दिनक कर्म तेरह दिनमे अँटैक गेल तहिना ईहो अँटैक गेल जे तीस-दिना श्राद्ध-कर्म भेने तँ बेसी कर्म-क्रिया हएत, तैठाम जँ तेरह दिनक भऽ गेल तखन ओते कर्म तेरह दिनमे पूरत केना। तखन तँ ओइमे कटौती करए पड़त। जखने कर्ममे कटौती हएत, तखने उद्धारोमे कटौती हेबे करत। ई नीक भेल की अधला..? किछु फुरबे ने करए। पुछबो केकरा करबै, जिनका तीस दिनपर श्राद्ध-कर्म होइ छैन, सेहो समाजमे छैथे आ जिनकर

अठारह दिनपर होइ छैन सेहो छैथ, आ जिनकर अर्द्धमासी होइ छैन सेहो तँ छैथे आ जिनकर तेरह दिनपर होइ छैन सेहो छैथे आ जे नहियोँ करै छैथ सेहो तँ छैथे, तखन पुछबो किनकासँ करबैन, तइसँ नीक चुपे रहब। मुहकेँ नीक जकाँ बन्नो ने केने रही कि दोसर दिससँ दोसर विचार हुलकी देलक। हुलकी पबिते अपनो मन बिचड़ए लगल। बिचैड़ते उचड़ल–

"हाइ रे बा! ई की भेल? हम तँ केतौ ने रहलौं, बाबाक तीस दिनक क्रिया-कर्म, पिताजीक तेरह दिनपर आबि गेल, से तँ बाबासँ पुछि नइ केलौं। आ जखन नइ केलौं तखन जँ ओ खिसिया कऽ किछु कहि दैथ तखन की हएत। एते तँ पछड़ा पड़बे करत किने जे तीस-दिनाकेँ छोड़ि तेरह-दिना दिस आएब। आ जँ तेरह-दिनो संगी संगे नइ रहैथ तखन की करब?"

मुदा लगले नजैर आगू घुसैक पिताजीपर आबि अँटैक गेल। अँटैकते मनमे उठल– मृत्युसँ पूर्व धरिक पिताजीक संग जे जीवित सम्बन्ध छल ओ दाह-कर्मसँ क्रिया-कर्म होइत पहिल छायापर पहुँच रहल अछि, पछाइत बरखी होइत-होइत सालक-साल बिसराइत जेता..! बिसराइत जेता..! मनकेँ पकैड़ लेलक।

बेर खसिते हाट जाइले तैयार भेलौं। गमैये हाट छी, उजैहिया उठत तँ लगले निपत्ता भऽ जाएत। तँए जखन काज अछि तँ ओकरा करैले तैयारो ने रहए पड़त। सएह केलौं। निसचित समैपर तैयार भैलौं। एकटा झोरा आ पाइ नेने माए लगमे आबि कहली–

"हाटक बेर भऽ गेल। जे काज करैले रहए ओकरा सबेर-सकाल समैपर कऽ लेब नीक छी।"

माइक विचार नीक लगल। अपनो मन पहिनेसँ नीक रहबे करए, माने हाट जाइले तैयार रहबे करी। आन दिन जकाँ माए पाइ जोड़ि कऽ नइ देली। अन्दाजे अहगरसँ देली। मुदा एते कहि देली जे फल्लाँ-फल्लाँ

वौस एते-एते लऽ लिहह। विदा भेलौं।

माइक उतरलो आ चढ़लो चेहरा मनमे झलकए लगल। मनमे भेल जे भरिसक पिताकेँ मुइने माए पुरुख विहीन परिवारमे अपनाकेँ असुरक्षित तँ ने बुझि रहली अछि! सोभाविको अछि...।

..ओना, परिवारक रंग-रूप भ्यौन जकाँ भइये गेल रहए। हेबो केना ने करैत, एतेटा परिवार रहितो, माने हमरासँ दू भाँइ जेठ छैथ, तइमे एककेँ तीन सन्तान आ दोसरकेँ दू सन्तान छैन, तैपर चारि प्राणी अपनो दुनू गोरे भेला, हम भेलौं, माए भेली, एगारह गोरे तैयो भेलौं, मुदा तइमे दुइये गोरे छी। अपने तँ माइयक भरोसे छी, तहूमे बेर-बेर कहने छैथ–

“बौआ, डर-भर कथुक नइ करब। हम घरक बरेड़ी-बला खुट्टा जकाँ जखन ठाढ़ छी तखन अहाँकेँ भीरे की अछि।”

मुदा अपने डरा रहली अछि...।

ओना श्राद्धक तीन दिनक पछाइत जखन दीपको भैया आ ज्योतियो भैया अपन परिवारक संग जाइ छला तखन माएकेँ कहने रहथिन–

“माए, पिताजीक पहिल छाया गाममे निमाहि दरभंगे चलि ऐहेँ।”

भैयाक विचार माए मने-मन मानि नेने रहैथ, भरिसक पिताक सिनेह बेटा दिस ससैर गेल रहैन। ओना जेबाकाल दुनू भाँइ हमरो असीरवाद दैत कहने छला–

“प्रकाश बौआ, माइयक टहल-टिकोरा करैत रहियौन।”

भैयाक असीरवाद नीक लागल। लोक माए-बापक टहल-टिकोरा नइ करत तँ करत केकर। तहूमे दुनू भैयो अपन-अपन भार देलैन।

छाया भेला पछाइत दोसर दिन दरभंगा जेबाक समय सबहक बीच बनल। ज्योति भैया समदिया दिया समाद माएकेँ पठेलखिन– “निरमली-

दरभंगा जे छोटकी गाड़ी जाइ-अबैए तेहीसँ चलि आएब। पुतोहु स्टेशनक गेँटपर ठाढ़ रहती, संग लगौने डेरा औती।"

समदियाक समाद हमहूँ सुनलौं। ओ बगले गामक कौलेजक एकटा विद्यार्थी रहैथ। ओना दरभंगा हम अखन तक कहियो ने गेल छी मुदा जे समदिया मुहेँ सुनलौं तइसँ केतौ हेराइ-भोथियाइक सम्भवने ने बुझि पड़ल, तँए मनमे एहेन कोनो शंके ने रहल। दरभंगा नइ गेल छी मुदा निरमली आ झंझारपुर तँ बिना टिकटोक गाड़ीसँ टहलै-बुलैले कहियो-काल जाइते छी किने। गाड़ीमे चढ़ै-उतरैक भाँज-भूँज बुझले अछि। दरभंगे तक गाड़ियो जाइए तँए चढ़ैयो-उतरैक हड़बड़ीक झमेल नहियेँ रहत। दरभंगा नहियोँ गेल छी तँ नइ गेल छी, हराइयोक सम्भवना तँ नहियेँ अछि।

भिनसुरके गाड़ी तमुरियामे पकैड़ दुनू माइ-पुत दरभंगा स्टेशनपर उतरलौं। परदेशियाकेँ समाने केते रहै छइ। लऽ दऽ कऽ दूटा झोरा। दुनू झोरा दुनू हाथमे लटकौने गेँट पार भेलौं। मुसाफिरखानामे झोरा रखि माएकेँ कहलयैन–

"अपना नजरिये हमहूँ भौजीकेँ तकै छिऐन आ तोहू अपना आँखियेँ पुतोहुकेँ तकहुन। करमान लगल लोक अछि, कोनो दोग-सान्हिमे हेथुन। तहूमे छोट खुटीक छथिये, केतौ ढेरबे कन्या जकाँ ने लगैत हेती।"

ओना माइक ने मुँह बिजकल आ ने आँखिमे नोरक कोनो सिरखारे जगल, मुदा रूखिसँ गमगीन बुझि पड़ैथ। माइक गमगीन सुरैत देखि अपन सुरता जगल। सुरता जगिते मनमे भेल जे घरसँ निकलैक पीड़ा तँ ने भऽ रहल छैन। मुदा ऐठाम तँ यात्रामे छी, यात्री जकाँ बनि यंत्रणा करैक अछि। माए बजली–

"बौआ परकाश, कहाँ केतौ कनियाँ नजैर पड़ि रहल छैथ?"

तोषसँ तोषित करैत माएकेँ कहलयैन– "माए, कनियेँ-कालमे यात्री

छैंट जाएत। ओहो अपने सभकेँ ने तकैत हेथुन।"

पनरह मिनटमे लोक छैंट गेल, मुदा भौजी नइ भेटली। भौजी नइ भेटने मनो झुरझुरए लगल आ पियासो लगि गेल। कोनो ऑफीस आकि कौलेज-स्कूल तँ छी नइ, छी तँ डेरा। जैठाम जाइ खातिर कोनो रिक्शोबला आकि टमटमोबला कैँ की कहबै। कहियो आएल नइ छी। अपने जकाँ माइयो छैथ, ओहो ने कहियो आएल-गेल छैथ। ओना शहर-बजारक जे रूप-रंग बनल जा रहल छै ओइमे देखेनिहारक अपेक्षा भुतलेनिहारे बेसी अछि। माने ई जे पाँच-साल, दस-साल पहिने जे बजारकेँ जेना देखलैन, ओ ओते बदैल गेल अछि जे देखनिहारो अपनाकेँ अनाड़ी बुझि भुतलेनिहारे बनि रहला अछि। हम तँ सहजे दुनू सिरे चौपटे छी...।

ओतेटा मुसाफिरखानामे दुइये गोरे ठाढ़ भेल चारूकात चकोना होइत रही, मुदा किछु देखि नइ पबैत रही। भाय, दुनियाँमे केतबो लोक अछि तँए कि अपन चिनहरबो हेरा जाएत। ओ तँ अरब के कहए जे खरबोक बीच ताकि लेत। अकासक चान तलावक कुमुदिनीकेँ ताकि केना आँखि मिलौने रहैए।

संयोग नीक बनल। ज्योति भैया अपने पहुँच गेला। ओना लोक हुनका मतिछिन्नू सेहो कहै छैन, मुदा हम केना कहबैन। जाइ छला कौलेज आ रस्तामे मोन पड़ि गेलिऐन हम सभ, तखन जँ ओ कौलेज जाएब छोड़ि चलि एला, से अपने मने ने एला। ओना नीक होइतैन जे भौजीकेँ चरिया कऽ पठा देने रहितैथ तँ एहेन नौबत नइ होइत। मुदा एहनो तँ भइये सकैए जे काजमे लागल रहने दोसर काजपर सँ नजैर हटि गेल होइन...।

ज्योति भैया ऐबते माएकेँ प्रणाम करैत एकटा झोरा अपना हाथमे लैत दोसर झोरा हमरा लइले कहि, आगू-आगू विदा भेला। रस्तापर आबि

टेम्पू भाड़ा केलैन, तीनू गोरे डेरा पहुँचलौं।

दुनू भाँइ एके डेरामे रहै छैथ, भाड़ाक डेरा छिऐन। सात-आठ कोठरीक मकान, अइल-फइल अग्नेय आगूमे गुँम्बजनुमा ओसार बनल अछि। तइ आगूमे गमलामे फूल सबहक गाछ सेहो पतियानीमे लगल अछि। ओना एक फूलक पतियानी तँ नइ मुदा रहै तँ पतियानीएमे...।

अँगनाक ओसारक कोठरीमे माएकेँ आ मकानसँ बाहर जे गाड़ी रखैबला घर अछि, जइमे एक भागक कोठरी गाड़ी-ले आ दोसर भागक कोठरी डरेवर-ले बनल अछि, तइमे हमरा रहैक बेवस्था भेल। दरभंगेक डरेवर, अपने ऐठाम रहैए। एकटा झोरा माइकेँ सुमझा, दोसर अपन नेने डरेवरबला कोठरीमे शरण लेलौं। ओना कोठरी रहै जोकर जरूर अछि, मुदा मकानसँ अलग तँ अछिए। माइयक जे ओसारक कोठरी रहैन सेहो बेसी अइल-फइल नै रहैन मुदा आगूक ओसरो आ अँगनो तँ रहबे करैन।

तीन भाँइक भैयारी अछि। बहिन नइ अछि। सभसँ पैघ–माने जेठ–दीपक भैया छैथ माने दीपक कुमार। माझिल ज्योति भैया छैथ, माने ज्योति कुमार। आ तेसर अपने छी- प्रकाश कुमार। दीपक भैया जिलाक अफसर छैथ। ज्योति भैया प्रोफेसर छैथ, अपने दसमामे पढ़ै छी।

गामसँ दरभंगा एला पछाइत जेतबो पढ़ैक सुविधा गाममे छल तेतबो नइ रहल, तँए दिनो-दिन भुसकौल होइत गेलौं। ओना स्कूलक पढ़ाइमे भुसकौल होइत गेलौं, मुदा बजारक काज, डॉक्टर ऐठामक काज इत्यादि

पारिवारिक काजमे तेजे भेलौं।

समय आगू बढ़ल। बीस नम्बर ग्रेस पाबि थर्ड डिविजनसँ मैट्रिक जखन पास केलौं, तखन तीनू गोरे, माने माइयो आ दुनू भैयो असिरवाद देलैन...।

माए बजली–

"शुरूहेसँ परकशबाक बुइध मोट छै!"

दीपक भैया बजला–

"भरि दिन मटरगस्ती करैए, सिगरेट-गुटका खाइ-पीबैए तँ पढ़त कथी!"

ज्योति भैयाक महत परिवारोमे कम छैन। आ हमहूँ बुझै छी जे ओ भंगतराह लोक छैथ, करवन कि बजता तेकर ठेकान नै रहै छैन। लगले एक बेर एकटा बात बजता आ लगले ओकरा काटि दोसर बजता। कौलेजोक शिक्षको आ बेवस्थापको सहए बुझै छैन। कहियो अपन क्लास लइले समय बिता कऽ पहुँचै छथिन तँ कहियो दू घन्टा पहिनहि पहुँच जाइ छथिन। मुदा सरकारी कौलेजक सरकारी बेवस्था छी। शिक्षकक तौल-भजार तँ विद्यार्थीक रिजल्टेसँ ने हएत, तइमे ज्योति भैयाक जश सभसँ बेसी छैन। पढ़ैबला विद्यार्थियोक नजैरमे आ शिक्षकोक नजैरमे ज्योति भैया नीक प्रतिष्ठित छथिए। विद्वान प्रोफेसरक रूपमे जानले जाइ छैथ। पढ़बे-पढ़ाएबक जिनगी अखन धरिक छैन।

ज्योति भैया जखन बुझलैन जे प्रकाश ग्रेससँ थर्ड डिविजन केलक अछि, तखन हुनका मनमे कोनो दुरभावना तँ नइ जगलैन मुदा तमतमी तँ आबिये गेलैन। तेकर कारण जे साधारण लोक पिताजी जे हमरा दुनू भाँइकेँ एते तक पहुँचा देलैन, मुदा हमरा दुनू भाँइ सन पढ़ल-लिखल परिवारमे प्रकाश मलिन भेल किने। ओ चपरासी छोड़ि बनियेँ की सकैए। तमतमाएल आबि तँ कहबे केलैन–

"तूँ पढ़ैक मर्म नइ बुझै छेँ। काल्हि जखन कौलेज जाए लगब तखन संगे चलिहेँ, नाओं लिखा देबौ।"

आइ.ए.क विद्यार्थी हम भऽ गेलौं। परिवारक पक्का सेवक बुझू आकि नौकर सेहो तँ बनियेँ गेल छी। मने-मन परिवारक सभपर खौंझ

उठबे करैए। मुदा मनमे ईहो बिसवास तँ बनले अछि किने जे दीपक भैया अफसरे छैथ। ज्योति भैया प्रोफेसरे छैथ, नोकरी भेटबे करत। बड़ हएत तँ यएह ने हएत जे हाकिम नइ बनब, प्रोफेसर नइ बनब। मुदा जँ कनियेँ दुनू भाँइ मन देथिन तँ किरानी नइ तँ चपरासी तँ अपनो लूरिये-बुधिये बनियेँ सकै छी। तइले अनेरे किए किनको किछु कहिऐन। मुदा मनमे जे सन्ताप अछि ओ तँ उठि कऽ ठाढ़ होइते अछि। कहू जे ई केहेन भेल जे ज्योति भैया अपन दरमाहाक आधासँ बेसी पाइ किताबे कीनैमे खर्च करै छैथ, तैपर कौलेजक पुस्तकालयसँ आनि-आनि सेहो पढ़ै छैथ, तैयो मन नइ भरै छैन। मुदा हमर किताब कीनै-बेर आँखि नइ उठै छैन! परिवारक काजे भरि दिन दौड़-बरहा करैत रहै छी, यएह सोचि ने जे परिवार अपन छी, सभ अपने छी, तँए कोनो तरहक असोकर्ज परिवारमे नइ हुअए। मुदा हमरा संगे माइयो आ भाइयो-भौजाइक की बेवहार अछि, सेहो तँ परिवारे लोककेँ ने देखए-बुझए पड़तैन। ने पढ़ै-लिखैक समुचित बेवस्था आ ने समुचित समय, तखन जँ भुसकौल नइ बनब, तँ बनब कहिया। मुदा से बुझनिहार ने दीपक भैया आ ने माए। माए अखनो माए छैथ, मुदा रूप बदैल रहल छैन। जे सुविधा पिताजीक अमलदारीमे दुनू भैयाकेँ भेटलैन, सएह हमरो भेट रहल अछि? कहियो कोनो दिक्कत दुनू भाँइकेँ पिताजी नइ हुअ देलखिन, की ई माए नइ देखै छेली..? मुदा आइ ओ मुँह किए बन्न केने छैथ? हम हुनकर बेटा नइ छिऐन..?

अपन जिनगीक बाटक बन्धन देखि मन चिहैक गेल। चिहैक ई गेल जे जैठाम परिवारक बीच, एते पैघ अनियाय होइए तैठाम दोसर-तेसरक बीच हएब कोन बड़का बात भेल। पिताजी ओना पचास बर्खसँ ऊपर भेला पछाइत मुइला। ओइ दुनू भाँइकेँ जीवैतिक सुखो देलखिन आ नीक पढ़ाइक सुविधा सेहो, जइसँ एक भाँइ प्रशासनिक अफसर छैथ आ दोसर कौलेजक विद्वान प्रोफेसर, मुदा अपने चपरासीसँ बेसी ओकाइत

कहाँ बना पेब रहल छी? भोरे जे दूध अनैसँ काज शुरू होइए से गोटे दिन डॉक्टर ऐठामसँ अबैत-अबैत एक-डेढ़ राति बजि जाइए। माइयो ई बात किए ने बुझि रहली अछि जे जेठका बेटाकेँ पतितुल्य माने घरक खर्च उठौनिहार, बुझि रहली अछि आ हमरा बेटो नइ नोकर बना भैयारीक सेवा करा रहली अछि। एहेन दू रंगक नजैर किए छैन। जँ छैन तँ रहौन, आइसँ प्रकाश अपना-ले सोचत। भरि दिन सुतबे करब। सुतबे ऐ दुआरे करब जे जँ काज करए बाहर निकलब, तँ दोसराक खगता हेबे करत, तैठाम तँ सभ कहबे ने करता जे 'जखन गारजन बनि घरमे हम छियौ, तखन तूँ किए अनका ऐठाम गेलेँ?'..तँए भरि दिन सुतबे करत।

पएरसँ माथ धरि चद्दैर ओढ़ि दच्छिन मुहेँ सुति रहलौं। उत्तर-मुहेँ सुतब बेवहारिक रूपमे वर्जित अछि। मुदा आँखि चद्दैर तरोमे झँपाएल नइ टक-टक तकिते रहए। जिनगीक उमकी मनमे उमैक रहल छल। रंग-रंगक बात बर्खा-पानिक बुलबुला जकाँ मनमे उठैत रहए, चमकैत रहए, कोनो कनी दूर तक पानिक वेगमे बहबो करए आ कोनो लगले फुटि जाइ छेलए। मुदा तैयो अपन मनमे किछु संकल्प रोपए चाहि रहल छेलौं। मगर पएरे भँसिया जाइत रहए। वएह ने थीर भऽ पाबि रहल छेलए। धीरे-धीरे मन असथिर होइत अपनापर आबि अँटैक जाइत रहए। जखन घरक भार माए उठौने छैथ तँ कि भैया सभकेँ जहिना सभ किछु जुमौलखिन तहिना किए ने जुमा रहली अछि? डेढ़ बर्खसँ दुइयेटा पेन्ट आ एकेटा शर्ट अछि, कहैले कौलेजमे पढ़ै छी, मुदा किताव-कॉपीक कोनो ठेकान नइ अछि। तेतबे किए, कौलेज जाएब छोड़ि

दइ छी आ भतीजा-भतीजीकेँ नेने डॉक्टर ऐठाम जाइ छी। दिन-राति खटनीमे समय बीत जाइए आ उनटे सभ दोखी बनबै छैथ जे परकशबा भुसकौल अछि। ठीके ने ज्योति भैया कहलैन जे पढ़ैक मर्म नइ बुझै छीही। पढ़ैक मर्म बुझैक कोनो उमेरक ठेकान अछि, ओ तँ कहियो

आ करवनो खुजि जाइए। जँ से नइ खुजैए तँ सुरवदेव केना व्यासजीकेँ पेटेसँ हूँहकारी भरलकैन...।

व्यासजी लग ऐबते मन अँटैक गेल। अँटैकते मनमे उठल, माए जँ माए छैथ, तँ हुनका किए ने कहबैन जे जरवन तीनू बेटा अहींक छी, तरवन दुनू जेठकेँ जे अनुकूल सुविधा पढ़े-लिरवैक जिनगीमे देलिऐन से हमरा किए ने दइ छी..?

लगले मन आगू बढ़ि मझिला भैयापर गेल। राति-दिन कितावे पढ़ै छैथ, मुदा एतबो नइ बुझै छथिन जे हमरा रवगता केते अछि। काज ओतबेकेँ ओतबे करै छैथ, जेते सभ दिन करैत एला, तरवन जँ ओ अपने कितावक पाछू पाइ रवर्च कऽ लइ छैथ तरवन हमरा केतएसँ देता। परिवारक भारसँ अपनाकेँ कात केने छैथ मुदा पत्नीक हथौटी तँ रवर्च चलिते छैन। अपन रवगताक सूची बना महिनो दिनक रवर्च पत्नीकेँ दऽ देने छथिन जइसँ अपना कोनो असोकर्ज नइ होइ छैन, मुदा हम छोट भाए छिऐन, से किए बिसैर गेल छैथ। की ओ नइ बुझि पेब रहला अछि जे अरवन प्रकाश विद्यार्थी छी, अरवन ओकरा पढ़ैले समैयो आ रवरचोक रवगता छइ। मुदा ओहो बड़के भैयापर ओङ्गठल छैथ...।

'बड़का भैया' मनमे ऐबते नजैर दीपक कुमारपर पहुँच गेल। जइ गतिये क्रोध परिवारमे चढ़ि रहल छल ओ रसे-रसे उग्र भऽ गेल। उग्र होइते मनमे उठल– परिवारमे पिताक परोछ भेने तँ वएह- माए, भाए आ भौजाइ- ने श्रेष्ठ भेला, पढ़ल-लिरवल छथिए। मुदा हुनकर जे बेवहार परिवारमे छैन, की ओ सोहंतगर छैन? अपना भलेँ सोहौन लगौन मुदा हम नइ मानबैन। की यएह होइ जे अपन पत्नी आ अपन बाल-बच्चाक संग जेहेन मधुर बोली-चाली रखने छैथ, तेहने हमरो सेने रखने छैथ? मलेटरी-कमाण्डर जकाँ बरताव करै छैथ। की हम हुनकर सन्तान तुल्य छोट भाए नइ छिऐन। अपनोसँ बीस दुनू भाँइक पत्नी छैन, बड़का हाकीम जकाँ सात लगा फरिक्केसँ माइक माध्यमसँ हुकुम चलबैत रहै छैथ! माइयो

केहेन जे ओ जेना-जेना कहै छथिन, तेना-तेना अढ़बै छैथ..!

मन आरो उग्र भऽ गेल। मनमे रोपि लेलौं, जे कियो उठबैले औता आकि किछु अढ़बैले औता, पहिने हुनकेसँ अपन सवाल पुछबैन।

भिनसुरका समय छिऐहे। समयमे ने बेसी गरमी आ ने बेसी ठण्ढी छइ। मुदा समगमो नहियेँ अछि। तैपर झिहीर-झिहीर पूरबा हवा आरो सोहौन बना देने छै...।

चद्दैर ओढ़ल मनमे उठल- यएह ओ बेला छी जइमे लोक राजवेलाक फुलवारीसँ लऽ कऽ बेल वगिया होइत बेलीक फुलवारी होइत जूही-चमेलीक फुलवारी धरि फूल लोढ़ए जाइए। जिनगीक उठैक बेर, माने भोर होइत सभ अपन-अपन दुख-धंधाक पाछू जगि जाइए...।

हमरो जगैबेर अछि। आइ हम जागब। जे कियो उठबए औता आ कि किछु अढ़बए औता तिनकासँ अपन जिनगीक बात पुछबैन। से चाहे माए आबैथ आकि भाए-भौजाइ। अपना विषयमे स्वयं सोचए पड़त जे केहेन जिनगीमे छी आ केहेनमे परिवारक आन सभ छैथ, से देखैत अपन मन कि चाहि रहल अछि...।

सभकेँ अपन-अपन मन छै मनक विचार छै विचारक काज छै आ काजक जिनगी छइ। जँ कियो केकरो हाट-बजारमे कोनो बौस किना दइ छै तँ ओकरा दुनू गोरे मानि लइए, जे फल्लाँ जिनगीक काजमे संग देने छैथ, माने बेरपर काज देने छैथ वा उपकार केने छैथ। मुदा जँ कियो अपन जिनगीमे दोसरकेँ देखबैत ओइ काजकेँ करै छैथ, जइसँ देखनिहारकेँ ओते बोध भऽ जाइ छैन, जँ ओहन काज ओ अपने कऽ लिअए जइसँ दोसराक उपकारक जरूरते ने पड़इ, तँ की ओ सेवा नइ भेल? ओना ऊपरे-ऊपर देखलापर बेकतीगत जिनगीक काज भेल, दोसरकेँ कोनो हानि-लाभ नइ भेल, मुदा जिनगीक सच्चाइकेँ पकड़निहारक उपकार नइ भेल, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। सभ

देखै छी अज्ञानमे मनुक्खकेँ जेना होइ छै, पछाइत ज्ञानक बाट पकैड़ ज्ञानी होइत ज्ञानवान बनि ज्ञानदाताक रूपमे अपन जिनगी जीबए चाहै छैथ, तइमे जँ केतौ कोनो राहु-केतु अछि तँ ओकरा बुझए पड़त।

मनक बुलबुला बुबुक-बुबुक समूह बनि सटि एक-दोसरमे किछु मीलियो गेल आ किछु पजरवाहिमे सटि सतरंगी रूप बना चमकौ लगैए। जइसँ लोक अपन चेहरो देखए लगैए।

माएसँ पुछबै–

“माए, जखन दुनियाँक सभ किछु आगू-मुहेँ माने नीक दिस बढ़ि रहल अछि, तैठाम तँ अहाँ जीवित माए छी, दीपक भैया आ ज्योति भैया, जेठ छला तँए हुनका दुनू गोरेकेँ जेठौंस देलिऐन, मुदा परकशबाकेँ की दऽ रहल छिऐ? की अहाँकेँ एतबो बेटाकेँ कहैक इमान नइ अछि जे अपनो जिनगी मोन पाड़ि प्रकाशोकेँ ओहन बाटपर चलैक उपाय कऽ दिऐ।”

माए नइ आबि मझिला भैया- ज्योति कुमार- दतमैन करैत टहलए निकैल हमरा कोठरी लग पहुँचला। केबाड़ बन्न खिड़की खुजल देखि ज्योति भैया हुलकी मारि जखन देखलैन तँ बुझि पड़लैन जे भरिसक किछु होइ छै...।

परिवारोमे आ समाजोमे तँ एहेन होइते अछि जे खुशी मनक देह आ बेथाएल मनक देहक क्रियामे अन्तर आबिये जाइ छइ। ओही किरियामे ने संकल्पो-व्रत छिपल अछि, जेकरा लोक किरिया खाएब कहै छइ।

असथिरेसँ ज्योति भैया हमरा सोर पाड़ैत बजला–

“बौआ, प्रकाश?”

एक तँ पहिनहिसँ मन तरङल रहबे करए, तैपर मधुर बोल सुनि मन आरो तरैंग गेल। ओना ज्योति भैयाक बोली-चाली मधुर छैन्हे, मुदा दुनू भाइक बीच गप-सप्प पावनियेँ-तिहार होइए, तँए अपने ज्योति भाइक

बोलकेँ ठीकसँ नइ अडेजने छेलौं। पहिने मने-मन विचारलौं जे बजबे ने करब, बुझता जे गाढ़ नीनमे सूतल अछि। जखन दोहरा कऽ बजता तखन अपने ने बोली मधुर बनतैन आकि मौध...।

ज्योति भैया गाढ़ नीन देखि मने-मन विचारलैन, नीक हएत जे वेचाराक नीनकेँ नइ तोड़बै। यएह ने छी चिन्तन-क्षण। 'मन हरखित तँ गाबी गीत आ मन मुदित तँ सुती निसचित।'

सोचैत-विचारैत ज्योति भैया ससैर गेला। सुनसान देखि मनमे उठल–

"ओह! शिकार छुटि गेल। छोट भाए होइक नाते तँ पुछिये सकै छेलयैन ने जे 'भैया, पिताजी अहाँ सभकेँ विद्वान प्रोफेसर बनौलैन, अफसर बनौलैन जिनका परोछ भेने हमरा अहाँ दुनू भाँइ कि बना रहल छी?"



शब्द संख्या : 2999, तिथि : 21 जनवरी 2016

पान

पान अपन चिन्हारए जहिया देलक तहियेसँ मिथिलाक जीवनक संगी बनि गेल। अदौसँ जहिना मिथिलाक ऋृषि-मुनि साग-सतूसँ सटि जिनगी बितबैत एला अछि, तहिना मिथिलाक पानो ने अदौसँ बिनु फूल-फड़क अपन जिनगी हवन-यज्ञसँ लऽ कऽ कृत्ति-यज्ञ तक अरपित-समरपित केने आबि रहल अछि। जहिना माटि-पानिसँ सटल मनुक्ख तहिना ने पानो अछिए। पानेटा किए कहबै, मखानो, माछो तँ अछिए। माटि-पानिक बीच बास करैबला तीनू, जहिना पानिमे रहि माछ-मखान माटि धेने रहैए तहिना माटिपर रहितो ने पान कहै छै–

"धान पान नित स्नान... ।"

कृत्ति-यज्ञमे बैसल पानक खिल्लीकेँ पान खेनिहार देखि-देखि हँसैत रहए। ओना पानक प्रशस्तियेटा आब रहि गेल, खेनिहार दुबरा गेला अछि। किछु गोरे माछ-मासु चिबवैबला ओ तँए अपन दाँत बँचबै दुआरे खाएब छोड़ि देने छैथ, तँ किछु गोरे गुटके दिस बोहिया गेला अछि, मुदा तँए कि रमेशो-दिनेश तेहने भऽ जेता से बात नहि। स्पष्ट बुझै छैथ जे पानक रस बिनु पान खेनिहार केना बुझता। करवन पान फुला कऽ हँसैए आ करवन रस भरैए से बिनु पान चिबेनिहार बुझबे केना करता। कोड़ियो साहित्य प्रेमीक बीच पानक खिल्ली, सुपारीक टूक, जर्दाक डिब्बा, चुनक चुनौटी सभसँ सजल पानक डाली अछि... ।

हजारो-लाखो लोकक बीच प्रेमी जहिना अपन प्रेमिकाकेँ परेख

अपन आँखि गड़ौने रहैए तहिना रमेशो-दिनेश अपन, डालीमे रखल पानक खिल्लीपर नजैर अँटकौने। ने कियो कार्यक्रमक आगू भऽ छुबैले पानकेँ तैयार आ ने कियो ई कहनिहार जे, पानक डालीकेँ माथ नै दुखाइ छै जे बीचमे पड़ल अछि।

जहिना रमेश पानक खिल्लियोपर उठी-बैसी नजैर दैत आ जर्दाक डिब्बो देखैत, तहिना दिनेशो। मुदा एते लोकक बीच आगूओ हएब तँ बाधित अछिए। बाधित ई जे नीक रहितो अधला छीहे। ओना दुनू गोरे माने रमेशो आ दिनेशो साहित्य प्रेमी, मुदा दुनू दू डारिक। रमेश विद्वान रहितो हास्य प्रेमी भेने अपन गम्भीरता गमा नेने मुदा से दिनेश अपन बँचौने छैथ। ओना दुनू दू दिशामे बैसल मुदा दुनूक नजैर चारूकात घुमि-फीरि पानक खिल्लीपर आबि अँटैक जाइन। मने-मन कछमछी दुनूकेँ रहैन मुदा दिनेश अपन मनक कछमछीकेँ दाबि कऽ रहि नै सकला, मुँह खुजि गेलैन–

“अपने लोकैन पानक गुहारि किए ने करै छिऐन? वेचारा बीचमे बैसल मत्थाहाथ देने अछि!”

रमेशक बात जिनका जेते नीक लगल होइन, मुदा दिनेशकेँ मननुकूल लगबे कएल। कौव्वालीक मेल-फिमेल जकाँ रमेशक विचारकेँ विचड़ित करैत दिनेशो बजला–

“रमेश भाय, अहाँ ते भगैत गबिते छी, भाउ खेलैमे देरीए केते लागत। हौउ, पहिल गुहारिक गुहरिया अहींक भेल।”

सह पेब रमेश पानक डालीसँ पानक एकटा बीड़ा उठा मुँहमे लेलैन। रमेशकेँ देखिते दिनेशोक मन गवाही देलकैन जे जखन एक खेबैया खेबि आगू बढ़ला तखन अनेरे ने मनकेँ रोकने छी। ओहो पानक एकटा बीड़ा उठा मुँहमे लेलैन...।

एका-एकी आनो केते गोरे उठा-उठा मुँहमे लेलैन...।

पीअर रंगक खिल्ली देखि पहिने रमेश झुझुएला, दर्जनो खिल्लीक बीच पहिने हरिआएल रंग दिस आँखि टोहिओलकैन, मुदा से नइ पेब, पकुऐल बुझि खुशी-खुशीसँ मुँहमे लेलैन। मुदा जहिना दुनूक बीच रस-रभस शुरू भेलैन तहिना मुँह आ पानक बीच मधुआएल मन कड़ुआए लगलैन। कड़ुआइते फुटलैन–

“अनाड़ी हाथ पड़ि जहिना बुधिमती मंथराकेँ भेलैन तहिना वेचारे बुधिमत पानकेँ सेहो दुरगैत भेल अछि! कहू..!”

मुदा से मनसँ निकैल मुहेँमे बन्न रहलैन।

जहिना झाँस पड़ल आँखि कड़ुआ कऽ नोराए लगैत तहिना पानक झाँससँ रमेशक आँखि नोरा गेल रहैन। जे दिनेश परेख लेलैन। खग जाने खगक भाषा। अपने फुरने मन बिदकैत रहैन–

“कहू! कियो ई तँ घरवारीकेँ नइ कहने छेलैन जे हमरा-ले पानक ओरियान केने रहब..! जे पानक प्रेमी छैथ ओ अपन प्रेमिकाक जिनगीक उपाय सेहो ने संगे रहै छैथ। या तँ जेतेकालक कार्यक्रम अछि तेतेकाल बिनु पान खेनौं एक-रसमे रहता वा अपन जोगार अपने रखने हेता। कियो बेल खाइए अपना मुँहक भरोसे। लस्सा लगतै आकि गुद्दा भेटतै से तँ ओ जानए।”

दिनेशक आँखि रमेशक आँखि लग जा बाजल–

“भाय, ऐ जिनगीसँ मरने नीक।”

माला जकाँ चारूकात बैसल लोककेँ खिड़ैत रमेशक नैन दिनेशकेँ कहलक–

“अपन सभ जोगार पानक रखने छी मुदा तैयो मरै छी..!”

ओना आन-आन खेबैया जे रहैथ तइमे दू धड़िया भऽ गेल छला, एक धड़िया जे पानक प्रेमी रहैथ तिनका सबहक मन कड़ुआ गेल रहैन, तँए करूआइर पकड़ैले तैयार। मुदा दोसर जे रहैथ ओ कियो स्वागतक

सत्कार बुझि मने-मन खुशी रहैथ तँ कियो दस गोरेमे अपनाकेँ पनखौकक परिचय दिअ चाहैथ।

रमेशक मन विचड़ए लगलैन। कहू! जे काज पुस-पुसताइनसँ चलि आबि रहल अछि तहूमे अनाड़ी बनि जाएब केहेन भेल? अइले कोन बड़का भारी ज्यामितिक फर्मूला रटैक जरूरत छै! भेल तँ पानक पात, चुन, खाएर, सुपारीक जोगक क्रिया। पानक पीठ चुन लगत। चुने ने पानक धार छी। यएह ने अपनासँ सबैया खाएर पीब अपन रंगो बनौत आ रसो भरत। जँ चुनक सबाइ लगा खाएर नइ देब तँ ओ अपन ताल-मात्रा करैत जीहकेँ छिलबे करत किने...।

ओह! भरिसक पान लगौनिहार चुने ने तँ बिसैर गेला। जँ चुन पड़ल रहैत तँ पानक पात जे पिरौंछ अछि ओकरा नइ हरियरीक सुआद तँ कम-सँ-कम हरयरीक समगमपर जरूर अनैत। से तँ मुँहमे ओहिना कहैए–

“हमर तँ गुणे कड़ुआएल छी।”

ठीके कहैए किने। पहिने पानक सत्कार करबै, माने समुचित ढंगसँ लगेबै, तखने ने ओहो अपन सखी-सहेलीक संग फुलौत-फड़ौत। जैठाम ओकरो कुभेला हेतै तैठाम जे ओहो कुभेला करत तँ ओकरे कोन दोख...।

रमेशक नजैर मुँहक पानक संग जर्दापर पड़ल। सुपारी तँ टूके-टूक अछि तँए ओकर कोनो दोखे नइ, मुदा जरदो तँ अपन करामात नहियेँ देखबैए! ओ किए ने देखबैए? जखन कि हरि शंकर जर्दाक संग तुलसियो अछि। तखनो कोनो चहल-पहल मुँहमे नइ देखै छी! से एना किए भेल..?

..आगू डालीमे राखल जर्दाक डिब्बाकेँ हाथमे लैत रमेश तजबीज करए लगला जे बेसी दिन भेने जाकड़ी तँ ने भऽ गेल अछि। मुदा सेहो नइ अछि, पीठपर स्पष्ट लिखल छै दू मास पहिलुका पेकिंगक तारीख।

फेर तुलसीक पौंचकेँ उठा देखलैन तँ ओहो ओहिना, माने दू मास पहिलुका तारीख। तखन एना किए भेल! मने ने तँ गड़बड़ अछि..?

अपना मने मनमे रमेशकेँ शंका भेलैन। जखन मने गड़बड़ तखन तँ दुनियाँक सभ किछु गड़बड़ लगबे करत। मुदा रमेशक मन अपन गड़बड़ी मानैले तैयारे ने भेल। फेर रमेश दोहरा कऽ चाहलक जे पानक खिल्लीकेँ खोलि कऽ देखिऐ जे चुन-खाएर जोगानुकूल पड़ल छै की नहि। जखन पान-चुन-खाएर-सुपारीक जोग क्रिया मीलि जाएत तखने ने जर्दाक गुण-अवगुण बुझब। तहूमे जरदा तँ अनेरे ऊपरसँ आबि अपन चालि पानकेँ पकड़बै छइ। जँ से नइ अछि तँ किए पान खेबैया अपन बचकानी अवस्थामे बिनु जर्देक पान खाइए। पछाइत मनकेँ मन्दिरक घण्टी जकाँ जे रसे-रसे घन्टा बनि सिंह दुहारिपर ठाढ़ भऽ जाइए, तहिना ने पानो खेनिहार पान खुऔनिहारकेँ पुछि लइ छैथ जे काली पत्ती कोन छी, पान सए नम्बर पत्ती अछि किने, तुलसी तँ ने डुप्लीकेट कम्पनीबला रखने छी...। ओना आब तुलसीए किए कहबै, एके कम्पनीक एक सीख-लिखक डिब्बामे एकटा अक्षर घुमा दइए आ डुप्लीकेट दुनियाँक बजारमे अपन डुप्लीकेट समान बेच लइए...।

रमेशकेँ किछु फुरबे ने करइ। केतबो मनकेँ पाछूसँ उधूक्का मारि जगाबै जे कड़ुआएब छोड़ि मधुआ जाइ, जे ई साहित्यिक कार्यक्रम छी, ऐठाम मधुरस कलशक बँटवारा हएत...। फेर मनमे होइ जे जानियेँ कऽ ने तँ हम अन्हरजालमे पड़ि गेलौं। पान खाइ छी, अपन रखने छी, अपना मने नबाबी खिल्ली खाएब आकि गुलाबी खिल्ली, से तँ अपने मने ने करब। ओह! अनेरे पानक लोभमे मनकेँ दुइर कऽ लेलौं...।

अपने विचारमे रमेश पेशोपेश हुअ लगला। दिनेशक मन बिचड़ैत जे पान तँ अपनो संगमे अछि, मुदा जैठाम एते उच्च कोटिक मञ्च अछि, तैठाम एहेन निम्न कोटिक सु-सुआगत-विन्यास होइ, ई तँ उचित नहि। जखन सभ बुझै छी, पानक पात आ चुनक जोगसँ पानक बीड़ा बनि जाइए, ओना पानेकेँ के कहए जे पानक डण्टियो अपन महत ओतबे रखने अछि। माने ई जे कियो पानमे खाएर नइ खाइ छैथ, तँ कियो

सुपारी नइ, कियो सुपारी खाइ छैथ तँ कियो जरदा नइ। मात्र चुने-पानेक संयोगसँ ने पान बनि जाइए। ई दीगर भेल जे पूर्वांचल- जेना असाममे कँचका आधा फाँक सुपारी आ पानक पातक खिल्ली बनैए। ओइठाम लोक खाएरक कोन बात जे चुनोक परहेज करै छैथ। मुदा ओइठाम खाली असमिया सुपारी अपन संग पानकेँ करैत, चुन, खाएर, जरदा सभ किछुकेँ त्यागितो पान सुपारियोकेँ पाने कहा लैत...।

असामक कँचका सुपारीक पान दिनेशक मनमे ऐबते नाचि उठल- भाय! मिथिलाक पानक ने चर्च अछि। मिथिलाक ओ पान जे जानु मुनि उपजबै छैथ, जेकर अपन रूप छै, रंग छै, रस छै, सुआद छै...।

मनमे ऐबते दिनेशकेँ बुधन भाय मोन पड़लैन। झंझारपुर बजारसँ अबैकाल, किरिण डुबि गेल रहए। पहिल साँझो बीत गेल रहए, आधापर दोसर साँझ आबि गेल रहइ। घर-अँगनामे डिबिया-लालटेन टिमटिमए लगल रहए। ओना अन्हरिया राति रहने अकासोमे लोकक माथक केश जकाँ छोट-पैघ लग-दूरक तरेगनो सभ जगि-जगि तकए लगल रहए। पुरना साइकिलपर चढ़ल बुधन भाय सेहो पान बेच घुमल रहैथ। नव सेनरेले साइकिल, तँए दिनेश बेसी रेशमे चलबैत रहैथ। कड़कड़ाइत-खड़खड़ाइत साइकिलपर चढ़ल बुधन भाय लागल-लागल घर दिस अबैत रहैथ। ओना पहिने हम साइकिलक खड़खड़ाएब परेखलौं। मुदा साइकिलपर सवार बुधन भायकेँ नइ पहचानि सकलयैन। मुदा साइकिलमे साइकिलक धक्का नइ लगि जाए ई सोचि जखन अपने दहिन होइत टपए लगलौं, तखन सोझा-सोझी पड़िते बुधनो भाय तकलैन। दुनू गोरे दुनू गोरेकेँ गामक संगी बलियारिक एगच्छा लग पेलौं। हमरा किछु बजैसँ पहिनहि बुधन भाय बजला–

"बौआ, एते रेश साइकिल अन्हारमे किए चलबै छी?"

बुधन भाइक विचारक उत्तर नहि दैत पाशा बदैल कहने रहिऐन–

"एते अबेर केतए भऽ गेल बुधन भाय?"

अपन काजक बात बजैक अवसर पबिते बुधन भाइक मनमे खुशी एलैन, खुशी ऐबते बजला–

"बौआ, अहाँ अपन साइकिल अगुआ लिअ, पाछू-पाछू हम चलबो करब आ कहबो करब।"

बुधन भाइक बात सुनि कहने रहिऐन–

"चौड़गर रस्ता छइहे, तहूमे जे केतबो टुटल छै तैयो तँ प्रधाने मंत्रीक योजनाक सड़क छिऐ किने, चौड़गर तँ छइहे। भने नीक हएत जे सोझा-सोझी रहब तँ गप करैमे बेसी नीक हएत। "

तैपर बुधन भाय बजला– "अपन-अपन मेगर धेने चलू।"

बुधन भाइक बात सुनि मुस्की मारि खाली मुस्किया लेलौं, बजलौं किछु ने। जे सभ दिन सभ क्षण होइतो अछि आ होइतो आबि रहल अछि जे लोक अपन करेज फाड़ि अपन कर्मज्ञान दान करए चाहितो छैथ आ चाहितो आबि रहल छैथ। यएह छी दानक प्रवृत्ति जे आइये नइ अदौसँ आबि रहल अछि। मुदा अही ज्ञान-दानक प्रवृत्तिमे अज्ञान सेहो तेना घोसियाइयो जाइए आ घोंसियाइत सेहो आबिये रहल अछि। जैठाम पवित्रताक सीमित सूत्र अछि तैठाम अपवित्रताक असीम सूत्र सेहो अछि। कोनो नीक काजकेँ नीक केनिहार बुझिनिहार एक भेला, मुदा अभावक कारणे वा अविचारक कारणे कनी-कनी कमैत असंख्य बनि जाइए। जइसँ सुवृत्ति कुवृत्तिक रूपमे जाल जकाँ पसैर गेल अछि।

हमर मुस्की बुधन भाय अन्हार दुआरे नइ देखि पेला मुदा मुँह बन्न देखि मन कलैश गेल रहैन। कलैशते जेना हृदयमे बिनबिनी उठए लगलैन। तरेतर तेना बिनबिनाए लगला जे...। भेल जेना अपन छाती फाड़ि-फाड़ि कऽ बुधन भाय हमरा ओढ़ा देता। लोक की लऽ कऽ आएल

अछि आ की लऽ कऽ जाएत, मुदा जँ अपन काजक लूरि केकरो दऽ दइ छिऐ आ जँ ओ ओइ लुइरिक बले ठाढ़ चलैत रहल तँ ओ लूरि लूरिहारक मोन पाड़बे करत किने...।

बुधन भाइक मनमे हिलकोर मारए लगलैन जे हमर जिनगीक लीला हुनकासँ हटल अछि। मुदा समाजो तँ समाज छिया। समाजक बेथा-कथा समाज नइ बुझै, तखन समाज ठाढ़ भऽ चलत केना? ओना समाजक ढाँचागत रूप नइ अछि, विचारगत अछि, जे काजगत भऽ जिनगीक संग चलैत रहैए, तहिना बेकता-बेकतीगत सेहो अछि जे विचार-गतिये सम्बन्ध बनबैत चलैत रहैए। घुमैत-फिरैत बुधन भाइक नजैर हमरा प्रश्नपर पहुँचलैन– 'एते अबेर केतए भऽ गेल।'

बुधन भाइक मन जेना फेर नचलैन, अबेर ने अबेर छी आ ने सबेर। एकक शुरू एकक अन्त...।

..मुदा दिनेशो तँ पढ़ल-लिखल नवजुबकक समाजमे छैथ, जे बात पुछलैन तेकर उत्तर नइ देबैन सेहो केहेन हएत। मुदा बातक पाछू सिरक संग सोरो तँ नमहर अछिए। पुछलैन जे अबेर केतए भऽ गेल। मुदा अबेर भेल कहाँ अछि। सभ दिन किरिण लहसैत पानक ढोली लऽ कऽ झंझारपुर बजार जाइ छी, पानक दोकानदारकेँ ढोली-ढोली दैत सौदा अन्त करै छी, बीचमे झंझारपुर स्टेशनपर चाह पीबै छी, जलखै करै छी, दोकानदारसँ पाइ असुलैत जेतएसँ काज शुरू केने रहलौं, तेतै आबि अन्त होइए। अपन परिवारक चीज-वौस कीनै छी, आठ-साढ़े आठ बजे धरि गामपर पहुँचै छी। खाइ-पीबै छी, सुतै छी, फेर भोरेसँ अपन दुख-धन्धामे लगि जाइ छी। सभ दिनेक ने कारोबार छी...।

थोड़ेकालक पछाइत बुधन भाय बाजल छला–

"बाउ दिनेश, कहैले बहुत बात मनमे लुसफुसाइ-ए, मुदा आब तँ दुनू गोरेकेँ रस्ता एके पाँतर कटैले अछि, तँए अधखड़ुआ बातसँ नीक जे

ओकरा छोड़िये दिऐ।"

कहलयैन–

"छोट-छोट गप कहियौ जे, कमो समयमे बेसी हएत।"

बुधन भाइक मनमे उठलैन। पान बेच कऽ जा रहल छी एतबे कहलासँ पानक जड़ि थोड़े बुझता, तँए पान केना उपजैए से पहिने कहि देब नीक हएत...।

बजला–

"बाउ, पानक रोप बारहो मासक दू मौसममे होइए, एक चैती आ दोसर अखाढ़ी, माने एक गरमी मौसममे आ दोसर बरसात मौसममे। मुदा दुनूक बीच अकास-पतालक अन्तर छइ। ओ अन्तर भऽ जाइ छै कठिन श्रम आ साधारण श्रममे। माने ई जे चैती रोपक पानकेँ दिनमे तीन बेर बड़का लोइटसँ पटौल जाइए जे भारिये नइ बहुत भारी होइए। जखन कि बरसाती रोपमे पटौनीक बचत होइए। खेतीले पानिक विशेष खगता होइते छइ। मुदा चैती रोप पान सालक भीतरे फड़ियो जाइए आ बरसाती रोप बरसातमे लगि तँ जाइए मुदा हाले-बेहाल भऽ खिद-खिद करैत जाड़मे पकड़ा जाइए, जइसँ अगिला सालमे ओकर बाढ़ि होइ छै आ फड़ैए।"

नमहर साँस छोड़ैत कहने रहिऐन–

"बुधन भाय, अगिला मोरपर सँ अहूँ अपन घर दिसक रस्ता पकड़ब आ हमहूँ फूटि कऽ अपन घर दिसक रस्ता धड़ब। एकटा बात कहू तँ अपन जिनगीकेँ सवुरिया गाछ बनौने छी किने?"

'सवुरिया गाछ सन जिनगी' सुनिते बुधन भाइक मन जेना पाकल गौरिया केरा जकाँ पघिल गेलैन तहिना मधुआइत बजला–

"बाउ दिनेश, जखन मनमे करवनो छल-प्रपंचक विचार नइ उठैए तखन सवुर किए ने रहत। तहूमे ओहन वृत्ति-चक्रमे जिनगी चलैए जेकर

पाते फूलक संग फूल-पात आ प्रसादक संग पान-परसादक रूपमे हँसैत रहैए।"

गामक मोड़ लग पहुँचते बुधन भायकेँ कहने रहिऐन– "भाय साहैब, अहाँ भने बामा भागक मेगर धेने अबै छी, मौड़ैमे हमरो कोनो बाधा नइ हएत, सोझे बढ़ैत रहब।"

जैठामसँ दुनू गोरे दू दिस फुटब तैठाम साइकिल ठाढ़ करैत बुधन भाय कहलैन–

"बाउ दिनेश, एते-कालक गप ते पानक जड़िये-छीपमे चलि गेल, मुदा अबै छी जेतएसँ से तँ छुटिये गेल।"

'छुटब' सुनि हमहूँ साइकिल ठाढ़ करैत कहलयैन–

"भाय साहैब, आब ते घर लग आबि गेलौं, साइकिल गुड़कबैत पएरो जा सकै छी, मुदा जे पुछने छेलौं आ ओ जँ बाँकी रहि जाएत, तखन दुनू गोरेक मन घबाह भेल रहत। अहूँकेँ मनमे रहत जे अपन विचार मनेमे रहि गेल, आ हमरो मनमे रहत जे फल्लाँ बात नइ बुझलौं। तँए ओ बात कहिये दिअ।"

जहिना घाओक जखन खिलक अन्तिम अंश निकलए लगै छै तखन दुख अपने सुख बनए लगै छै तहिना बुधन भाइक मनमे भेलैन। बजला–

"बाउ दिनेश, जे काज करि कऽ घुमल अबै छी, ओ दिनो-देखार भऽ सकै छल, घरसँ बहराक काज दिने-देखार करब उचितो छी आ नीको अछि।"

बुधन भाइक बात सुनि चौकन्ना भऽ गेल रही। चौकैक कारण रहए अपने बुझैत गल्ती करब। मुदा से सोझे केना पुछितिऐन, तँए एतबे कहलयैन–

"से की भाय?"

हमर बढ़ैत जिज्ञासा देखि बुधन भाय कहने छला–

“बौआ, बीच रस्तापर दुनू गोरे ठाढ़ भऽ गप करब नीक नइ, अन्हार ऐछे कियो साइकिलबला धड़फड़ाएल आबि ठोकर लगा देत, जइसँ अपनो जान गमाएत आ अपनो सबहक जान लेत।”

बुधन भाइक विचार सोहंतगर लगल, कहने रहिऐन–

“बेस कहलौं भाय, अपना रस्ता दिस घुमा अहाँ अपन साइकिल ठाढ़ कऽ दियौ आ हमहूँ अपना दिस कतबाहि लगा अपनो साइकिल ठाढ़ कऽ दइ छिऐ।”

दुनू गोरे अपना-अपना रस्ता दिस साइकिल ठाढ़ कऽ एकठाम आबि पहिने बैसलौं आ बैसते कहने रहिऐन–

“भाय साहैब, जखन पानक खेतियो अपने करै छी आ बजार जा बेचबो अपने करै छी, हमरा बुझने काजक नमती बेसी अछि।”

हमरा बातकेँ लोकैत बुधन भाय बजला–

“बाउ, से ते अपनो बुझै छी, मुदा समय संग चलैले लोकोक किरदानी कम नइ ने बाधक अछि।”

अपना मनमे उठल ऐमे लोकक की किरदानी! कियो अपन काज करैए, तइमे आनक की नोकसान होइ छै जे बीचमे बाधक बनत..?

पुछलयैन–

“से की भाय?”

अपन मनक बात निकालि बुधन भाय बाजल छला–

“बौआ, आन वौस जकाँ अमेरिका-इंग्लैण्डक दलाल थोड़े पानक वेपारी छी। ओना पानक वेपारो होइते अछि। माने ई जे पान उपजेनिहारसँ वेपारी अपन बजारेक दोकानदार सबहक बीच बेच अपन समय आ पूजीसँ लाभ लऽ जँ वेपार करैए तँ ओ काज संचालनक एक

प्रक्रिया भेल, मुदा से नइ ने करैए, झूठ-फूस बाजि गाम-घरक लोककेँ ठकि लइए, तैसंग उधारी कारोबार करैत सालक-साल पूजीकेँ डुमा सेहो दइए।"

बुधन भाइक विचारकेँ मानैत बाजल रही–

"हँ, ई तँ सम्भव अछि।"

'सम्भव' सुनि बुधन भाय बाजल छला–

"बाउ, अपन जिनगीकेँ ठूठ गाछ जकाँ पाङि नेने छी। जेतबे सम्हैरए तेतबेटा काजक जिनगी बना नेने छी।"

इम्हर रमेशक मन तरे-तरे तेते कड़ुआ गेलैन जे कातमे जा पानकेँ थुकैर दिनेश लग आबि ई सोचि बैसला जे पनखौक जेहने अपने छी, तेहने दिनेशो छैथ, दुनू गोरे लखनौआ नबाबी खिल्ली खेनिहार छीहे। खेनिहारे नइ छी, अपन सभ जोगारो रखिते छी। मुदा समूहक बीच जखन पानक डाली राखल अछि, तैठाम जँ अपन पान निकालि खाएब तँ चारूकातक लोक छक्का मारबे करता किने। छक्काक अनुकूल परिस्थितियो छइहे। माने जखन बेवस्थापक दिससँ बेवस्था ऐछे तखन अहाँ पानक बड़ सियारखी छी आकि बेवस्थापकेँ बेइज्जत करए चाहै छिऐन। एक तँ अहुना अपनो अनुकूलकेँ के कहए जे प्रतिकूलो स्थितिमे सदिकाल छक्केक प्रयोग करै छी तैठाम अपनो ने छक्कामे पड़ब। मुदा दिनेश लग रहलासँ से नइ हएत। दू गोरे रहब हमहीं अगुआ कऽ बाजब–

"पानक सत्कार केने छी आकि मजाक केने छी, जँ पान लगबैक लूरि नइ अछि, तँ डालीमे ओहिना पानक पात, चुनौटी, खाएर, सुपारी आ जर्दा रखि दैतिऐ, जिनका जे सोहंतगर लगितैन, तइ हिसाबे से अपन-अपन लगा-लगा खइतैथ।"

जेहने घोर मन रमेशक तेहने दिनेशोक। मुदा दुनू गोरेकेँ एकठाम भेने पनखौक समाजक रूप तँ बनिये गेल। जखने समाज बनत तखने ने

समाजीकरण बनैमे किछु-ने-किछु समस्या औत।

ओना, कोनो बेकतीगत ओहन जिनिस सेहो अछि जे सोलहन्नी अपना हाथे उपजा ओकर उपभोगे अपने करै छी, तैठाम सामाजिक समस्या नहियोँ आबि सकैए, मुदा जैठाम एकक उत्पादन माने एक गोरेक उपजौल, दोसरक उपभोगक वस्तु बनत, तैठाम तँ समाजक बीच एक-सूत्रता लेल समस्याक समाधानक उपए तँ करए पड़ै छइ। अपन जइ जगहपर- माने साहित्यिक कार्यक्रममे क्रियान्वित हुअए आएल छी तैठाम जँ मने मलिन भऽ जाए सेहो तँ नीक नहियेँ छी। नीको केना रहत, भाय सब कियो दुनियाँक रंगमञ्च पर अभिनय करए आएल छी, तैठाम जँ किछु अभिनव नइ कऽ सकलौं, तखन अपन समयकेँ के कहए जे अनको समय खेलिऐन किने! मुदा उपए...?

दिनेशक मनमे उठलैन- अपने मनसँ जानी, दोसरोक मनक हाल। मुदा तइले तँ पौआही, कनमासँ नइ हेतै, ओइले तँ मनगर मन चाही किने। आ सएह जखन भङैठ गेल, तखन मरियाएल आकि सरियाएल मने थोड़े हएत। ओइले चिकनाएल मन चाही।

आँखिक इशारासँ दिनेश रमेशकेँ कहलकैन–

“पेशावक बहाने दू गोरेकेँ उठब वर्जित बुझल जाइ छै, तँए कोनो एहेन भवगर नजैर बना लिअ, जइसँ वक्ता बुझता जे हमर वक्तव्यक विचार करए दुनू गोरे उठला। लूटमे चरखा नफ्फा जहिना होइ छै तहिना अपनो सभ अपना मनक मान मानि पान खा लेब।”

ओना रमेशक मन बेसी कड़ुआ गेल रहैन, तेकर कारण रहैन जे वेचारे आन व्यसनक कोन बात जे पानक संगी चाहोकेँ लाभरे-जीभर चाहै छैथ, तैठाम पतिव्रता जकाँ लऽ दऽ कऽ पानेटा मे अपन सर्वश्व निछावर केने छैथ, तँए कड़ुआएल क्रोध तँ मनमे रहबे करैन।

..दुनू गोरे सझिया-साझ करैत, पानक झोरीसँ डगडगाएल हरियर

पात निकालि एक टुकड़ीकेँ दू टुकड़ी बना दुनू गोरे, सौंसे पीठ पहिने चुनौठलैन, खाएरक रंग चढ़बैत मुँहमे लेलैन, पछाइत पान सए नम्बर पत्ती अहगरसँ मुँहमे लइते रमेशक मन फुला गेलैन। बजला–

"भने अखन दुइए गोरे छी, कहू जे एम.ए. पास संस्कृतसँ केने छी, कए गोरे हमरा जकाँ विद्यालयक रठान कऽ पढ़ने छैथ, हमरा सेने तँ समाजक बेवहार व्यास बाबा जकाँ ने होएत, से छक्का मारैक लूरि भेल आ छक्का मारैत-मारैत अपने छका गेलौं। जैठाम कियो कोनो मञ्चपर ठाढ़ होइसँ पहिनहि, सुनैले हँसैत मन बना लइ छैथ, तैठाम की करब?"

दिनेश बजला–

"अनेरे, सभकेँ शंका हेतैन... ।"

दुनू गोरे कार्यक्रममे फेरसँ सहभागी भेला।"



शब्द संख्या : 3115, तिथि : 26 जनवरी 2016

आजुक जिनगीक आइ परीक्षा

जिनगीक संग परीक्षा कोनो आइये नइ सभ दिनसँ होइत आबि रहल अछि, आगूओ होइत रहत। मुदा से नइ, पचपन बर्खक श्याम सुनर बाबू, जिनका किछु गोरे श्याम बाबू सेहो कहै छैन, जे सत्ताक उच्चासीन छैथ, हुनके हाथे परसू साहित्यकारक सम्मान प्रसारित हएत...।

दोसैर साँझ शुरू होइते श्याम सुनर बाबू अपन बैठकीमे घुमि-फिर कऽ आबि चाह पीबिते रहैथ कि धक्-दे मोन पड़लैन। मोन पड़िते आलमारीसँ फाइल निकालि टेबुलपर अनलैन। कपक बँचल चाह पीब पान खेलैन। फाइलपर हाथ दइते मन धकधकए लगलैन। मोबाइलिक घण्टी जेना मनमे टनटनए लगलैन। सैकड़ो साहित्यकारक सैकड़ो पैरवी मनमे नाचए लगलैन। सभकेँ तँ यएह ने कहने छिऐन जे समय एलापर देखल जाएत। मुदा कि देखल जाएत? मोबाइलोक पैरवीकार कि कोनो एके रंगक छैथ। रंग-रंगक तँ ओहो छथिए। किछु गुरुजन छैथ तँ किछु संगी-साथी, किछु हितो-अपेक्षित तँ छैथिये। तैठाम की देखब..?

लगले श्याम बाबूक मनमे दोसैर साँझक शाम समाए लगलैन। समाइते मन फुरफुरेलैन। फुरफुरेलैन ई जे अड़तीस सालक राजनीतिक जिनगीमे जे कौलेज छोड़ि राजनीतिमे आएल रही, अही संकल्प संग ने जे समाजक उत्थानमे सहयोगी बनब, जइसँ देशक उत्थान हएत, देश उठि कऽ आगू बढ़त। जइसँ समाजो उठि-उठि आगू बढ़त। अहीले ने

जयप्रकाश बाबूक आन्दोलनमे जहल गेल रही। ओहो ने सम्पूर्णताक माने सम्पूर्ण क्रान्तिक डाक भरने रहैथ। तइ दिन तँ एतबे ने मनमे रहए जे समाजक अंग बनि समाज-सेवा करब। वएह ने राजनीति भेल। जखन कि अनुकूल समय भेटल, आइ राज्यक श्रेष्ठ सम्मान पुरस्कार दइक भार ऊपरमे अछि...।

श्याम बाबूक मन ठमकलैन। ठमकलाक किछु कालक पछाइत श्याम बाबूक मन अपन जिनगीक राजनीतिक खेल खेलाए लगलैन। अखन धरि जहिना अनका संग अपने छह-पाँच केलौं, तहिना ने अपनो संग आनो कम नहियेँ केलक। जे आनो बुझैए आ अपनो मन कहिते अछि...।

मुदा किछु भेल, एकरो तँ नकारल नहियेँ जा सकैए जे चाहे कोसी-गंगाक स्वच्छ पानिक घाट हौउ, आकि कमला-बलानक धोर-मट्ठा भेल पानिक घाट, चाहे लिढ़ाएल-समाढ़ाएल कोनो पोखरियेक घाट हौउ, आकि सड़ल-गनहाएल डबराक घाट, आकि मैल-कुचैल चिक्कन करैबला धोबिये-घाट हौउ.., अड़तीस बर्खक राजनीतिक बढ़ैत जिनगीक संग रंग-रंगक टपानो टपैट ऐठाम आबि उच्चासीन भेले छी..! 'उच्चासीन' मनमे ऐबते श्याम बाबूक मन चौंकलैन। ऊहि जेना जगलैन। भवितव्य गाछक फल बँटैक बेर छी! भविसक संग जिनगी सटैक धार छी। जइ धारक घाट टपैक प्रश्न अछि...।

श्याम बाबूक हृदय धकधकेलैन, धकधकाइते बोल निकललैन–

"पवित्र पावन मनसँ विचार करक अछि।"

टेबुलपर राखल फाइल खोललैन। सैयो साहित्यकारक सूची अछि! अखन एते कम समयमे केना नीक-बेजाएकेँ बेड़ा सकब..?

ठमकल मन श्याम बाबूकेँ, ने आगूक कोनो बाट सुझैन आ ने पाछूए हटने बनैबला। सरकारी काज छी। आगू-पाछूक बीच सीमापर

श्याम बाबूक मन ओहिना ओझरा गेलैन, जहिना धरती-अकासक बीच क्षितिजपर कोनो हवाइ-जहाज फँसि जाइए। साहित्य अकादेमीसँ फोन एलैन–

"परसू दस बजे समारोह छी, मात्र काल्हि भरिक समय अछि, अहीमे कार्यालयक सभ काज सम्हारि पुरस्कार पौनिहारक हाथमे आमंत्रणक चिट्ठी थमा देब अछि, तँए..?"

आगूमे राखल फाइलिक कागजात, चारूकात पसारि कऽ मने-मन विचार करैक विचार उठिते ई+मन विचार उठौलक–

"अखन तक साहित्य क्षेत्रमे जे अछि, ओ तँ कौलेजेसँ देखैत आबि रहल छी, मुदा..?"

'मुदा' लग ऐबते श्याम बाबूक मन ओहन अन्हारमे ओतऽ अन्हारा गेलैन, जेतए लोक बुझैए जे आब खसब छोड़ि कोनो सहारा नइ अछि...। लगले मनमे उठलैन–

"धरती-अकासक बीच क्षितिजपर तँ अखन अपने छी, तखन..?"

श्याम बाबूक मन तेना अन्हारा गेलैन जे ने आगू किछु देखैथ आ ने पाछू...।

ओही अन्हारमे अन्हराएल मन टोकलकैन–

"इतिहासो तँ आगूमे बैसले अछि। अखन तँ जीबै छी, मुइला पछाइतो केतेको लोक ओहन भेला, जिनकर एगारह-एगारह बेर साड़ासँ निकालि पोस्ट-मार्टम भेल। आ केते कि भेल से इतिहास बुझनिहार जानैथ...।"

मनक टोनसँ श्याम बाबूक मनमे टंकार जगलैन। केकरो रोटीपर नोन नइ, केकरो बोड़ा-बोड़ा! स्पष्ट धारा बनि रहल अछि जे किछु परिवार, जाइत नहि, सत्ताक परिवार बनि गेल अछि आ बहुसंख्य कात लागल अछि! ओकरा के देखत? मुदा अखन तँ सत्ताक ओइ घाटपर तँ

अपने ने आसीन छिऐ...। 'सत्ताक घाटपर अपने' मनमे ऐबते श्याम बाबूक विचार आगू घुसैक गेलैन। घुसैकते असथिर चित्त करैक विचार दोसर मन देलकैन। विचार जगिते जेना सभ किछु बिसैर गेला तहिना श्याम बाबूक मन फरिछा गेलैन। फरीच होइते चाह पीबैक इच्छा भेलैन। अपन की चाह अछि, एकरे तँ परीक्षा छी आ यएह छी आजुक जिनगीक औझुका परीक्षा। जाबे तक कियो कोनो विचारकेँ संकल्प सदृश्य नहि पकड़त ताबे तक जिनगी ढुलमुल बनल रहत। मुदा सत्तो तँ सत्ता छी, शासन छी, जे बिना अनुशासित भेने नइ चलै छै...। बिच्चेमे पत्नी चाह नेने आबि श्याम बाबूकेँ टोकलकैन–

"मन बड़ खसल देखै छी?"

एक घोंट चाह पीब श्याम बाबू बजला– "मन की खसल रहत, बेठेकान भऽ गेल अछि।"

पत्नी– "केहेन फाइल अछि जे मने बेठेकान भऽ गेल अछि?"

श्याम बाबू– "बुड़िबकहाक फाइल रहैत तखन तँ गहुमक भूसी जकाँ बोड़ामे कसि कऽ रंगसँ ऊपरमे टीप दैतिऐ, मुदा से नइ ने छी कविलाहाक फाइल छी, जँ एकोरत्ती एनए-ओनए हेतै तँ सभ कबलैती घोंसाइर देत।"

'कविलाहा' सुनिते सुचिताक मनमे सुचिन्त्यनाथ नाचि उठलैन। उठिते पतिकेँ मोन पाड़ए चाहली, मुदा तइ बिच्चेमे मोबाइलिक घण्टी टनटनेलैन– "सर, परसुए समारोह छिऐ, अपने कहने रही जे समय एलापर मन

पाड़ि देब...।"

'समय एलापर मोन पाड़ि देब' सुनिते श्याम बाबू थकथका गेला।

'बाप रे! की जवाब देबइ..!'

मुदा तैयो श्याम बाबू अपना मनकेँ बाटीक पानि जकाँ रसे-रसे थीर

केलैन। थीर होइते बजला– “नाम बजिते ने छी आ छुछे ओहिना मोन पाड़ै छी, अखन ओते समय अछि जे खिस्सा-पिहानी सुनब। अहू सभकेँ ई आदत लगि गेल अछि जे छोटो-छीन बात-ले घन्टा भरि भूमिके बन्है छी!”

मोबाइलमे फेर घण्टी बाजल। श्याम बाबू पहिल लाइनकेँ काटि दोसर गोरेसँ गप-सप्प शुरू केलैन...।

एकटा संगी अपन समांगक सम्बन्धमे मुहाँ-मुहीं गप-सप्प केने रहैन। गप-सप्पक क्रममे श्याम बाबू कहि देने रहथिन–

“जे काज अपना हाथक अछि, ओ करैमे थोड़े हिचकिचाएब। समय एलापर बुझल जेतइ।”

समैयक ताकमे सभ अपन-अपन घाटपर बंशी पाथने। ओना मोबाइलमे नाओं आबि गेल रहैन, मुदा तैयो श्याम बाबू पुछलखिन–

“के बजै छी?”

“किशोर छी, भाय साहैब अपने संगे जे साहित्य सम्मानक सम्बन्धमे चर्च भेल छल, वएह..?”

श्याम बाबू सकपका गेला। की जवाब देब। मुदा तैयो मनकेँ दबैत-दबैत असथिर केलैन। असथिर होइते बजला– “अखन निर्णयपर नइ पहुँच पेलौं अछि, तँए जे किछ कहैक हुअए, झब-दे कहू।”

‘झब-दे कहू’ सुनि किशोरक मनमे भेल जे भरिसक हमरा काजकेँ गम्भीरतासँ नइ लिअ चाहै छैथ। मुदा काजो तँ हुनके हाथक छी, दोसर उपाइयो तँ नहियेँ अछि। बाजल–

“भाय साहैब, जिनका सम्बन्धमे अपने लग अर्जी पहुँचेलौं अछि, ओ जानल-मानल साहित्यकार छैथ। साहित्य सेवा छोड़ि जिनगीमे दोसर काज नइ केलैन। ओना दर्जनो रचना केने छैथ मुदा किछुमे उपसंहार लिखै दुआरे शेष छैन, तँ किछु अधखड़ुआ छैन। मुदा बीस बर्खसँ

युनिभर्सिटीक आलमारीमे पाँचटा पोथी छपैले तैयार राखल छैन।"

बिच्चेमे मोबाइलिक घण्टी फेर टनटनाएल। अकादेमीक फोन रहैन–

"राइतिक बारह बाजि रहल अछि।"

'बारह' सुनिते श्याम बाबूक मन तरैंग गेलैन। तरैंग ई गेलैन जे विचार करैमे अपने परेशान छी, तैपरसँ...। मुदा तमसेबो केकरापर करता। तैयो अनखनाएले मने अकादेमी-कार्यालयकेँ उत्तर देलखिन–

"भाय, पटनासँ छह घन्टाक दूरी राज्यक कोना-कोना भऽ गेल अछि, तखन सूचना पहुँचेबाक एते धड़फड़ी किए अछि।"

जवाब नीक जकाँ समाप्तो ने भेल छेलैन कि मोबाइलमे फेर घण्टी भेलैन। नम्बर देखिते श्याम बाबू चौंक उठला जे ई तँ गुरुदेवक फोन छी- विलास बाबूक। जिनकासँ कौलेजमे पढ़ने छी! कौलेजक शिक्षक..!

मोबाइल हाथमे नेने श्याम बाबू रिसिभ नइ कऽ रहल छैथ। जेना मनमे महाभारत शुरू भऽ गेलैन। एक दिस गुरुजन, सर-सम्बन्धीक संग कुटुम-परिवार अछि आ दोसर दिस मनकेँ अर्जुन रोग चारू दिससँ घेर नेने अछि! एहेन घड़ीमे की करब नीक हएत?

दुबिधामे पड़ल श्याम बाबूकेँ किछु फुरिये ने रहल छेलैन। बिच्चेमे फेर मोबाइलमे घण्टी टनटनेलैन। मनमे उठलैन जे नीक हएत पत्नीकेँ हाथमे मोबाइल दऽ दिऐन आ कहबा दिऐन जे अखन सूतल छैथ। अधो घन्टा ने सुतना भेलैन अछि, केना उठेबैन..!

मुदा लगले श्याम बाबूकेँ मन धिक्कारलकैन। धिक्कारलकैन ई जे संकल्पित जीवन बना जीब सबहक नैतिक जिम्मेवारी होइए। तैबीच अनेको रंगक बाधा उपस्थित होइते छइ। गुरुदेव की कहि रहला अछि से बिनु सुनने केना बुझब...। फोन रिसिभ करैत श्याम बाबू बजला–

"प्रणाम गुरुदेव! जे आदेश होइ...।"

विलास बाबू बजला– “अपने भातीज सेहो छैथ, भैयारियो भेलखुन। हुनका ऐ सालक साहित्य सम्मान दऽ दहुन।”

विलास बाबूक आदेश सुनि श्याम बाबू गुम भऽ गेला। गुम ई भऽ गेला जे अपन आत्माराम की चाहि रहल अछि आ चारू दिससँ की भऽ रहल अछि! श्याम बाबूक मन आ छाती तरेतर छहोँ-छित हुअ लगलैन...। छहोँ-छित भेल छातीकेँ समटैत बजला–

“श्रीमान, अखन पुरस्कार पत्रक पूर्व पीठिका नइ लिखलौं अछि। वएह लिखैले बैसल छी।”

‘बड़ बेस बड़ बेस’ कहैत विलास बाबू आगू बजला–

“बौआ भवेश जे छैथ ओ अपने मुँह खोलि बजला अछि जे जँ ऐ सालक साहित्य सम्मान भेटत तँ आगू हमहूँ रचना करब। तँए जे मनक मनसूबा छैन ओकरा भंग करब नीक हएत?”

विलास देव बाबूक विचार सुनि श्याम बाबूक मन विचलित भऽ गेलैन। ‘बुझल जेतइ’ कहि मोबाइल हाथमे दैत पत्नीकेँ कहलखिन–

“ऐठामसँ मोबाइल लऽ जाउ, स्विच-अफ कऽ-के नइ राखब तेकर भिन्न फझैत, आ ओन कऽ कऽ राखब तेकर भिन्न हएत। एक दिस समय निकैल रहल अछि, दोसर दिस काजक ओझरी बढ़ि रहल अछि।”

हाथमे मोबाइल लैत कुरसीपर सँ उठैत सुचिता बजली–

“सदिकाल सुचिन्त्य नाथक चर्च करैत रहै छी जे ओ कौलेजेक संगीए नइ, कौलेज छोड़ि देश सेवाक व्रत लैत संगे जहलो गेल रही।”

सुचिन्त्य नाथक नाओं सुनिते श्याम बाबू चौंक गेला। जेना अखन धरिक सभ बिसरल बात मोन पड़ए लगलैन। जहलमे दुनू गोरे एक-दोसरकेँ गवाही रखैत क्रान्तिकारी समूहक बीच सम्पूर्ण क्रान्तिक शपथ नेने रही, जे ‘अन्याय-अत्याचारक विरोधमे पूर्ण जिनगी ठाढ़ रहब...।’ आनकेँ मन होइ वा नइ होइ मुदा अपन मन तँ कहिते अछि। अड़तीस

सालक राजनीतिक जिनगीमे जहिना अन्हर-बिहारि मे जन्म भेल तहिना ने अहूबेर ओहिना भेल। यएह जिनगी ने भेल तूफानी जिनगी, मुदा कि अखनो तूफानमे ठाढ़ होइक साहस भऽ रहल अछि?

शासनक उच्च कोटिक सम्मान समारोह छी। ओना रचनाकारक रचने अपन सम्मानक गीत गबैए, मुदा शासनो-सूत्र तँ महत रखिते अछि। समाजसँ सरोकार रखैबला जे रचनाकार होइथ, आकि आनो-आनो जिनगीक कीर्ति रखैबला होइथ, समाजक तँ सभ सम्मानित भेबे केलाह। ओना रचनाकार समाज साहित्यक बीच जिनगीक पथ-प्रदर्शित करैबला छथिये, तँए समाजक संग-संग शासनोक सम्मानित भेबे केलाह। मुदा जैठाम निर्धारित सीमा अछि तैठाम तँ ओही अनुकूल ने क्रियान्वित हएत।

अनायास श्यामबाबूक मन सुचिन्त्य नाथक चौबगली घुमए लगलैन। कौलेज छोड़ि हम राजनीतिक मंचपर एलौं आ ओ राजनीतिक मंचपर एलो पछाइत छोड़ि कऽ फेर कौलेजेकेँ धेलक। नीक रिजल्टो भेलै आ रचनाकारक रूपमे सेहो जागल। कौलेजक नोकरीक बीच, परिवारक गाड़ी चलबैत साहित्य जगतमे सेहो जेते सम्भव भेलै तेते सेवा तँ केनहि अछि। जँ एहेन-एहेन संकल्पित चरित्रकेँ दरकिनार कएल जाइए तँ इतिहास एकरा कहियो स्वर्णाक्षरमे नइ लिखत..?

❑

शब्द संख्या : 1676, तिथि : 01 फरवरी 2016

❑❑❑

❑❑

❑

तिथि सहित दस वर्षक गद्य लेखन-क्रम:

416. पाइक मोल- शब्द संख्या: 2412, तिथि: 22 दिसम्बर 2013

417. चोरूक्का झगड़ा- शब्द संख्या: 538, तिथि: 24 दिसम्बर 2013

418. अपसोच- शब्द संख्या: 548, तिथि: 26 दिसम्बर 2013

419. पतझाड़- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 31 दिसम्बर 2013

419. झीसीक मजा- शब्द संख्या: 453, तिथि: 1 जनवरी 2014

420. मति-गति- शब्द संख्या: 1807, तिथि: 07 जनवरी 2014

421. रिजल्ट- शब्द संख्या: 2343, तिथि: 16 जनवरी 2014

422. अपन सन मुँह- शब्द संख्या: 5696, तिथि: 25 जनवरी 2014

423. सुमति- शब्द संख्या: 3072, तिथि: 30 जनवरी 2014

424. फेर पुछबैन- शब्द संख्या: 346, तिथि: 31 जनवरी 2014

425. माघक घूर- शब्द संख्या: 1683, तिथि: 06 फरवरी 2014

426. खर्च- शब्द संख्या: 330, तिथि: 07 फरवरी 2014

427. अखरा-दोखरा- शब्द संख्या: 342, तिथि: 10 फरवरी 2014

428. पेटगनाह- शब्द संख्या: 593, तिथि: 14 फरवरी 2014

429. बड़की माता- शब्द संख्या: 1224, तिथि: 18 फरवरी 2014

430. धरती-अकास- शब्द संख्या: 184 , तिथि: 19 फरवरी 2014

431. बकठाँइ- शब्द संख्या: 883, तिथि: 24 फरवरी 2014

432. चैन-बेचैन- शब्द संख्या: 936, तिथि: 09 मार्च 2014

433. हथियाएल खुरपी- शब्द संख्या: 645 , तिथि: 11 मार्च 2014

434. अलपुरिया बरी- शब्द संख्या: 287, तिथि: 12 मार्च 2014

435. नीक बोल- शब्द संख्या: 565, तिथि: 13 मार्च 2014

436. सुआद- शब्द संख्या: 624, तिथि: 14 मार्च 2014

437. गंगा नहेलौं- शब्द संख्या: 690, तिथि: 19 मार्च 2014

438. भोँटक गहमी- शब्द संख्या: 508, तिथि: 24 मार्च 2014

439. भँसैत नाह- शब्द संख्या: 597, तिथि: 26 मार्च 2014

440. पान पराग- शब्द संख्या: 1692, तिथि: 29 मार्च 2014

441. सिरमा- शब्द संख्या: 760, तिथि: 31 मार्च 2014

442. नौमीक हकार- शब्द संख्या: 1119, तिथि: 03 अप्रैल 2014

443. फोंक मकड़- शब्द संख्या: 1744, तिथि: 10 अप्रैल 2014

444. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 1252, तिथि: 14 अप्रैल 2014

445. अभिनव अनुभव- शब्द संख्या: 326, तिथि: 16 अप्रैल 2014

446. खोंटकर्मा- शब्द संख्या: 1184, तिथि: 19 अप्रैल 2014

447. किछु ने- शब्द संख्या: 503, तिथि: 22 अप्रैल 2014

448. झकास- शब्द संख्या: 1589, तिथि: 26 अप्रैल 2014

449. अप्पन-बीरान- शब्द संख्या: 2919, तिथि: 01 मई 2014

450. सजमनियाँ आम- शब्द संख्या: 611, तिथि: 04 मई 2014

451. अर्जुन रोग- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 7 मई 2014

452. गरदैन कट्टा बेटा- शब्द संख्या: 575, तिथि: 10 मई 2014

453. नैहराक धाड़- शब्द संख्या: 885, तिथि: 14 मई 2014

454. अवाक- शब्द संख्या: 1041, तिथि: 17 मई 2014

455. पोखैरक सैरात- शब्द संख्या: 923, तिथि: 20 मई 2014

456. दनियाँ डाबा- शब्द संख्या: 409, तिथि: 22 मई 2014

457. धरम काँट- शब्द संख्या: 395, तिथि: 23 मई 2014

458. पल भरि- शब्द संख्या: 1116, तिथि: 24 मई 2014

459. किरदानी- शब्द संख्या: 5309, तिथि: 14 जून 2014

460. सगहा- शब्द संख्या: 2860, तिथि: 22 जून 2014

461. अकाल- शब्द संख्या: 1238, तिथि: 24 जून 2014

462. उझट बात- शब्द संख्या: 1152, तिथि: 26 जून 2014

463. कर्जखौक- शब्द संख्या: 1175, तिथि: 2 जुलाई 2014

464. उनटन- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 6 जुलाई 2014

465. रेहना चाची- शब्द संख्या: 1307, तिथि: 9 जुलाई 2014

466. बुधनी दादी- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 11 जुलाई 2014

467. अउतरित प्रश्न- शब्द संख्या: 1229, तिथि: 14 जुलाई 2014

468. हारि- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 16 जुलाई 2014

469. सोनाक सुइत- शब्द संख्या: 1135, तिथि: 17 जुलाई 2014

470. मरुभूमि- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 20 जुलाई 2014

471. असगरे- शब्द संख्या: 1557, तिथि: 24 जुलाई 2014

472. पुरनी नानी- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 27 जुलाई 2014

473. कटा-कटी- शब्द संख्या: 1140, तिथि: 30 जुलाई 2014

474. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 1206, तिथि: 3 अगस्त 2014

475. गलती अपने भेल- शब्द संख्या:3386, तिथि: 06 अगस्त 2014

476. चोरक चोरबती- शब्द संख्या: 884, तिथि: 6 अगस्त 2014

477. घर तोड़ि देलिऐ- शब्द संख्या: 1527, तिथि: 10 अगस्त 2014

478. सजल स्मृति- शब्द संख्या: 2363, तिथि: 14 अगस्त 2014

479. सनेस- शब्द संख्या: 2654, तिथि: 16 अगस्त 2014

480. सए कच्छे- शब्द संख्या: 488, तिथि: 19 अगस्त 2014

481. एक मुठी घास- शब्द संख्या: 411, तिथि: 21 अगस्त 2014

482. करिछौंह मुँह- शब्द संख्या: 318, तिथि: 24 अगस्त 2014

483. पुरस्कार- शब्द संख्या: 2414, तिथि: 24 अगस्त 2014

484. गावीस मोइस- शब्द संख्या: 687, तिथि: 29 अगस्त 2014

485. मनकमना- शब्द संख्या: 6110, तिथि: 19 सितम्बर 2014

486. घरवास- शब्द संख्या: 4879, तिथि: 26 सितम्बर 2014

487. समधीन- शब्द संख्या: 6098, तिथि: 04 अक्टूबर 2014

488. चापाकलक पाइप- शब्द संख्या: 1616, तिथि: 7 अक्टूबर 2014

489. कलम हानि कS- शब्द संख्या: 2226, तिथि: 10 अक्टूबर 2014

490. लतियाएल जिनगी- शब्द संख्या: 1184, तिथि: 14 अक्टूबर 2014

491. गामक शकल-सूरत- शब्द संख्या: 2596, तिथि: 20 अक्टूबर 2014

492. जितिया पाबैन- शब्द संख्या: 3706, तिथि: 24 अक्टूबर 2014

493. सुखाएल सूरत- शब्द संख्या: 3690, तिथि: 30 अक्टूबर 2014

494. भैयारी हक- शब्द संख्या: 3131, तिथि: 4 नवम्बर 2014

495. ठकुआएल भुसवा- शब्द संख्या: 3335, तिथि: 13 नवम्बर 2014

496. खुदियाएल- शब्द संख्या: 2887, तिथि: 17 नवम्बर 2014

497. खटहा आम- शब्द संख्या: 3515, तिथि: 22 नवम्बर 2014

498. ढकरपेँच- शब्द संख्या: 3759, तिथि: 30 नवम्बर 2014

499. असहाज- शब्द संख्या: 2865, तिथि: 04 दिसम्बर 2014

500. समरथाइक भूत- शब्द संख्या: 3853, तिथि: 07 दिसम्बर 2014

501. विदाइ- शब्द संख्या: 5131, तिथि: 17 दिसम्बर 2014

502. खलओदार- शब्द संख्या: 735, तिथि: 19 दिसम्बर 2014

503. मनुखदेवा- शब्द संख्या: 1027, तिथि: 22 दिसम्बर 2014

504. उमेद- शब्द संख्या: 3643, तिथि: 31 दिसम्बर 2014

505. गलगर भैंस- शब्द संख्या: 3392, तिथि: 4 जनवरी 2015

506. जाड़ फाटि गेल- शब्द संख्या: 3328, तिथि: 9 जनवरी 2015

507. सुरता- शब्द संख्या: 3304, तिथि: 15 जनवरी 2015

508. असुध मन- शब्द संख्या: 2353, तिथि: 19 जनवरी 2015

509. धरमूदासक अखड़ाहा- शब्द संख्या: 1410, तिथि: 21 जनवरी 2015

510. ठोररंगू- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 23 जनवरी 2015

511. लगबे ने कएल- शब्द संख्या: 1449, तिथि: 25 जनवरी 2015

512. उकड़ू समय- शब्द संख्या: 1467, तिथि: 27 जनवरी 2015

513. चास-बास दुनू गेल- शब्द संख्या: 1615, तिथि: 29 जनवरी 2015

514. चौरचनक दही- शब्द संख्या: 2095, तिथि: 31 जनवरी 2015

515. अपन मन अपन धन- शब्द संख्या: 1532, तिथि: 3 फरवरी 2015

516. टुटली मरैया- शब्द संख्या: 1951, तिथि: 7 फरवरी 2015

517. हकार- तिथि: 11 फरवरी 2015, शब्द संख्या: 1911

518. दहेजुआ गाए- शब्द संख्या: 1908, तिथि: 15 फरवरी 2015

519. मेटाइत जिनगी- शब्द संख्या: 2129, तिथि: 20 फरवरी 2015

520. धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!- शब्द संख्या:1996, तिथि: 23 फरवरी 2015

521. लेहाज- शब्द संख्या: 1906, तिथि: 26 फरवरी 2015

522. विचार हेरा गेल- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 1 मार्च 2015

523. ओ दिन- शब्द संख्या: 1782, तिथि: 4 मार्च 2015

524. उरीन- शब्द संख्या: 3235, तिथि: 8 मार्च 2015

526. नहरकन्हा- शब्द संख्या: 1209, तिथि: 11 मार्च 2015

527. बटखौक- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 14 मार्च 2015

528. पसेनाक धरम- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 16 मार्च 2015

529. जेठुआ गरदा- शब्द संख्या: 1103, तिथि: 18 मार्च 2015

530. हँसीएमे उड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 20 मार्च 2015

531. बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक- शब्द संख्या: 1234, तिथि: 23 मार्च 2015

532. हमर बाइनिक विचार- शब्द संख्या: 1207, तिथि: 26 मार्च 2015

533. नोकरिहारा- शब्द संख्या: 1146, तिथि: 26 मार्च 2015

534. घसवाहि- शब्द संख्या: 1213, तिथि: 28 मार्च 2015

535. तेतर भाइक कविता- शब्द संख्या: 1319, तिथि: 1 अप्रैल 2015

536. छूआ- शब्द संख्या: 1223, तिथि: 6 अप्रैल 2015

537. दोसराइत- शब्द संख्या: 1270, तिथि: 9 अप्रैल 2015

538. लछनमान- शब्द संख्या: 1173, तिथि: 13 अप्रैल 2015

539. हमर कोन दोख- शब्द संख्या: 1527, तिथि: 17 अप्रैल 2015

540. मौसी- शब्द संख्या: 1393, तिथि: 21 अप्रैल 2015

541. नटकिया गति- शब्द संख्या: 1313 24 अप्रैल 2015

542. खाए चाहैए- शब्द संख्या: 1223, तिथि: 27 अप्रैल 2015

543. मधुमाछी- शब्द संख्या: 1892, तिथि: 07 मई 2015

544. दनगर घास- शब्द संख्या: 2775, तिथि: 13 मई 2015

545. सझिया खेती- शब्द संख्या: 3135, तिथि: 23 मई 2015

546. मुफतिया माल- शब्द संख्या: 3231, तिथि: 29 मई 2015

547. मथाहाथ- शब्द संख्या: 2923, तिथि: 02 जून 2015

548. पहपैट- शब्द संख्या: 1369, तिथि: 05 जून 2015

549. इजोरिया राति- शब्द संख्या: 1512, तिथि: 07 जून 2015

550. तीन जुगिया भाय- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 12 जून 2015

551. अँगनेमे हेरा गेलौं- शब्द संख्या: 605, तिथि: 14 जून 2015

552. डकरा हाल- शब्द संख्या: 2529, तिथि: 17 जून 2015

553. जेतए जे हौउ- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 21 जून 2015

554. गठूलाक गारि- शब्द संख्या: 1532, तिथि: 25 जून 2015

555. कनी हमरो सुनू- शब्द संख्या: 1983, तिथि: 29 जून 2015

556. गामक बान्ह- शब्द संख्या: 2437, तिथि: 03 जुलाई 2015

557. गुड़ा खुद्दीक रोटी- शब्द संख्या: 2443, तिथि: 08 जुलाई 2015

558. सीरक गाछ- शब्द संख्या: 3071, तिथि: 13 जुलाई 2015

559. हरदीक हरदा- शब्द संख्या: 2924, तिथि: 19 जुलाई 2015

560. जाम- शब्द संख्या: 3355, तिथि: 29 जुलाई 2015

561. गण्डा- शब्द संख्या: 2304, तिथि: 5 अगस्त 2015

562. हाथी आ मूस- शब्द संख्या: 3016, तिथि: 11 अगस्त 2015

563. मुसरी आ घोड़ा- शब्द संख्या: 3625, तिथि: 17 अगस्त 2015

564. फलहार- शब्द संख्या: 2350, तिथि: 25 अगस्त 2015

565. भोरक झगड़ा- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 31 अगस्त 2015

566. क्रियाशील- शब्द संख्या: 3395, तिथि: 13 सितम्बर 2015

567. आइ एम शॉरी- शब्द संख्या: 2927, तिथि: 23 सितम्बर 2015

568. ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल- शब्द संख्या: 1025, तिथि: 29 सितम्बर 2015

569. मीनी भ्रष्टाचार- शब्द संख्या: 825, तिथि: 5 अक्टूबर 2015

570. गजपट खेती- शब्द संख्या: 1171, तिथि: 8 अक्टूबर 2015

571. समुद्री विद्या- शब्द संख्या: 787, तिथि: 11 अक्टूबर 2015

572. राकशे रहि गेलौं- शब्द संख्या: 959, तिथि: 12 अक्टूबर 2015

573. निनिया देवीक आराधना- शब्द संख्या: 679, तिथि: 13 अक्टूबर 2015

574. बताहे बताह बनौलक- शब्द संख्या: 574, तिथि: 15 अक्टूबर 2015

575. धोखा- शब्द संख्या: 1172, तिथि: 17 अक्टूबर 2015

576. खसैत गाछ- शब्द संख्या: 2234, तिथि: 22 अक्टूबर 2015

577. ठूठ गाछ- एक: शब्द संख्या: 1790, तिथि: 25 अक्टुबर 2015

578. ठूठ गाछ- दू: शब्द संख्या: 1203, तिथि: 29 अक्टुबर 2015

579. वैष्णवी भगवती- शब्द संख्या: 2099, तिथि: 01 नवम्बर 2015

580. ठूठ गाछ- तीन: शब्द संख्या: 999, तिथि: 04 नवम्बर 2015

581. ठूठ गाछ- चारि: शब्द संख्या: 1494, तिथि: 07 नवम्बर 2015

582. ठूठ गाछ- पाँच: शब्द संख्या: 2363, तिथि: 12 नवम्बर 2015

583. ठूठ गाछ- छह: शब्द संख्या: 1539, तिथि: 17 नवम्बर 2015

584. ठूठ गाछ- सात: शब्द संख्या: 3232, तिथि: 23 नवम्बर 2015

585. ठूठ गाछ- आठ: शब्द संख्या: 2780, तिथि: 01 दिसम्बर 2015

586. ठूठ गाछ- नअ ‘क’: शब्द संख्या: 2091, तिथि: 06 दिसम्बर 2015

587. ठूठ गाछ- नअ ‘ख’: शब्द संख्या: 1083, तिथि: 08 दिसम्बर 2015

588. ठूठ गाछ- नअ ‘ग’: शब्द संख्या: 1296, तिथि: 10 दिसम्बर 2015

589. ठूठ गाछ, दस- शब्द संख्या: 3304, तिथि: 16 दिसम्बर 2015

590. प्रीगर शत्रु- शब्द संख्या: 1087, तिथि: 26 दिसम्बर 2015

591. एगच्छा आमक गाछ- शब्द संख्या: 1172, तिथि: 31 दिसम्बर 2015

592. माघ नहाइले जाएब- शब्द संख्या: 2616, तिथि: 4 जनवरी 2016

593. एक घोंट पानि- शब्द संख्या: 2516, तिथि: 10 जनवरी 2016

594. एते दिन अपना-ले आब अनका-ले- शब्द: 3371, तिथि: 16 जनवरी 2016

595. माइक वचन- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 21 जनवरी 2016

596. पान- शब्द संख्या: 3115, तिथि: 26 जनवरी 2016

597. आजुक जिनगीक आइ परीक्षा- शब्द: 1676, तिथि: 01 फरवरी 2016

598. शुभचिन्तक- शब्द संख्या: 3947, तिथि: 08 फरवरी 2016

599. करिछौन लाली- शब्द संख्या: 3000, तिथि: 13 फरवरी 2016

600. मोहरा- शब्द संख्या: 1223, तिथि: 15 फरवरी 2016

601. अपन पुरखाक डीह- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 17 फरवरी 2016

602. जेना हाथी रही- शब्द संख्या: 1245, तिथि: 20 फरवरी 2016

603. कठफल- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 22 फरवरी 2016

604. गामे उपैट गेल- शब्द संख्या: 1680, तिथि: 25 फरवरी 2016

605. झूठे- शब्द संख्या: 1969, तिथि: 29 फरवरी 2016

606. लाही- शब्द संख्या: 2335, तिथि: 3 मार्च 2016

607. परतीहा खढ़- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 6 मार्च 2016

608. उजगी- शब्द संख्या: 1079, तिथि: 9 मार्च 2016

609. हाथक जिनगी- शब्द संख्या: 983, तिथि: 14 मार्च 2016

610. गाछपर सँ खसला- शब्द संख्या: 2000, तिथि: 20 मार्च 2016

611. केतौ ने रहलौं- शब्द संख्या: 2103, तिथि: 25 मार्च 2016

612. अपने केलहा- शब्द संख्या: 2314, तिथि: 31 मार्च 2016

613. बत्तु- शब्द संख्या: 2244, तिथि: 10 अप्रैल 2016

614. कछमछी- शब्द संख्या: 2322, तिथि: 15 अप्रैल 2016

615. गैत-वीध- शब्द संख्या: 2424, तिथि: 21 अप्रैल 2016

616. दियरबा-भैंसुर- शब्द संख्या: 2089, तिथि: 29 अप्रैल 2016

617. एक दिन- शब्द संख्या: 2063, तिथि: 5 मई 2016

618. दुधियाएल बरखा- शब्द संख्या: 2059, तिथि: 11 मई 2016

619. गलफूलू- शब्द संख्या: 2117, तिथि: 14 मई 2016

620. बिटगरहा- शब्द संख्या: 1992, तिथि: 19 मई 2016

621. आब नइ आगि लगैए- शब्द संख्या: 1962, तिथि: 23 मई 2016

622. कटौज- शब्द संख्या: 1977, तिथि: 28 मई 2016

623. बाल बोध- शब्द संख्या: 2621, तिथि: 2 जून 2016

624. डभियाएल गाम- शब्द संख्या: 2483, तिथि: 6 जून 2016

625. एकबोलिया दादी- शब्द संख्या: 2189, तिथि: 11 जून 2016

626. मरियाएल मन- शब्द संख्या: 1921, तिथि: 17 जून 2016

627. त्राहि-कृष्ण- शब्द संख्या: 2900, तिथि: 23 जून 2016

628. कन्हा भँट्टा- शब्द संख्या: 2539, तिथि: 30 जून 2016

629. जिगेसा- शब्द संख्या: 3977, तिथि: 8 जुलाई 2016

630. गुलेती दास- शब्द संख्या: 5993, तिथि: 12 अगस्त 2016

631. भोलानाथ बाबा- शब्द संख्या: 2359, तिथि: 17 अगस्त 2016

632. दुरकाल- शब्द संख्या: 3189, तिथि: 22 अगस्त 2016

633. कलंक- शब्द संख्या: 2763, तिथि: 27 अगस्त 2016

634. अड़िकट्टा चोर- शब्द संख्या: 2077, तिथि: 31 अगस्त 2016

635. बगदल गाम- शब्द संख्या: 2405, तिथि: 6 सितम्बर 2016

636. बत्तीसोअना- शब्द संख्या: 890, तिथि: 8 सितम्बर 2016

637. कचहरिया रोग- शब्द संख्या: 1651, तिथि: 12 सितम्बर 2016

638. दिन घटि गेल- शब्द संख्या: 2425, तिथि: 5 अक्टूबर 2016

639. मुड़ियाएल घर- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 11 अक्टूबर 2016

640. गामक सुरता- शब्द संख्या: 2265, तिथि: 19 अक्टूबर 2016

641. खतियाएल घर- शब्द संख्या: 2057, तिथि: 09 नवम्बर 2016

642. बात-कथा सुनौलक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 15 नवम्बर 2016

643. अनका बेर ओंघी- शब्द संख्या: 2233, तिथि: 20 नवम्बर 2016

644. देव उठान- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 24 नवम्बर 2016

645. नमहर घरक चोरि- शब्द संख्या: 2397, तिथि: 28 नवम्बर 2016

646. भोरक सपना- शब्द संख्या: 1013, तिथि: 1 दिसम्बर 2016

647. बालमण्डली- शब्द संख्या: 1288, तिथि: 6 दिसम्बर 2016

648. धोखा केतए भेल- शब्द संख्या: 1053, तिथि: 09 दिसम्बर 2016

649. माघक चाह- शब्द संख्या: 1330, तिथि: 12 दिसम्बर 2016

650. भँसियाएल बाल-बोध- शब्द संख्या: 1306, तिथि: 15 दिसम्बर 2016

651. माघक घूर- शब्द संख्या: 1812, तिथि: 18 दिसम्बर 2016

652. पाही पट्टी- शब्द संख्या: 2370, तिथि: 25 दिसम्बर 2016

653. बीरांगना- शब्द संख्या: 1551, तिथि: 30 दिसम्बर 2016

654. स्मृति शेष- शब्द संख्या: 1941, तिथि: 6 जनवरी 2017

655. मनकेँ फुसलबै छी- शब्द संख्या: 1023, तिथि: 10 जनवरी 2017

656. चहकल विचार- शब्द संख्या: 4173, तिथि: 20 जनवरी 2017

657. विदाइ-दैछना- शब्द संख्या: 2312, तिथि: 25 जनवरी 2017

658. बीरांगना: 2- शब्द संख्या: 1992, 29 जनवरी 2017

659. पकिया चेला- शब्द संख्या: 1976, तिथि: 06 फरवरी 2017

660. कान फुटल कप- शब्द संख्या: 1595, तिथि: 09 फरवरी 2017

661. वर्थ डे- शब्द संख्या: 2535, तिथि: 16 फरवरी 2017

662. जानक मोल- शब्द संख्या: 2782, तिथि: 23 फरवरी 2017

663. गामक कटान- शब्द संख्या: 3115, तिथि: 01 मार्च 2017

664. कर्ज- शब्द संख्या: 3252, तिथि: 07 मार्च 2017

665. बेटीक लिलसा- शब्द संख्या: 2621, तिथि: 11 मार्च 2017

666. अपन गारि अपन दुआरि- शब्द संख्या: 2546, तिथि: 17 मार्च 2017

667. बेटीक पैरुख- शब्द संख्या: 2735, तिथि: 26 मार्च 2017

668. बेटीक कुभेला- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 31 मार्च 2017

669. अपन रोपल गाछी भुताहि- शब्द संख्या: 2619, तिथि: 7 अप्रैल 2017

670. बलधकेल कटौज- शब्द संख्या: 2100, तिथि: 11 अप्रैल 2017

671. जारैनक दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 2465, तिथि: 17 अप्रैल 2017

672. पढ़ल सुगा बौक- शब्द संख्या: 3775, तिथि: 26 अप्रैल 2017

673. हरवाहि- शब्द संख्या: 2784, तिथि: मजदूर दिवस (01 मई) 2017

674. क्रान्तियोग- शब्द संख्या: 3432, तिथि: 13 मई 2017

675. उचितवक्ता- शब्द संख्या: 3461, तिथि: 19 मई 2017

676. खेतक बँटवारा- शब्द संख्या: 3607, तिथि: 24 मई 2017

677. विघटन- शब्द संख्या: 3419, तिथि: 31 मई 2017

678. टुटल मनक जुटान- शब्द संख्या: 3456, तिथि: 06 जून 2017

679. बाबा बेलेश्वरनाथ- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 11 जून 2017

680. भुतलग्गू आकि भविसलग्गू- शब्द संख्या: 2465, तिथि: 23 जून 2017

681. मर्माहत- शब्द संख्या: 2509, तिथि: 29 जून 2017

682. गुणहीन- शब्द संख्या: 3138, तिथि: 6 जुलाई 2017

683. समझौता- शब्द संख्या: 2280, तिथि: 13 जुलाई 2017

684. जेकर चुन तेकर पुन- शब्द संख्या: 2696, तिथि: 19 जुलाई 2017

685. त्रिकालदर्शी- शब्द संख्या: 2841, तिथि: 25 जुलाई 2017

686. नमहर फेरा- शब्द संख्या: 2902, तिथि: 29 जुलाई 2017

687. आशापर पानि पड़ल- शब्द संख्या: 2391, तिथि: 02 अगस्त 2017

688. कोढ़िया सरधुआ- शब्द संख्या: 2279, तिथि: 06 अगस्त 2017

689. बेटपन- शब्द संख्या: 3054, तिथि: 11 अगस्त 2017

690. छातीक हार- शब्द संख्या: 2291, तिथि: 16 अगस्त 2017

691. उमेरक लेहाज- शब्द संख्या: 2986, तिथि: 22 अगस्त 2017

692. पैंतीस साल पछुआ गेलौं- शब्द संख्या: 2472, तिथि: 05 सितम्बर 2017

693. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- एक: श. सं.: 1630, तिथि: 14 सितम्बर 2017

694. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- दू: श. सं.: 2878, 18 सितम्बर 2017

695. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- तीन: श. सं.: 2318, 22 सितम्बर 2017

696. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- चारि: श. सं.: 2239, 26 सितम्बर 2017

697. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- पाँच: श. सं.: 1903, 29 सितम्बर 2017

698. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- छह: श. सं.: 2450, 03 अक्टुबर 2017

699. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- सात: श. सं.: 2040, 07 अक्टुबर 2017

700. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- आठ: श. सं.: 2403, 12 अक्टुबर 2017

701. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- नअ: श. सं.: 5046, 19 अक्टुबर 2017

702. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं- दस: श. सं.: 794, 19 अक्टुबर 2017

703. पुरान साड़ी- शब्द संख्या: शब्द संख्या: 2453, तिथि: 24 अक्टूबर 2017

704. गाम बिसैर गेल- शब्द संख्या: 2482, तिथि: 28 अक्टूबर 2017

705. ऐँठ साड़ी- शब्द संख्या: 2925, तिथि: 01 नवम्बर 2017

706. लहसन- एक: शब्द संख्या: 3169, तिथि: 10 नवम्बर 2017

707. किछु ने फुरैए- शब्द संख्या: 2095, तिथि: 12 नवम्बर 2017

708. लहसन- दू: शब्द संख्या: 2031, तिथि: 17 नवम्बर 2017

709. महिरम- शब्द संख्या: 1984, तिथि: 20 नवम्बर 2017

710. लहसन- तीन: शब्द संख्या: 2592, तिथि: 25 नवम्बर 2017

711. बेर परहक भदवा- शब्द संख्या: 2726, तिथि: 29 नवम्बर 2017

712. लहसन- चारि: शब्द संख्या: 2562, तिथि: 4 दिसम्बर 2017

713. सड़क-कातक खेत- शब्द संख्या: 2722, तिथि: 10 दिसम्बर 2017

714. दोहरी हाक- शब्द संख्या: 2700, तिथि: 21 दिसम्बर 2017

715. लहसन- पाँच: शब्द संख्या: 4691, तिथि: 30 दिसम्बर 2017

716. पाइक इज्जत- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 05 जनवरी 2018

717. सेहन्ता- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 11 जनवरी 2018

718. राक्षसक झड़- शब्द संख्या: 1649, तिथि: 15 जनवरी 2018

719. बेरपर- शब्द संख्या: 2585, तिथि: 19 जनवरी 2018

720. केकरा-ले केलौं- शब्द संख्या: 2649, तिथि: 23 जनवरी 2018

721. स्वाभिमानी जिनगी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 28 जनवरी 2018

722. बाबाक बाग-बगिया- शब्द संख्या: 3089, तिथि: 3 फरवरी 2018

723. अब-तब- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 7 फरवरी 2018

724. अगिलह- शब्द संख्या: 2472, तिथि: 11 फरवरी 2018

725. लहसन- छह: शब्द संख्या: 2240, तिथि: 15 फरवरी 2018

726. लहसन- सात: शब्द संख्या: 1026, तिथि: 18 फरवरी 2018

727. लहसन- आठ: शब्द संख्या: 2220, तिथि: 22 फरवरी 2018

728. लहसन- नअ: शब्द संख्या: 2015, तिथि: 25 फरवरी 2018

729. कुकुरपन- शब्द संख्या: 2229, तिथि: 28 फरवरी 2018

730. हेराएल जिनगी- शब्द संख्या: 3107, तिथि: 5 मार्च 2018

731. आशापर पानि फेर गेल- शब्द संख्या: 2447, तिथि: 9 मार्च 2018

732. देखल दिन- शब्द संख्या: 2592, तिथि: 27 मार्च 2018

733. इज्जत उतैर गेल- शब्द संख्या: 1905, तिथि: 30 मार्च 2018

734. संकट- शब्द संख्या: 2595, तिथि: 4 अप्रैल 2018

735. एकतीस मार्च- शब्द संख्या: 2814, तिथि: 10 अप्रैल 2018

736. गेल माघ उनतीस दिन बॉकी- शब्द संख्या: 2391, तिथि: 15 अप्रैल 2018

737. बापक चलैत- शब्द संख्या: 2606, तिथि: 20 अप्रैल 2018

738. बेटाक चलैत- शब्द संख्या: 2889, तिथि: 25 अप्रैल 2018

739. प्रवल इच्छा- शब्द संख्या: 2301, तिथि: 30 अप्रैल 2018

740. पंगु- एक: शब्द संख्या: 6478, तिथि: 11 मई 2018

741. पंगु- दू: शब्द संख्या: 2156, तिथि: 15 मई 2018

742. पंगु- तीन: शब्द संख्या: 2092, तिथि: 21 मई 2018

743. पंगु- चारि: शब्द संख्या: 2177, तिथि: 24 मई 2018

744. पंगु- पाँच: शब्द संख्या: 2492, तिथि: 27 मई 2018

745. पंगु- छह: शब्द संख्या: 1853, तिथि: 30 मई 2018

746. पंगु- सात: शब्द संख्या: 911, तिथि: 02 जून 2018

747. पंगु- आठ: शब्द संख्या: 1945, तिथि: 4 जून 2018

748. पंगु- नअ: शब्द संख्या: 935, तिथि: 6 जून 2018

749. ठका गेलौं- शब्द संख्या: 2052, तिथि: 18 जून 2018

750. हारि-जीत- शब्द संख्या: 3190, तिथि: 24 जून 2018

751. पनचैती पनपना गेल- शब्द संख्या: 1095, तिथि: 27 जून 2018

752. कुघाटक मृत्यु- शब्द संख्या: 1608, तिथि: 01 जुलाई 2018

753. एक तम्मा सिदहा- शब्द संख्या: 2014, तिथि: 5 जुलाई 2018

754. कियो ने पुछैए- शब्द संख्या: 1584, तिथि: 9 जुलाई 2018

755. केकरो कियो ने- शब्द संख्या: 718, तिथि: 11 जुलाई 2018

756. गपक पियाहुल लोक- शब्द संख्या: 1420, तिथि: 13 जुलाई 2018

757. उदय-प्रलय- शब्द संख्या: 1574, तिथि: 15 जुलाई 2018

758. हमरा नीक नहि लगैए- शब्द संख्या: 1458, तिथि: 19 जुलाई 2018

759. भारीपन भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1471, तिथि: 21 जुलाई 2018

760. मानसरोवरक यात्रा- शब्द संख्या: 2576, तिथि: 31 जुलाई 2018

761. करतब- शब्द संख्या: 2132, तिथि: 04 अगस्त 2018

762. आमक गाछी- एक: शब्द संख्या: 3068, तिथि: 10 अगस्त 2018

763. आमक गाछी- दू: शब्द संख्या: 3553, तिथि: 17 अगस्त 2018

764. आमक गाछी- तीन: शब्द संख्या: 2484, तिथि: 22 अगस्त 2018

765. आमक गाछी- चारि: शब्द संख्या: 2291, तिथि: 28 अगस्त 2018

766. आमक गाछी- पाँच: शब्द संख्या: 2185, तिथि: 02 सितम्बर 2018

767. आमक गाछी- छह: शब्द संख्या: 4701, चोरा चान 12 सितम्बर 2018

768. आमक गाछी- सात: शब्द संख्या: 1805, तिथि: 15 सितम्बर 2018

769. अनचोकक अन्हार- शब्द संख्या: 924, तिथि: 19 सितम्बर 2018

770. आमक गाछी, आठ- शब्द संख्या: 1917, तिथि: 25 सितम्बर 2018

771. अपन बुधियारी अपने खेलक- शब्द संख्या: 1897, ति.: 23 सितम्बर 2018

772. आमक गाछी, नअ- शब्द संख्या: 1914, तिथि: 30 सितम्बर 2018

773. चटवाह- शब्द संख्या- 2134, तिथि: 4 अक्टूबर 2018

774. भगैतिया- शब्द संख्या: 2177, तिथि: 8 अक्टूबर 2018

775. अधमरू साँपक फुफकार- शब्द संख्या: 2196, तिथि: 12 अक्टूबर 2018

776. यादास्त- शब्द संख्या: 1870, तिथि: 15 अक्टूबर 2018

777. हमर मेला चोरि भऽ गेल- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 19 अक्टूबर 2018

778. गरदैन हलैल गेल- शब्द संख्या: 1922, तिथि: 23 अक्टूबर 2018

779. दिवालीक दीप- शब्द संख्या: 2422, तिथि: 29 अक्टूबर 2018

780. हारि केना मानब- शब्द संख्या: 2054, तिथि: 02 नवम्बर 2018

781. अप्पन गाम- शब्द संख्या: 1940, तिथि: 06 नवम्बर 2018

782. परिछन- शब्द संख्या: 2661, तिथि: 11 नवम्बर 2018

783. झूठ सपना- शब्द संख्या: 2062, तिथि: 15 नवम्बर 2018

784. जिनगीक अन्तिम फल- शब्द संख्या: 2530, तिथि: 19 नवम्बर 2018

785. चरणबाबूक टैक्सी- शब्द संख्या: 2381, तिथि: 24 नवम्बर 2018

786. पुस्तकालय- शब्द संख्या: 2333, तिथि: 29 नवम्बर 2018

787. विचारभेद- शब्द संख्या: 2553, तिथि: 04 दिसम्बर 2018

788. एकरवा बानर- शब्द संख्या: 2793, तिथि: 09 दिसम्बर 2018

789. फकीरबा स्थान- शब्द संख्या: 2759, तिथि: 14 दिसम्बर 2018

790. रंगमे भंग- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 20 दिसम्बर 2018

791. खिलतोड़ भूमि- शब्द संख्या: 2590, तिथि: 17 जनवरी 2019

792. बैगनक बगान बनरा गेल, तूँ मुँह तकै छह- श. 2590, ति. 22 जनवरी 2019

793. मटरक अजोह दाना- शब्द संख्या: 3473, तिथि: 03 फरवरी 2019

794. फुइसिक रग्गड़- शब्द संख्या: 2225, तिथि: 07 फरवरी 2019

795. उखमज- शब्द संख्या: 3964, तिथि: 16 फरवरी 2019

796. एकभग्गू बेटा- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 19 फरवरी 2019

797. अगुताइ भेल- शब्द संख्या: 1054, तिथि: 22 फरवरी 2019

798. थैंक्यू पापा- शब्द संख्या: 965, तिथि: 24 फरवरी 2019

799. किसुनपुराक हाट- शब्द संख्या: 995, तिथि: 25 फरवरी 2019

800. धनखेतीक बैगन- शब्द संख्या: 1051, तिथि: 28 फरवरी 2019

801. चितवनक शिकार- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 02 मार्च 2019

802. बुढ़ भेलौं तँ दुइर गेलौं- शब्द संख्या: 1086, तिथि: 04 मार्च 2019

803. धुआ साड़ी- शब्द संख्या: 1132, तिथि: 06 मार्च 2019

804. राजरोग- शब्द संख्या: 1274, तिथि: 10 मार्च 2019

805. संकल्प- शब्द संख्या: 1520, तिथि: 12 मार्च 2019

806. एकटा नमहर दुख मेटा गेल- शब्द संख्या: 1349, तिथि: 15 मार्च 2019

807. काजक मोल- शब्द संख्या: 1090, तिथि: 16 मार्च 2019

808. एतए बसव कठिन अछि- शब्द संख्या: 1010, तिथि: 19 मार्च 2019

809. स्वनिर्मित जिनगी- शब्द संख्या: 1091, तिथि: 22 मार्च 2019

810. कपटलालक मृत्यु- शब्द संख्या: 987, तिथि: 25 मार्च 2019

811. गामक ढहल समाज- शब्द संख्या: 966, तिथि: 27 मार्च 2019

812. लजगर लोक- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 29 मार्च 2019

813. खरिहाँन उपैट गेल- शब्द संख्या: 1218, तिथि: 02 अप्रैल 2019

814. पगलपन- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 04 अप्रैल 2019

815. छलाननक सराध- शब्द संख्या: 996, तिथि: 06 अप्रैल 2019

816. छाती बज्जर केलौं- शब्द संख्या: 1402, तिथि: 08 अप्रैल 2019

817. नाँहकमे दोख- शब्द संख्या: 1463, तिथि: 16 अप्रैल 2019

818. सग्गा पिऔज- शब्द संख्या: 1530, तिथि: 20 अप्रैल 2019

819. गाछसँ नमहर फड़- शब्द संख्या: 1003, तिथि: 22 अप्रैल 2019

820. जिनगीमे जान आएल- शब्द संख्या: 1198, तिथि: 25 अप्रैल 2019

821. जे संग नइ औत ओकरा संग नइ जेबै- श.सं.: 1080, ति.: 26 अप्रैल 2019

822. चौरस खेतक चौरस उपज- शब्द संख्या: 998, तिथि: 29 अप्रैल 2019

823. सिकिया नेता- शब्द संख्या: 1023, तिथि: मजदूर दिवस, 2019

824. मुँह खुजिते नाक कटि गेल- शब्द संख्या: 1475, तिथि: 04 मई 2019

825. जेकरे भर तेकरे डर- शब्द संख्या: 1214, तिथि: 06 मई 2019

826. ललियाएल चेहरा करियाएल मन- शब्द संख्या: 1194, तिथि: 09 मई 2019

827. पुरुखक भर- शब्द संख्या: 1109, तिथि: 12 मई 2019

828. भकमोड़मे पड़ि गेलौं- शब्द संख्या: 1411, तिथि: 15 मई 2019

829. अपन इमान मरि गेल- शब्द संख्या: 1071, तिथि: 17 मई 2019

830. गामक रूप बदैल देब- शब्द संख्या: 1004, तिथि: 19 मई 2019

831. कुभेला- शब्द संख्या: 992, तिथि: 21 मई 2019

832. देखौंस- शब्द संख्या: 945, तिथि: 23 मई 2019

833. समयसँ पहिने चेत किसान- शब्द संख्या: 1326, तिथि: 25 मई 2019

834. काजक मेहपन- शब्द संख्या: 947, तिथि: 27 मई 2019

835. पनरह किलोक कदीमा- शब्द संख्या: 941, तिथि: 29 मई 2019

836. फेर नढ़रो बेल तर जेती- शब्द संख्या: 1553, तिथि: 01 जून 2019

837. काजक धुनि- शब्द संख्या: 1065, तिथि: 03 जून 2019

838. सोरहामे सुर्रा लगि गेल- शब्द संख्या: 1618, तिथि: 06 जून 2019

839. अगराही- शब्द संख्या: 944, तिथि: 08 जून 2019

840. जेकरे-ले चोरि केलौं सएह कहैए चोरा- श.सं.: 1556, तिथि: 11 जून 2019

841. भौक- शब्द संख्या: 1403, तिथि: 14 जून 2019

842. मनतरक पावर- शब्द संख्या: 1598, तिथि: 17 जून 2019

843. हाल-चाल- शब्द संख्या: 1519, तिथि: 20 जून 2019

844. अधमरु साँपक डँस- शब्द संख्या: 1525, तिथि: 23 जून 2019

845. के मानत?- शब्द संख्या: 1721, तिथि: 29 जून 2019

846. दियादीक फेड़- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 03 जुलाई 2019

847. वाह रे आदत- शब्द संख्या: 1455, तिथि: 06 जुलाई 2019

848. कटबी सुइद- शब्द संख्या: 1435, तिथि: 09 जुलाई 2019

849. तिलकौआ छत्ता- शब्द संख्या: 1948, तिथि: 13 जुलाई 2019

850. अपने जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1539, तिथि: 16 जुलाई 2019

851. कलेश- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 20 जुलाई 2019

852. गामक आशा टुटि गेल- शब्द संख्या: 2338, तिथि: 24 जुलाई 2019

853. आब इज्जत नइ बँचत- शब्द संख्या: 2046, तिथि: 28 जुलाई 2019

854. अँगनाक बीरार- शब्द संख्या: 1856, तिथि: 31 जुलाई 2019

855. भेँट-घाँट- शब्द संख्या: 1884, तिथि: 03 अगस्त 2019

856. कोसा- शब्द संख्या: 1999, तिथि: 07 अगस्त 2019

857. दहेजक गाए- शब्द संख्या: 2076, तिथि: 15 अगस्त 2019

858. चलती- शब्द संख्या: 1770, तिथि: 18 अगस्त 2019

859. तीन बुड़िवान- शब्द संख्या: 1901, तिथि: 21 अगस्त 2019

860. एकाधिकारी जाति- शब्द संख्या: 2198, तिथि: 24 अगस्त 2019

861. अपन करखन्ना- शब्द संख्या: 1704, तिथि: 28 अगस्त 2019

862. लड़कपन- शब्द संख्या: 2150, तिथि: 03 अक्टूबर 2019

863. कुदृष्टि- शब्द संख्या: 2435, तिथि: 08 अक्टूबर 2019

864. हकार- शब्द संख्या: 2012, तिथि: 16 अक्टूबर 2019

865. दलखिच्चड़मे घी- शब्द संख्या: 2286, तिथि: 25 अक्टूबर 2019

866. दोहरी दहार- शब्द संख्या: 2154, तिथि: 02 नवम्बर 2019

867. पसेनाक मोल- शब्द संख्या: 1748, तिथि: 06 नवम्बर 2019

868. बुढ़ापा- शब्द संख्या: 2122, तिथि: 10 नवम्बर 2019

869. पुरना घराड़ी- शब्द संख्या: 2092, तिथि: 14 नवम्बर 2019

870. जगरनथिया भोज- शब्द संख्या: 2416, तिथि: 18 नवम्बर 2019

871. कृषियोग- शब्द संख्या- शब्द संख्या: 2010, तिथि: 22 नवम्बर 2019

872. काजक रोप- शब्द संख्या: 2679, तिथि: 21 दिसम्बर 2019

873. खटसमाद- शब्द संख्या: 2909, तिथि: 27 दिसम्बर 2019

874. जीबठपन- शब्द संख्या: 2577, तिथि: 02 जनवरी 2020

875. गोटी लाल- शब्द संख्या: 2364, तिथि: 06 जनवरी 2020

876. अपनाकेँ चिन्हैत चलिहह- शब्द संख्या: 2361, तिथि: 11 जनवरी 2020

877. दहेज- शब्द संख्या: 2431, तिथि: 15 जनवरी 2020

878. जेहेन मति तेहेन गति- शब्द संख्या: 2630, तिथि: 21 जनवरी 2020

879. केते लग केते दूर- शब्द संख्या: 2660, तिथि: 31 जनवरी 2020

880. अपन कर्तव्य आकि उपकार- शब्द संख्या: 2410, तिथि: 05 फरवरी 2020

881. जिनगी भौर भेलह हेन- शब्द संख्या: 2789, तिथि: 10 फरवरी 2020

882. वसन्त पंचमी- शब्द संख्या: 2767, तिथि: 16 फरवरी 2020

883. चुटका सुतरल- शब्द संख्या: 2445, तिथि: 21 फरवरी 2020

884. हारल चेहरा जीतल रूप- शब्द संख्या: 2255, तिथि: 25 फरवरी 2020

885. अग्नि परीछा- शब्द संख्या: 3097, तिथि: 01 मार्च 2020

886. आसीरवचन- शब्द संख्या: 2564, तिथि: 06 मार्च 2020

887. दहिबरी- शब्द संख्या: 2560, तिथि: 12 मार्च 2020

888. सघन बन- शब्द संख्या: 2697, तिथि: 17 मार्च 2020

889. हुसैत लोक- शब्द संख्या: 2602, तिथि: 23 मार्च 2020

890. हुसि गेलौं- शब्द संख्या: 2574, तिथि: 28 मार्च 2020

891. झूठक झालि- शब्द संख्या: 2352, तिथि: 01 अप्रैल 2020

892. दुष्टपन- शब्द संख्या: 2317, तिथि: 06 अप्रैल 2020

893. रहै जोकर परिवार- शब्द संख्या: 2297, तिथि: 15 अप्रैल 2020

894. परिपक्व निरलज- शब्द संख्या: 2232, तिथि: 20 अप्रैल 2020

895. अप्पन काज अपने चिन्हू- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 24 अप्रैल 2020

896. लजाउ काज- शब्द संख्या: 2394, तिथि: 02 मई 2020

897. सुचिता- एक: शब्द संख्या: 4352, तिथि: 30 मई 2020

898. सुचिता- दू: शब्द संख्या: 4459, तिथि: 08 जून 2020

899. सुचिता- तीन: शब्द संख्या: 4672, तिथि: 15 जून 2020

900. सुचिता- चारि: शब्द संख्या: 4022, तिथि: 02 जुलाई 2020

901. सुचिता- पाँच: शब्द संख्या: 2757, तिथि: 08 जुलाई 2020

902. सुचिता- छह: शब्द संख्या: 3188, तिथि: 14 जुलाई 2020

903. सुचिता- सात: शब्द संख्या: 4483, तिथि: 24 जुलाई 2020

904. सीमावद्ध जीवन- शब्द संख्या: 2420, तिथि: 01 अगस्त 2020

905. कर्ताक रंग कर्मक संग- शब्द संख्या: 2757, तिथि: 06 अगस्त 2020

906. जिनगीक हिसाब- शब्द संख्या: 2711, तिथि: 11 अगस्त 2020

907. अपना जनैत- शब्द संख्या: 2881, तिथि: 16 अगस्त 2020

908. सुद्दढ़ जिनगी- शब्द संख्या: 3460, तिथि: 23 अगस्त 2020

908. मुराम जगह- शब्द संख्या: 3575, तिथि: 31 अगस्त 2020

909. गामक सूरत बदैल गेल: शब्द संख्या: 3340, तिथि: 07 सितम्बर 2020

910. दोसर रस्ता नहि- शब्द संख्या: 2808, तिथि: 13 सितम्बर 2020

911. विचारधाराक भथान- शब्द संख्या: 2659, तिथि: 19 सितम्बर 2020

912. परिवार बिलैट गेल- शब्द संख्या: 3132, तिथि: 26 सितम्बर 2020

913. अनचोकक इजोत- शब्द संख्या: 3339, तिथि: 03 अक्टूबर 2020

914. केलहा सभ पानिमे गेल- शब्द संख्या: 3199, तिथि: 09 अक्टूबर 2020

915. पएर तरक धरती डोलि गेल- शब्द संख्या: 2346, तिथि: 15 अक्टूबर 2020

916. जबुरिया कागज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 22 अक्टूबर 2020

917. बेटाक बिआह- शब्द संख्या: 3734, तिथि: 30 अक्टूबर 2020

918. जीवनमे जान आएल- शब्द संख्या: 3325, तिथि: 06 नवम्बर 2020

919. पोसलाक फल- शब्द संख्या: 3039, तिथि: 12 नवम्बर 2020

920. अन्तिम परीक्षा- शब्द संख्या: 2933, तिथि: 18 नवम्बर 2020

921. गाम आब ओ गाम रहल! - शब्द संख्या: 3038, तिथि: 24 नवम्बर 2020

922. जिनकर जीत तिनकर माला- शब्द सं.: 3025, तिथि: 30 नवम्बर 2020

923. नवका लोक: शब्द संख्या- 3215, तिथि: 06 दिसम्बर 2020

924. काजक उत्तर काज- शब्द संख्या: 3366, तिथि: 12 दिसम्बर 2020

925. घरक खर्च- शब्द संख्या: 3731, तिथि: 19 दिसम्बर 2020

926. समाजक भागे- शब्द संख्या: 3338, तिथि: 25 दिसम्बर 2020

927. बाबा हाथक कोदारि हल्लुक- शब्द संख्या: 4091, तिथि: 02 जनवरी 2021

928. परिवारक विघटन- शब्द संख्या: 2143, तिथि: 07 जनवरी 2021

929. हारल विचार- शब्द संख्या: 3657, तिथि: 14 जनवरी 2021

930. मोड़पर- एक: शब्द संख्या: 4422, तिथि: 25 जनवरी 2021

931. मोड़पर- दू: शब्द संख्या: 3734, तिथि: 01 फरवरी 2021

932. मोड़पर- तीन: शब्द संख्या: 3157, तिथि: 08 फरवरी 2021

933. मोड़पर- चारि: शब्द संख्या: 4844, तिथि: 19 फरवरी 2021

934. मोड़पर- पाँच: शब्द संख्या: 6382, तिथि: 06 मार्च 2021

935. मोड़पर- छह: शब्द संख्या: 2150, तिथि: 10 मार्च 2021

936. मोड़पर- सात: शब्द संख्या: 788, तिथि: 11 मार्च 2021

937. मोड़पर- आठ: शब्द संख्या: 927, तिथि: 12 मार्च 2021

938. मोड़पर- नअ: शब्द संख्या: 1127, तिथि: 14 मार्च 2021

939. मोड़पर- दस: शब्द संख्या: 585, तिथि: 15 मार्च 2021

940. मोड़पर- एगारह: शब्द संख्या: 265, तिथि: 16 मार्च 2021

941. संकल्प- एक: शब्द संख्या: 2988, तिथि: 25 मार्च 2021

942. संकल्प- दू: शब्द संख्या: 1903, तिथि: 29 मार्च 2021

943. संकल्प- तीन: शब्द संख्या: 3101, तिथि: 04 अप्रैल 2021

944. संकल्प- चारि: शब्द संख्या: 3197, तिथि: 10 अप्रैल 2021

945. संकल्प- पाँच: शब्द संख्या: 3202, तिथि: 17 अप्रैल 2021

946. संकल्प- छह: शब्द संख्या: 2026, तिथि: 21 अप्रैल 2021

947. संकल्प- सात: शब्द संख्या: 3139, तिथि: 29 अप्रैल 2021

948. संकल्प- आठ: शब्द संख्या: 2440, तिथि: 04 मई 2021

949. संकल्प- नअ: शब्द संख्या: 2368, तिथि: 08 मई 2021

950. संकल्प- दस: शब्द संख्या: 3977, तिथि: 15 मई 2021

951. अन्तिम क्षण- एक: शब्द संख्या: 2874, तिथि: 20 मई 2021

952. अन्तिम क्षण- दू: शब्द संख्या: 6126, तिथि: 04 जून 2021

953. अन्तिम क्षण- तीन: शब्द संख्या: 3669, तिथि: 12 जून 2021

954. अन्तिम क्षण- चारि: शब्द संख्या: 5817, तिथि: 24 जून 2021

955. अन्तिम क्षण- पाँच: शब्द संख्या: 4916, तिथि: 04 जुलाई 2021

956. परिवारे गजपटा गेल: शब्द संख्या: 1881, तिथि: 09 जुलाई 2021

957. समयक थपेड़मे- शब्द संख्या: 1798, तिथि: 14 जुलाई 2021

958. की सत्त की फुइस?- शब्द संख्या: 1793, तिथि: 17 जुलाई 2021

959. कुभाँज समयक भाँजमे- शब्द संख्या: 1671, तिथि: 21 जुलाई 2021

960. देखल गाम- शब्द संख्या: 1737, तिथि: 25 जुलाई 2021

961. अपना ले- शब्द संख्या: 1903, तिथि: 03 अगस्त 2021

962. तीन धक्का- शब्द संख्या: 1759, तिथि: 06 अगस्त 2021

963. अजीब खेल- शब्द संख्या: 2362, तिथि: 20 अगस्त 2021

964. नीक ठकान ठकेलौं- शब्द संख्या: 2798, तिथि: 25 अगस्त 2021

965. केकरो भरोस- शब्द संख्या: 2237, तिथि: 31 अगस्त 2021

966. बाड़ी भेल धनहर- शब्द संख्या: 1820, तिथि: 04 सितम्बर 2021

967. कुण्ठा- एक: शब्द संख्या: 2284, तिथि: 15 सितम्बर 2021

968. कुण्ठा- दू: शब्द संख्या: 2150, तिथि: 23 सितम्बर 2021

969. कुण्ठा- तीन: शब्द संख्या: 1324, तिथि: 29 सितम्बर 2021

970. कुण्ठा- चारि: शब्द संख्या: 4458, तिथि: 10 अक्टूबर 2021

971. कुण्ठा- पाँच: शब्द संख्या: 2673, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

972. कुण्ठा- छह: शब्द संख्या: 2852, तिथि: 24 अक्टूबर 2021

973. कुण्ठा- सात: शब्द संख्या: 1901, तिथि: 18 अक्टूबर 2021

974. कुण्ठा- आठ: शब्द संख्या: 1948, तिथि: 01 नवम्बर 2021

975. कुण्ठा- नअ: शब्द संख्या: 1901, तिथि: 05 नवम्बर 2021

976. कुण्ठा- दस: शब्द संख्या: 2022, तिथि: 09 नवम्बर 2021

977. सुदृढ़ जीवन- शब्द संख्या: 2587, तिथि: 14 नवम्बर 2021

978. सागवानक बागवानी- शब्द संख्या: 2369, तिथि: 05 दिसम्बर 2021

979. बिनु खुट्टाक गाए- शब्द संख्या: 2191, तिथि: 10 दिसम्बर 2021

980. जीवनक कर्म जीवनक मर्म- शब्द संख्या: 2893, तिथि: 16 दिसम्बर 2021

981. घरैया मूस- शब्द संख्या: 2791, तिथि: 22 दिसम्बर 2021

982. टुटि कS खसि पड़लैन- शब्द संख्या: 2182, तिथि: 29 दिसम्बर 2021

983. मृत्युसजियापर पड़ल विवेक बाबा- शब्द सं.: 2294, ति.: 03 जनवरी 2022

984. संचरण- शब्द संख्या: 2477, तिथि: 08 जनवरी 2022

985. जिनगीसँ प्रेम- शब्द संख्या: 2278, तिथि: 14 जनवरी 2022

986. परिवारे बगैद गेल- शब्द संख्या: 2299, तिथि: 21 फरवरी 2022

987. जिनगी पिछैड़ गेल- शब्द संख्या: 2859, तिथि: 02 मार्च 2022

988. श्रमहीन- शब्द संख्या: 3105, तिथि: 08 मार्च 2022

989. समुद्रलंघन- शब्द संख्या: 3274, तिथि: 21 मार्च 2022

990. परिवारक भार- शब्द संख्या: 2402, तिथि: 28 मार्च 2022

991. हीन-हीनाइत विवेक- शब्द संख्या: 2347, तिथि: 02 अप्रैल 2022

992. चेहराक निखार- शब्द संख्या: 2496, तिथि: 06 अप्रैल 2022

993. भरि मन काज- शब्द संख्या: 2281, तिथि: 12 अप्रैल 2022

994. विचारे मरि गेल- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 21 अप्रैल 2022

995. मृत्युक भय मेटा गेल- शब्द संख्या: 2536, तिथि: 26 अप्रैल 2022

996. घरक बात- शब्द संख्या: 2686, तिथि: 01 मई (मजदूर दिवस) 2022

997. अप्पन दलान- शब्द संख्या: 2480, तिथि: 06 मई 2022

998. कंजूसपन- शब्द संख्या: 2589, तिथि: 11 मई 2022

999. आएल आशा चलि गेल- शब्द संख्या: 1478, तिथि: 15 मई 2022

1000. अकारण- शब्द संख्या: 1918, तिथि: 18 मई 2022

1001. अछोप- शब्द संख्या: 1590, तिथि: 21 मई 2022

1002. अप्पन बेइमानी- शब्द संख्या: 1560, तिथि: 24 मई 2022

1003. उनटन- शब्द संख्या: 1581, तिथि: 24 मई 2022

1004. अर्द्धांगिनी- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 30 मई 2022

995. बहवाँइर- शब्द संख्या: 1538, तिथि: 04 जून 2022

1006. पाक मास्टर- शब्द संख्या: 1387, तिथि: 07 जून 2022

1007. साइंस टीचर- शब्द संख्या: 1301, तिथि: 10 जून 2022

1008. इज्जत लऽ लेलक- शब्द संख्या: 1367, तिथि: 13 जून 2022

1009. निसगर पान- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 15 जून 2022

1010. विरोध- शब्द संख्या: 1452, तिथि: 19 जून 2022

1011. जीवन दान- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 26 जून 2022

1012. बाग-बगिया- शब्द संख्या: 1272, तिथि: 30 जून 2022

1013. विश्वास पात्र- शब्द संख्या: 1374, तिथि: 02 जुलाई 2022

1014. विचारक टिटकारी- शब्द संख्या: 1335, तिथि: 05 जुलाई 2022

1015. लत- शब्द संख्या: 1375, तिथि: 08 जुलाई 2022

1016. जीवन खटाइमे पड़ि गेल- शब्द संख्या: 1220, तिथि: 11 जुलाई 2022

1017. कर्ज- शब्द संख्या: 1256, तिथि: 13 जुलाई 2022

1018. बहादुरी- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 16 जुलाई 2022

1019. हमरो खगता छै- शब्द संख्या: 1178, तिथि: 20 जुलाई 2022

1020. सपना- शब्द संख्या: 1241, तिथि: 23 जुलाई 2022

1021. संगे-संग एलौं संगिया मरि गेल हम भुतिआइ छी- श.: 1303, 26.7.2022

1022. उवाणि- शब्द संख्या: 1264, तिथि: 29 जुलाई 2022

1023. विचारक प्रबलता- शब्द संख्या: 1268, तिथि: 01 अगस्त 2022

1024. अपन रचित रचना- शब्द संख्या: 1481, तिथि: 07 अगस्त 2022

1025. थाहल संगी- शब्द संख्या: 1331, तिथि: 10 अगस्त 2022

1026. आत्मबल- शब्द संख्या: 1267, तिथि: 13 अगस्त 2022

1027. विश्वासहीन- शब्द संख्या: 1405, तिथि: 16 अगस्त 2022

1028. बुलन्दी- शब्द संख्या: 1329, तिथि: 19 अगस्त 2022

1029. अप्पन साती- शब्द संख्या: 1287, तिथि: 22 अगस्त 2022

1030. खिच्चड़ि- शब्द संख्या: 1624, तिथि: 26 अगस्त 2022

1031. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1364, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1032. भंगतराह कवि- शब्द संख्या: 1357, तिथि: 01 सितम्बर 2022

1033. कनियेँ-मनियेँ पूँजी- शब्द संख्या: 1315, तिथि: शिक्षक दिवस 2022

1034. पुरुखढौह- शब्द संख्या: 1263, तिथि: 08 सितम्बर 2022

1035. सिमानक झगड़ा- शब्द संख्या: 1232, तिथि: 13 सितम्बर 2022

1036. जिनगी भार बनि गेल- शब्द संख्या: 1312, तिथि: 16 सितम्बर 2022

1037. परिवारक योग- शब्द संख्या: 1295, तिथि: 19 सितम्बर 2022

1038. मनुक्ख खौक- शब्द संख्या: 1183, तिथि: 25 सितम्बर 2022

1039. साहित्यकारक विवेक- शब्द संख्या: 1141, तिथि: 28 सितम्बर 2022

1040. भाषाक बेथा- शब्द संख्या: 1231, तिथि: 01 अक्टूबर 2022

1041. बुझबे ने केलिऐ- शब्द संख्या: 1227, तिथि: 05 अक्टूबर 2022

1042. जीवनक सम्बन्ध- शब्द संख्या: 1187, तिथि: 08 अक्टूबर 2022

1043. गैंचाह लोक- शब्द संख्या: 1113, तिथि: 11 अक्टूबर 2022

1044. जिनगीकँ पटैक भगलौं- शब्द संख्या: 1258, तिथि: 14 अक्टूबर 2022

1045. अन्तिम आशा- शब्द संख्या: 1365, तिथि: 17 अक्टूबर 2022

1046. गजपट मारि- शब्द संख्या: 1327, तिथि: 20 अक्टूबर 2022

1047. कन्हजोड़- शब्द संख्या: 1346, तिथि: 23 अक्टूबर 2022

1048. अनहोनी- शब्द संख्या: 1308, तिथि: 26 अक्टूबर 2022

1049. होनी- शब्द संख्या: 1236, तिथि: 29 अक्टूबर 2022

1050. भवितव्य- शब्द संख्या: 1130, तिथि: 02 नवम्बर 2022

1051. ओसचट बीमारी: शब्द संख्या: 1260, तिथि: 05 नवम्बर 2022

1052. पुत्र परीक्षा: शब्द संख्या: 1286, तिथि: 09 नवम्बर 2022

1053. अप्पन मन बुझाएब- शब्द संख्या: 1294, तिथि: 12 नवम्बर 2022

1054. जड़ौर- शब्द संख्या: 1304, तिथि: 15 नवम्बर 2022

1055. अलोपित- शब्द संख्या: 1360, तिथि: 18 नवम्बर 2022

1046. कुमहरक बतिया- शब्द संख्या: 1240, तिथि: 21 नवम्बर 2022

1057. सिमानक आड़ि- शब्द संख्या: 1289, तिथि: 26 नवम्बर 2022

1058. नब बनक नब फल- शब्द संख्या: 1412, तिथि: 30 नवम्बर 2022

1059. सुमारक- शब्द संख्या: 1246, तिथि: 04 दिसम्बर 2022

1060. अन्तिम भेँट- शब्द संख्या: 1277, तिथि: 08 दिसम्बर 2022

1061. अनहरिया- शब्द संख्या: 1356, तिथि: 12 दिसम्बर 2022

1062. निरन्तर- शब्द संख्या: 3025, तिथि: 21 दिसम्बर 2022

1063. शॉर्टकट रास्ता- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 26 दिसम्बर 2022

1064. अपेछा टुटि गेल- शब्द संख्या: 1739, तिथि: 30 दिसम्बर 2022

1065. सुनयना बेटी: 01- शब्द संख्या: 1728, तिथि: 05 जनवरी 2023

1066. सुनयना बेटी: 02- शब्द संख्या: 3540, तिथि: 14 जनवरी 2023

1067. सुनयना बेटी: 03- शब्द संख्या: 3722, तिथि: 25 जनवरी 2023

1068. सुनयना बेटी: 04- शब्द संख्या: 1987, तिथि: 30 जनवरी 2023

1069. सुनयना बेटी: 05- शब्द संख्या: 3802, तिथि: 06 फरवरी 2023

1070. सुनयना बेटी: 06- शब्द संख्या: 1821, तिथि: 10 फरवरी 2023

1071. सुनयना बेटी: 07- शब्द संख्या: 925, तिथि: 12 फरवरी 2023

1072. सुनयना बेटी: 08- शब्द संख्या: 2999, तिथि: 18 फरवरी 2023

1073. सुनयना बेटी: 19- शब्द संख्या: 1926, तिथि: 22 फरवरी 2023

1074. सुनयना बेटी: 10- शब्द संख्या: 1953, तिथि: 26 फरवरी 2023

1075. आब नइ जीब- शब्द संख्या: 2097, तिथि: 2 मार्च 2023

1076. सेहन्ता सेहन्ते रहि गेल- शब्द संख्या: 2013, तिथि: 06 मार्च 2023

1077. धुरफन्ना लोक- शब्द संख्या: 1891, तिथि: 10 मार्च 2023

1078. घरदेखी- शब्द संख्या: 1846, तिथि: 14 मार्च 2023

1079. बासभूमि- शब्द संख्या: 2639, तिथि: 31 मार्च 2023

1080. इज्जत पर पड़ि गेल- शब्द संख्या: 2698, तिथि: 07 अप्रैल 2023

1081. अहीं जीतलौं- शब्द संख्या: 2884, तिथि: 13 अप्रैल 2023

1082. गामसँ गाए उपैट गेल- शब्द संख्या: 2454, तिथि: 20 अप्रैल 2023

1083. भारक बड़बड़िया- शब्द संख्या: 1727, तिथि: 24 अप्रैल 2023

1084. रूपैँ बदैल गेल- शब्द संख्या: 1736, तिथि: 28 अप्रैल 2023

1085. वंशक धर्म- शब्द संख्या: 1881, तिथि: 02 मई 2023

1086. उपराग- शब्द संख्या: 1358, तिथि: 05 मई 2023

1087. केकरा भगाउ आ केकरा बसाउ- शब्द संख्या: 1390, तिथि: 08 मई 2023

1088. खीरा लत्तीमे रोजगार- शब्द संख्या: 1377, तिथि: 11 मई 2023

1089. टकुआटान- शब्द संख्या: 2302, तिथि: 19 मई 2023

1090. पोस्टमार्टम- शब्द संख्या: 1852, तिथि: 23 मई 2023

1091. ऐ सालक नाह बुड़ि गेल- शब्द संख्या: 1761, तिथि: 27 मई 2023

1092. सामंजस्य- शब्द संख्या: 1868, तिथि: 01 जून 2023

1093. महींसवारक गाम- शब्द संख्या: 1337, तिथि: 04 जून 2023

1094. दसअना छहअना- शब्द संख्या: 1243, तिथि: 07 जून 2023

1095. वाह रे हम- शब्द संख्या: 1291, तिथि: 10 जून 2023

1096. एक जूम तमाकुल- शब्द संख्या: 1290, तिथि: 13 जून 2023

1097. चपरासी गाम- शब्द संख्या: 1201, तिथि: 17 जून 2023

1098. बनरफाँस- शब्द संख्या: 1279, तिथि: 19 जून 2023

1099. हँस्सा ठक- शब्द संख्या: 1889, तिथि: 26 जून 2023

1100. विश्वासू मन- शब्द संख्या: 1724, तिथि: 30 जून 2023

1101. चोरनी पिल्ली- शब्द संख्या: 1883, तिथि: 04 जुलाई 2023

1102. गामक जमीने पथरा गेल- शब्द संख्या: 1837, तिथि: 08 जुलाई 2023

1103. एकलव्यपन- शब्द संख्या: 2087, तिथि: 14 जुलाई 2023

1104. केलहा साफल- शब्द संख्या: 2102, तिथि: 19 जुलाई 2023

1105. त्रिशुलपर लटकल गाम- शब्द संख्या: 2007, तिथि: 23 जुलाई 2023

1106. त्रिशंकु गाम- शब्द संख्या: 2151, तिथि: 28 जुलाई 2023

1107. चारिम कनियाँ- शब्द संख्या: 1995, तिथि: 01 अगस्त 2023

1108. वंश नाश- शब्द संख्या: 1988, तिथि: 06 अगस्त 2023

1109. लोक लाज- शब्द संख्या: 1781, तिथि: 10 अगस्त 2023

1110. धानक कमठौन- शब्द संख्या: 1580, तिथि: 30 अगस्त 2023

1111. एक चुटकी खुशी- शब्द संख्या: 2053, तिथि: 02 सितम्बर 2023

1112. अनका सिर- शब्द संख्या: 1801, तिथि: शिक्षक दिसव 2023

1113. समयक फेड़- शब्द संख्या: 1531, तिथि: 08 सितम्बर 2023

1114. कोढ़ि- शब्द संख्या: 1511, तिथि: 11 सितम्बर 2023

1115. मुहाँ-ठुठ्ठी- शब्द संख्या: 1167, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1116. औनाकऽ मरए लगलौं- शब्द संख्या: 1060, तिथि: 13 सितम्बर 2023

1117. जेहेन आँखि तेहेन पाँखि- शब्द संख्या: 1077, तिथि: 17 सितम्बर 2023

1118. चौरचनक केरा- शब्द संख्या: 1185, तिथि: 19 सितम्बर 2023

1119. सुख-दुख- शब्द संख्या: 1708, तिथि: 04 अक्टूबर 2023

1120. दुख-सुख- शब्द संख्या: 1629, तिथि: 07 अक्टूबर 2023

1121. जीवन की आ जीवनक उद्देश्य की- श. सं.: 1571, ति.: 10 अक्टूबर 2023

1122. अंधविश्वास- शब्द संख्या: 1509, तिथि: 13 अक्टूबर 2023

1123. बखेरिया लोक- शब्द संख्या: 1528, तिथि: 16 अक्टूबर 2023

1124. नव जीवन- शब्द संख्या: 1620, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1125. प्रीति- शब्द संख्या: 1610, तिथि: 19 अक्टूबर 2023

1126. पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1667, तिथि: 25 अक्टूबर 2023

1127. मन टँगि गेल- शब्द संख्या: 1702, तिथि: 28 अक्टूबर 2023

1128. नियति आ पुरुषार्थ- शब्द संख्या: 1714, तिथि: 31 अक्टूबर 2023

1129. जे ननू से गर्भहि ननू- शब्द संख्या: 1639, तिथि: 03 नवम्बर 2023

1130. पुरुखक डीह- शब्द संख्या: 1666, तिथि: 06 नवम्बर 2023

1131. पाशापर- शब्द संख्या: 1707, तिथि: 09 नवम्बर 2023

1132. संचरण- शब्द संख्या: 1743, तिथि: 14 नवम्बर 2023

1133. कंजूस- शब्द संख्या: 1636, तिथि: 17 नवम्बर 2023

1134. बाबाक पौती- शब्द संख्या: 1640, तिथि: 20 नवम्बर 2023

1135. भँसिया गेलौं- शब्द संख्या: 1614, तिथि: 23 नवम्बर 2023

1136. उबारि देलौं- शब्द संख्या: 1645, तिथि: 28 नवम्बर 2023

1137. श्रद्धा- शब्द संख्या: 1619, तिथि: 01 दिसम्बर 2023

1138. केकरोपर आश्रित- शब्द संख्या: 1641, तिथि: 04 दिसम्बर 2023

1139. समैया लुच्चा- शब्द संख्या: 1735, तिथि: 07 दिसम्बर 2023

1140. उकड़ू समयमे सुकड़ू काज: शब्द संख्या: 1737, तिथि: 10 दिसम्बर 2023

1141. मुक्तिः जारी...

Notes